अंक - 104

मार्च/2024

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

'मातृभाषा परित्यज्य येऽन्य भाषामुपासते, तत्र यान्ति हि ते सर्वे यत्र सूर्यो न भासते।'

''पाती –आजीवन सदस्य/संरक्षक''

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई) डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात),राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ), कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपाध्याय (कुंवर सिंह वि० वि० आरा), अजय कुमार (पी०एन०बी०, आरा), रामयश अविकल (आरा), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' (भोजपुर), विजयशंकर पाण्डेय (नारायणी विहार, वाराणसी), डा० अमरनाथ शर्मा (बलिया), कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा (एसबीआई, बलिया), डा० दिवाकर पाण्डेय (पकड़ी, आरा), गुरूविन्दर सिंह (नई दिल्ली), डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), डा० नीरज सिंह (आरा), विक्रम कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारन), नागेन्द्र कुमार सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली), जलज कुमार मिश्र (बेतिया पं० चम्पारण), श्रीमती इन्दु अजय सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० संजय सिंह (करमनटोला, आरा), आनन्द सन्धिदूत (वासलीगंज, मिर्जापुर), नगेन्द्र सिंह एवं राकेश कुमार सिंह, (राजनगर, पालम, नई दिल्ली), डा० हरेश्वर राय (जवाहरनगर, सतना, म० प्र०), केशव मोहन पाण्डेय (कुशीनगर), गुलरेज शहजाद (मोतीहारी), शशि सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), जितेन्द्र कुमार (पकडी, आरा), योगेन्द्र प्रसाद सिंह (बोकारो, झारखंड), डा० प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात, विद्यापीठ), महेन्द्र प्रसाद सिंह (रंगश्री, नई दिल्ली), अजीत सिंह (इलाहाबाद), संतोष वर्मा (साधु नगर, नई दिल्ली), संजय कुमार सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर, बिहार), सत्येन्द्र नारायण सिंह, (नारायणा, नई दिल्ली), श्री रविन्द्र सिंह, (मेहरम नगर, नई दिल्ली), ई० रामचन्द्र सिंह, (श्रीरामनगर कालोनी, वाराणसी), हीरालाल 'हीरा' (रामपुर उदयभान, नई बस्ती, बलिया), दिनेश पाण्डेय (शास्त्रीनगर, पटना), शिवजी सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० जनार्दन राय (भृगुआश्रम, बलिया), विनय कुमार (भाटपारा, छतीसगढ़), अजीत कुमार (बैंक आफ बड़ौदा, पालघर), विपिन बिहारी चौधरी (बूटी मोड़, राँची, झारखंड), अशोक कुमार श्रीवास्तव (गाजियाबाद), शिवपूजन लाल विधार्थी (वाराणसी), डा० पारसनाथ सिंह (चन्द्रशेखर नगर, बलिया), डा० आशारानी लाल (काका नगर, नई दिल्ली), आलोक पाण्डेय अनवद्य (दिल्ली), कुबेरनाथ पाण्डेय (परसा, गाजीपुर, हीरालाल 'हीरा' (बुलापुर, बलिया) विनोद द्विवेदी, (वाराणसी), अरविन्द कुमार सिंह, (आइ.ए.एस, लखनऊ), डा० प्रेमप्रकाश पाण्डेय (वैशाली, गाजियाबाद), डा० दिवाकर प्रसाद तिवारी (देवरिया), शशि प्रेमदेव सिंह (कुं० सिंह इंटर कॉलेज, बलिया), सौरभ पाण्डेय (नैनी, प्रयागराज), घनश्याम सिंह (महावीर घाट, बलिया), डा० (श्रीमती) शारदा पाण्डेय (भारद्वाजपुरम्, प्रयाग-6), राकेश कुमार पाण्डेय (गाजीपुर), कनक किशोर (रांची, झारखंड), अरविन्द कुमार द्विवेदी (नई दिल्ली), रीतू सुरेन्दर सिंह (डुमराँव, बक्सर, बिहार)

भोजपुरी-साहित्य के नया पठनीय सृजन/प्रकाशन

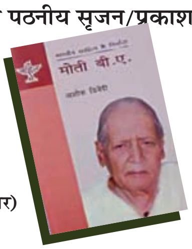

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)
अशोक द्विवेदी

₹ पेपर बैक-50/-

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)
अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

रामजियावन दास 'बावला'
अशोक द्विवेदी

भोजपुरी रचना आ आलोचना
(पृष्ठ संख्या-404)
डॉ0 अशोक द्विवेदी
मूल्य-500/-
विजया बुक्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

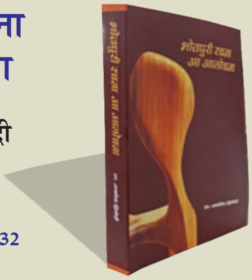

किताब मिलल....

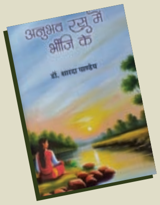

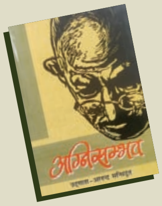
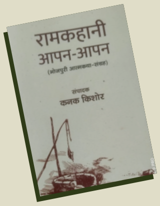

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019

Mobile: +91-8004375093, 8707407392, 8373955162, 9919426249,
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

अंक: 104 मार्च 2024

(तिमाही पत्रिका)

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

ग्राफिक्स
जितेन्द्र सिंह सिसौदिया

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

कंपोजिंग
अरूण निखंजन

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह
अँजोरिया डाट काम

'पाती'- परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) डा० अरूणमोहन 'भारवि', श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर), कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, दिनेश पांडेय (शास्त्रीनगर, पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), गंगाप्रसाद 'अरुण', (जमशेदपुर), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com,

सहयोग:
एह अंक के–100/-
सालाना सहयोग-300/- (डाक व्यय सहित)
तीन वर्ष के सहयोग-1000/-
आजीवन सदस्य सहयोग:
न्यूनतम-2500/-

संपादन-कार्यालय:-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001 एवं
एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19
मो0– 08004375093, 08707407392

[अशोक कुमार द्विवेदी के नाम से चेक/डी०डी० अथवा SBI A/C No. 31573462087, IFSC Code-SBIN0002517 में नकद/ऑनलाइन सहयोग जमा करके हमें सूचित करें]

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन निजी हऽ: दायित्व लेखक के बा, ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में...

हमार पन्ना –
- 'लोक' आ ओकर संस्कृति / 3–5

सरधांजलि –
- स्व0 हरिराम द्विवेदी
- 1) संस्मरण / डा0 सुमन सिंह / 6–8
- 2) विजय शंकर पाण्डेय / 9–11

रम्य–रचना –
- महुआबन के सवासिन / दिनेश पाण्डेय / 18–22

कविता खण्ड –
- स्व0 हरिराम द्विवेदी / 8
- स्व0 आनन्द संधिदूत / 12
- रामजियावनदास 'बावला' / 13
- श्री भगवान पाण्डेय 'निरास' / 13
- अशोक द्विवेदी / 14
- सुभाष पाण्डेय / 15
- डा0 कमलेश राय / 16
- हीरालाल 'हीरा' / 17
- शशि कुमार सिंह,'प्रेमदेव' / 17
- चन्द्रकान्त / 28
- ओम धीरज / 50
- सुनील कुमार 'तंग' / 58–59
- कल्पना मनोरमा / 86–88
- कैलाश गौतम / 11 आ कवर पृष्ठ–3

निबन्ध / आलेख –
- गमछा बा त का गम बा! / भगवती प्रसाद द्विवेदी / 23–24
- लोग से नेह–नाता के पर्व / मनोज भावुक / 25–26

कहानी–
- मुंजहना वाली / प्रेमशीला शुक्ल / 29–33
- आखिर कबले जगिहें हलकू / मीनाधर पाठक / 34–37
- केचुली / बिम्मी कुंवर सिंह / 38–41
- राधा / आशा रानी लाल / 42–44
- जगत मउसी / शारदा पाण्डेय / 45–49

लघु कथा –
- पानी के सुख दुख / विनोद द्विवेदी / 11
- नवका जजमान / विनोद द्विवेदी / 49
- अब लड़की के टान बा / गाड़ी पर गाड़ी, अब के जाई ससुरारी / 57
- बहुरुपिया बजार / डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव / 77
- कृश्न–किरिया / राजगुप्त / 78–82

आपसी संवाद

कविता –
- आनन्द 'संधिदूत' आ अशोक द्विवेदी / 27

समीक्षा –
- भोजपुरी साहित्य में छपरा–त्रयी(प्रोफे0 हरिकिशोर पाण्डेय, प्रो0 विश्वरंजन, बच्चू पांडेय), के योगदान / सुनील कुमार पाठक / 60–77

सांस्कृतिक गतिविधि – पृ0 51–56 आ 83–85

'लोक' आ ओकर संस्कृति

'लोक', अपना नैसर्गिक प्रकृति-परिवेश में हर मौसम-खुसहाली आ आफत-बिपत में जइसे जियत जूझत आइल बा- ओकरा भाषा आ बोली-बानी में जुग के असर आ बदलाव आइल बा। 'लोक' अपना जीवन का सँगे अपना भाषा-बोलियो के संस्कार करत आइल बा। शिष्ट- साहित्यिक भाषा का समानान्तर, लोकभाषा अपना वाचिक साहित्य का जरिये, अपना मौलिक सिरजनशीलता का साथ जीवन के सुभाविक आ प्रामाणिक उरेह कइले बा। संस्कृत से पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ठ आ हिन्दी तक पहुँचे वाली भाषा का विकास में 'लोक' के उरेहल लोक साहित्य में सृजनात्मक शक्ति देखल जा सकेला। शास्त्र के शिष्ट आ क्लिष्ट के पचाइ के लोक सहज आ अपना बोध लायक, बना लेला। राष्ट्रीय विस्तार में इहे 'लोक' अपना-अपना क्षेत्र के खासियत का साथ, अपना भाषा के गढ़लस आ ओकर जरिए जीवन से जुड़ल साहित्य आ कला के रूप आ प्रतिमान रचलस। हमनी के क्षेत्र भोजपुरिया लोक क भाषा रचलस, दुसरा क्षेत्र क लोग, अउर-अउर लोकभाषा में आपन उद्गार व्यक्त कइलस।

नागर-सभ्यता 'लोक' के जीवन वाला मान-मूल्य के भले प्रभावित कइलस, बाकि लोक अपना मौलिक अभिव्यक्ति आ उरेह से ओकरो के प्रभावित कइलस। लोक अपना उपराजल खेती-बारी, पशु-पालन, मछरी-पालन से अपना साथ-साथ सबकर पेट भरलस अन्न, फूल-फल, दूध-दही सब दिहलस- जवन आगा चल के ब्यवसाय में बदलि गइल- अदला-बदली (विनिमय) से कीने-बेसाहे वाला धन्धा हाट-बजार-मंडी आ बड़का 'माल' एह दुनिया में तमाम तरह के असह-दुसह आ विकृति-बिपरीतता आइल, बाकि लोक अपना मानवी सुभाव-संसकार वाली संस्कृति के पुरखन के दिहल परिपाटी मान के जियावत जोगावत चलि आइल। ई बात दोसर बा कि असली पर नकली हावी होत चलि आइल। शक्ति, सत्ता आ धन अरजन के लोभ-लिप्सा का साथ राजनीति के स्वार्थान्ध चढ़ा-उपरी आ प्रतिस्पर्द्धा में मुख्य आ बहुसंख्यक आबादी वाला किसान आ ओकरा सहजीवन में जिए वाला श्रमिक मजदूर आ बढ़ई-लोहार-कोंहार-नाऊ-बारी सब एक दुसरा से छटकि के अलग-बिलग वर्ग हो गइल। एह बँटवारा आ बिलगाव का पाछा तथाकथित पढ़ुआ-प्रगतिशील राजनीति रहे।

शास्त्रमत के चुनौती देबे वाला सहज-सुभाविक आ मानवीय 'लोकमत'- के उपेक्षा आ दबावे वाली राजनीति के कुटिल चाल आ दुष्चक्र में 'लोक' के इयत्ता पर गंभीरता से सोचे बिचारे का एह समय में हमके 1995 में लिखल "पाती" का सम्पादकीय "हमार पन्ना" के इयाद आइल। हमके लागल कि ओके फेरू से आप लोगन का सोझा राखि के 'लोक' धरोहर पर सोचल बिचारल जाव। आज का दौर में 'लोक' से ओतने लिहल आ ओकर आंशिक उपयोग कइल जाता, जवना से बनावटी में ओरिजिनल्टी डालि के बजार में धन आ जस कमाइल जा सके। अजुओ अपना जरि से जुड़ल-सुधी-समझदार लोगन के कमी नइखे। हमार विश्वास बा कि ऊ लोग हमार 1995 वाला सम्पादकी के जरूर पढ़ी आ एह लोक-विमर्श के आगा बढ़ाई-

'लोक' आ ओकर संस्कृति -1995

सुने में आवेला कि 'लोकशास्त्र' अन्तर्राष्ट्रीय विषय बनि गइल बा। भोजपुरी भाषा के एह पत्रिका के (ई) अंक, लोकसंस्कृति आ लोकसाहित्य पर निकाले का पाछा हमार मंशा खाली अतने बा कि शान्त, आ थिराइल सरोवर में कुछ अंकड़ी फेंकल जाव, जेसे ओमें हलचल होखो। लोग सोचो कि हमनी क संस्कृति साझ आ सहजोग क अइसन संस्कृति रहल, जवन सभके समेटि के सुख-दुःख बँटले रहल। लोगन के जोरे आ बान्हे वाली एह संस्कृति के, एघरी जाति आ वर्ग के स्वार्थ भरल गोलबन्दी घवाहिल कर रहल बा।

एकइसवीं सदी का आहट से अगराइल सत्तानशीन आ ओकर नोकरशाही एह संस्कृति के रिदिरी-छिदिरी करे में कौनो कोर-कसर नइखे उठा रखले। पच्छिमी 'हाइटेक-विग्यानी-सभ्यता' का कोख से जनमल 'हाय-हलो' वाली 'जीन्स' संस्कृति, धरती का रंग रस-गंध में पनपल श्रमजीवी-कृषक- लोकमानस आ लोकधरम के उपेक्षा से देखि के मुँह बिजुकावत बा। केबुल टीबी का रंगीन मायाजाल में फँसल पीढ़ी 'अरथ', 'काम' आ 'भोग' के आपन चरम लक्ष्य मानि चुकल बा। उदारीकरन वाला सरकारी न्योता पर विदेशी कम्पनियन आ ' 'ग्लोबल'- विचारकन क अइसन झोंझ टूटि परल बा कि हमनी क 'लोक' आ ओकर सउँसे अस्तित्व अपना समूचा राजपाट सहित उन्हनी का जबड़ा में जाए के तेयार बा।

लोक-मन आ ओकर संस्कृति

हमनी क लोकधर्म ऊपर से चाहे जतना देहवादी आ ललसा भरल लउकत रहे बाकि भितरे भितर ऊ आत्मीय आ मानवीय रहे। एम्मे आत्मा क सहज प्रवाह आ गहराई रहे। एक दोसरा के कामे आवे में, भलमनसाहत आ आत्मीयता झलके। धरती, प्रकृति आ उत्सव प्रधान एह लोकधर्म क विकास नदी, पहाड़, कुआँ, बावड़ी, फेंड़-रुख, नाग, यक्ष, भूत-प्रेत आ अनेक देवी देवतन का पूजा से होत खेती प्रधान भइल। आस्था, विश्वास, अन्धविश्वास, आ भोलापन वाला समाज में, जबकि ज्ञान-विज्ञान आ सभ्यता के ओतना विकास ना भइल रहे- संकट आ आफत में लोक देवता आ देबियन का संगे, जीवन-दाता, आ त्राता पहाड़, नदी, फेंड़ के पूजा करे के परम्परा बनल, जवन डीह, चउरा-आ बरम तक के पूजे के रेवाज में बदलि गइल। दरअसल रोग, शोकख दुःख, दलिद्दरपन कूल्हि का निवारन आ सुख, स्वास्थ, समृद्धि खातिर पहिले क मेहनती आ भोलाभाला लोग आपन-आपन नायक, आदर्श, भा देबी देवता खोजि आ मान के पूजल। एही परम्परा आ लोकाचार में कबो खुशी से, कबो मस्ती में, कबो दुख से विहवल होके, कबो थकान मेटावे आ दुःख भुलावे खातिर ओह लोग का कण्ठ से गीत फूटल, पैर थिरके सुरू कइलस, हाथ में मानर, ढोल, झाल, झाँझ आ डफ बाजल। लोक अपना जुझाऊ जीवन के उल्लास से गढ़ लिहलस।

जवन वन-संस्कृति धीरे-धीरे किसान-संस्कृति भइल साँच माने में ऊहे लोक-संस्कृति ह। किसान अपना पसेना से अन्न, फल, दूध, साग-भाजी उपराजे वाला, समाज के दाता आ पालक ह। बाकी लोग ओकर आश्रित भा पवनी। ना त ओके छल परपंच से लूटे वाला बिचौलिया डाकू, ठग, चोर।

भारत के संस्कृति किसान-समाज आ ओकरा से जुड़ल बन्हाइल श्रमजीवी आ हुनरमन्द शिल्पी समाज के संस्कृति ह, जवन आपुस के सहयोग, भाईचारा पर कायम रहे। हम खेतिहर किसान क बात करत बानीं। जमींदार आ भूमि-धरन क ना। खेतिहर समाज में सभ एक दोसरा के पूरक, मददगार आ सहजोगी रहे। खेतिहर किसान, ओकरा संगे काम करे वाला श्रमिक, लोहार, कोंहार, बढ़ई, बुनकर, जोलहा, नाऊ, बारी, धोबी आ घर बनावे वाला राजगीर सब। एह सहभागी श्रम-संस्कृति के बिगारे आ तहस नहस करे वाली संस्कृति क नाँव ह- औद्योगिक आ पूंजीवादी संस्कृति। एमे सामूहिकता क मोल नइखे

श्रमजीवी लोक जवन कला रचलस ओमें कुछ मौखिक, कुछ आंगिक, आ कुछ भाव-अभिनय वाला कला रहे। अपना संवेदना आ अनुभूति का आधार पर, अपना जोग्यता आ चुतराई से ऊ जवन चीझ-बतुस वनवलस ऊ धीरे-धीरे विशेषीकृत होत गइल। पहिले ओके सामन्ती आ जमींदारी प्रवृत्ति कचरलस; बाद में औद्योगिक पूंजीवादी संस्कृति। लोक शिल्पी आ कलाकार त बाद में मशीन आ नया तकनीक वाला उत्पादक-व्यापारी बाजार में गुन आगर होइयो के असहाय होके रहि गइल।

जबले 'लोक-संस्कृति' में सहयोगी-श्रमभावना, प्रेम आ पूरकता क भाव रहे, एह देख में कला, शिल्प, साहित्य आ विचार दर्शन कूल्हि क्षेत्र में लोक-गरिमा के खेयाल रहे। एम्में आत्मीयता के सहज प्रवाह रहे, कर्कश, बुद्धि क जटिल रसहीनता आ ठेलमठेल वाली प्रतिस्पर्धा ना रहे। लोकसंस्कृति के वाहक खेतिहर आ ओकरा श्रमिक शिल्पी समाज में, एक दोसरा का सुख-दुःख में शामिल होखे के ललक भलमनसाहत आ कृतज्ञता क भाव रहे। ई आपुसी रिश्ता कवनो फैक्टरी उद्योग के मालिक-मजदूर-नौकरशाह वाला खाली आर्थिक रिश्ता ना रहे। श्रम, लोक, कला, शिल्प का बीचे, जबसे ब्यौपार आ ब्यौपारी आइल, एकर मूल्यांकन आर्थिक आधार पर होखे लागल। पूँजी लगावे आ पूँजी कमाए वाला वर्ग 'लोक' का श्रम शिल्प, कारीकारी आ कला के- अपना उत्पादन, आ ब्यापार के साधन बना लेहलस।

कोलोनियल शासन सामन्ती दृष्टि, नागर सभ्यता, पूँजीवादी सोच आ औद्योगिक उत्थान से प्रभावित बेवस्था में जवन धूर्तता, मक्कारी, कुटिलता आ लूट-खसोट पसरल-पनपल ऊ 'लोक-संस्कृति' के धीरे-धीरे विकृत करे लागल आ खेतिहर संस्कृति क सबसे बढ़ियाँ देन : सहजीवन, भावात्मक एकता आ पारस्परिक-सहजोग के खतम क दिहलस। 'कम्यूनिटी' आ 'वर्गचेतना' के पक्षधर आ मजदूर के आर्थिक हित क लड़ाई लड़े वाला लोग प्रगति आक्रान्ति का नशा में-लोकसंस्कृति के वाहक छोट-छोट खेतिहर-किसानन का विशाल आबादी के भुला गइल। राजनीतिक पण्डा लोग ओके जाति, क्षेत्र आ धरम का आधार पर आजु ले बाँटत आ लड़ावत बा।

विज्ञान आ तकनीक का प्रगति से हमरा भा केहू समझदार के कवनो उजुर नइखे। ऊ खूब बढ़ो बाकि ऊ भारत का 'लोकमन' आ 'लोक-धर्म' से सजल-सँवरल संस्कृति के तहस-नहस जिन करो। धरती, प्रकृति आ विशाल खेतिहर समाज के रउँदि के अगर एकइसवीं सदी अइबो करी त कवना मसरफ के? आजु आधुनिक विज्ञान, तकनीकी, सूचना-संपरक आ नागर-सभ्यता अ क चाहे जतना भौतिक लाभ, गाँवन के मिलल होखे, बाकि गँवई समाज ओकर जवन आत्मिक कीमत चुकवले बा, जवन थाती लुटवले बा, ओके सोचि के हमार मन दुःख से निहँसि गइल बा। केहूँ तरे रोटी, धन, जस आ ताकत उपराजे आ अर्जित करे का धुन में लोकमन आपन भाईचारा, सुख-चैन आ शान्ति खो देले बा। अब ओकर उत्सवधर्मी-संस्कृति, ओकर माटी आ प्राकृतिक संपदा, ओकरा भीतर उल्लास, उमंग आ आत्मीयता नइखे पैदा करत। हमरा मन में ओह पुरान आदमी के आत्मा के उत्सर्ग क कविता जनम ले रहलि बा, जवन धरती के आपन सर्वस्व समझत रहे-

धारऽ हे माँ!/ बीया अस
अपना गरभ में-फूटीं हम अँखुवा अइसन।
पीहीं हे माँ
दूध/तहरा उमड़त छाती क
तहरे अँचरा में नींन आवो
तहरा गोदी खेलीं/ पलीं-बढ़ी आ
फेंड़ बनी छायादार
छतनार/फूल-फर से लदर-बदर
जुड़बाईं आ खियाईं
कुछ ना दे सकीं
त दीं हवा/अपना हरियर पतइन से।
हे माँ!/ अगर पूरा हो जाय
समय/ आ हमार कवनो ना रहे अरथ
त तोहरे में समा जाईं-हो जाईं
तोहरे में लय!

जमाना तेजी से बदल रहल बा। गँवई संस्कृति आ नगरी संस्कृति के भेदभाव मिटि रहल बा आ एगो मिलल जुलल संस्कृति के रूप उभर रहल बा बाकि आधुनिकता का पुरुसारथ विकृतियन आ सभ्यता का विसंगतियन से भोजपुरिहा संस्कृति के बचावे के होई-ओकरा सादगी, मस्ती, भलमनसाहत आ के सहेजे के परी। एही से ऊ अपना लोकसंस्कृति के परस्पर-पूरकता के भाव के पाई आ आगा बढ़ी। सहकार आ सामूहिकता लोकसंस्कृति आ लोक के ताकत रहल बा। खुदगर्ज आ सत्तावादी राजनीति का चक्कर में जातिवादी द्वेष उपजावे वाला मुट्ठी भर लोग आजुओ एह लोकमन आ लोक का जीवन-संस्कृति के छिदिर-बिदिर करे में लागल बा, बाकि लोक अपना आस्था आ बिश्वास के बदउलत अपना परम्परा आ विरासत के बचा रहल बा।

डॉ० अशोक द्विवेदी

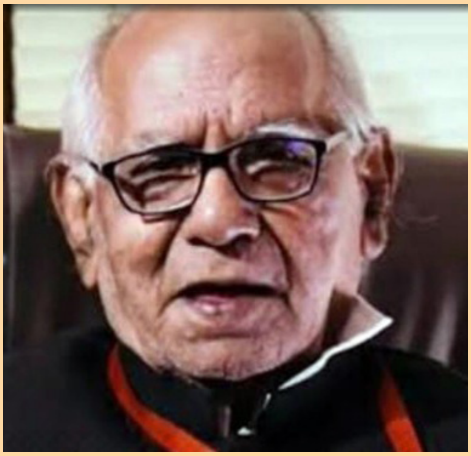

स्व0 हरिराम द्विवेदी (हरि भइया)
(12 मार्च 1936&8 जनवरी 2024)

संस्मरण

डा0 सुमन सिंह

"नयनवा न भींजइ हो...!"

"ए बच्ची ! मिले के मन करत ह हो। समय निकाल के आवा तनी भेंट हो जाए। जनते हऊ हमहन क डहरी क पेड़–रूख। जाने कब गिर–भहराय जाईं जा।' बाबूजी जब फोन करें त अइसहीं बोलें आ हम टोकीं– 'अइसे काहें बोलीला। अबहीं बहुत दिन जिए के ह अउर हमहन के असीसे के ह।' लेकिन एना पारी हम चाह के भी उनके कवनो असरा ना धरा पवनी। जब उनसे मिले गइलीं त देखलीं कि ऊ आपन कुल कागज–पत्तर फइलवले कुछ पढ़त–जाँचत रहलन। देखते हुलस गइलन–श्आवा–आवा बइठा बच्ची। अरे तू त सपना हो गइल हऊ। बतावा दस बेरी फोन कइले पर त फोन उठावेलू। ए बच्ची, देखा हो जब ले जियत हईं आ जाइल करा। हम जानत हईं कि तोहरहूँ जी के कम जंजाल ना ह, तोहूँ परेशान रहेलू लेकिन पाँचे मिनट बोल बतिया लेवल करा बचवा।' बाबूजी हमार बाँह पकड़ले अपने लग्गे बइठा लिहलन।हमसे बाबूजी के ओरी देख ना जात रहल। एक्के महिन्ना में बेमारी से बाबूजी बहुत कमजोर हो गइल रहलन। हफ्ता भर से खाना–पीना छूट गइल रहे। बस इलेक्ट्रॉल अउर सतुआ दियात रहे। हम जानत रहलीं कि जवन बेमारी बाबूजी के भीतर बइठल हऽ जल्दिए उनसे सतुओ–पानी क सहारा छीन लेही। आज बोले में बाबूजी क जुबान लड़खड़ात ह, हो सकत हफ्ता दस दिन में अबोला हो जाए। हो सकत ह बाबूजी के कंठ से कवनो गीत बाहर आवे खातिर अफनाए–हफ्फन धुने आ कंठ में करक के रह जाए। जवने बाबूजी से हमार दस साल पहिले परिचय भइल रहे ऊ बाबूजी मने पंडित हरिराम द्विवेदी जी,लकदक धोती–कुर्ता पहिनले, ललाट पर दमकत तिलक लगवले, सुंदर कमानी क चश्मा के भीतर से सनेह लुटावत, भरल सभा के गुन–गाम्भीर्य से लोभावत, लोक के सिरजत आ गावत। छोट–बड़ सबही से नेह–नाता गाँठत गीत पुरुष रहलन। उनके कंठ में सजल–निर्मल भाव भरल–पूरल रहे जवने के मिठास के मोहिनी स्वर में कब घंटा से चार घंटा बीत जाए, पते न

चले। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भोजपुरी अध्ययन केंद्र में उनके पहिली बेर देखले–सुनले रहलीं। अभिभूत होके निहोरा कइलीं– 'सर! मैं आपका इंटरव्यू लेना चाहती हूँ। यदि आपके पास समय हो तो प्लीज देखिएगा।' तत्काल टोकलन– 'आप मुझे सर न कहें।'

'तब ...।' हम असमंजस में पड़लीं।

'मेरे सभी जानने–मानने वाले बाबूजी कहते हैं। आप भी कह सकती हैं। कल–परसों में आ जाइए इंटरव्यू के लिए।' न त आवाज में कवनों आडम्बर न त व्यक्तित्व में कवनों ताव। एकदम सरल सुभाव। हम अचरज में कि एतना बड़ साहित्यकार जिनके बिना भोजपुरी क कवनो सभा–गोष्ठी ना पूरेला उ कइसे एतना सहज हो सकेला। तनी मनी त अपने ग्यानी होवे क गुमान त हर बनारसी बखानेला अउर पंडित हरिराम द्विवेदी त...खैर। हम आपन खैर कुशल मनावत बाबूजी क दू–तीन ठे किताब पढ़के आधा–अधूरा जानकारी लिहले उनके घरे मोतीझील महल के सबसे पीछे छत पर बनल दू कोठरी के मकान में पहुँचलीं। बाबूजी ट्रे में पानी क गिलास अउर बेसन क लड्डू लिहले सामने खड़ा हिरोहत रहलन– 'बड़ा घाम ह बच्ची। पहिले पानी पिया फिर बतकही होई। हम अबहीं कुछ कहे के सोचते रहलीं कि उनकर पत्नी आ गइलीं–, तोहार अम्मा हईं।' एसे पहिले कि हम गोड़ धरीं अम्मा अँकवार में भर लिहलीं– 'बइठा बाची सुमन। तोहरे बारे में खूब बात करेलन तोहार बाबूजी।' एतना मान, एतना नेह। हमार मन भर आइल। इंटरव्यू खातिर औपचारिक माहौल ना रह गइल रहे। ओह दिन खूब मगन होके बतकही भइल आ पंडित हरिराम द्विवेदी जी हमार बाबूजी आ उनकर धर्मपत्नी हमार अम्मा बन गइलीं। ओकरे बाद महीना पंद्रह दिन बीतत–बीतत मोह–छोह में घिरल–घेरायल या त बाबूजी हमरे घरे आ जायँ या त हमके बोलाय लें। कब्बो अम्मा खोंइन्छा में तरकारी बेचे आइल दुलहिया से कीन के दू–चार गो ताजा फूलगोभी बान्ह दें कब्बो बाबूजी अपने हिस्से क पूड़ी–पराठा खियाय दें। अम्मा के रहले ओह कोठरी में उजियार रहे। बाबूजी उनके निहारत बिहँसें 'ई हमार लक्ष्मी हईं, इनही क बनावल हम बनल हईं बच्ची। इहे साज–सँवार के रखले हईं हमार गिरहस्ती। बाबूजी के कुल आपन रचल गीत याद रहे। फोन करें त सुनावें, घरे मिले आवें त बाते–बात में कढ़ावें–गुनगुनावें। अरज कइले पर खूब डूब के घंटन सुनावे। बाबूजी के केहुए बोलावे ओकरे सम्मान में, आयोजन में खूब हुलस के जाएँ। सब उनकर भले न हो पइलस बाकिर उ जेसे मिललन ओकर आपन हो गइलन। अम्मा बेमार रहे लगल रहलिन। बाबूजी हमके रोजे फोन पर बोलावें– 'आजा, देख जा अम्मा के...।'

लेकिन हम ना जा पइलीं। बहुत दिन के बाद बाबूजी क फोन आइल– 'ए बाची, अम्मा छोड़ के चल गइलीं हो। तोहके बहुत याद करत रहलीं। तू आ न पवलू। बाची हो तोहसे भेंट ना हो पावल ...।' हम बहुत दिन तक एह संताप आ ग्लानि से उबर ना पवलीं कि बार–बार बाबूजी के बोलवले पर भी हम मिले ना गइलीं लेकिन बाबूजी एह बात के लेके कब्बो कवनों ओरहन ना दिहलन।

एह कचोट के लिहले जब बाबूजी से भेंट भइल त उ सुखाय के आधा हो गइल रहलन–– 'बच्ची हो अब हम ढेर दिन ना जियब। तोहार अम्मा बोलावत हईं।' हमसे कुछ कहले ना कहाय। हमके उनके ओरी देख ना जाय।

बाबूजी हमेशा कहें कि 'ए बच्ची! तोहरे अम्मा के आ हमके एक्के बात क संतोख ह कि एतना कुल बाल–बच्चा पढ़वनी–लिखवनी बाकिर केहू से एक्को पइसा रिन–उधार ना लिहलीं। अम्मा के कहनाम रहल कि हमहन क अपने अंतिम समय खातिर भी केहू पर बोझ ना बने के एसे अपने किरिया–करम बदे भी हमहन क बेवस्था कर चुकल हईं जा।' बाबूजी के स्वाभिमानी मन क इ संतोख ढेर दिन ना चलल। कैंसर आइल त उनकर कुल जमा पूँजी लील गइल। मीलों पैदल चले वाला आ नियमित लिखे–पढ़े वाला बाबूजी बिस्तर पकड़ लिहलन। एक दिन भेंट करे गइलीं त कहलन– 'ए बच्ची, हमार इच्छा ह कि हम जब शरीर छोड़ी त केहू रोए मत। हमके खुशी–खुशी विदा करिहा लोग।'

'अइसन काहें कहत हईं?' हमरे भरल आँख ओरी देख के झिड़कत गावे लगलन, कमजोर भींजल–भर्राइल आवाज में –

"मोरी ममता कै मोहिया सयान परनवाँ न भीजइ हो!
बसै जहवाँ असरवा कै जोति नयनवाँ न भीजइ हो!!
चाहे भीजै त भीजै नयनवाँ सपनवाँ न भीजइ हो।"

गवते–गावत अचानक जइसे कुछ याद आइल––

'सुना बच्ची, हमार इच्छा ह कि हमरे नावें से एगो भोजपुरी के कवि के सम्मानित कइल जाए हर साल भर। ए बच्ची! जियते जी ना हो पाइल त शायद गइले के बाद इ साध तोहन लोग के करतब से पुराय जाय।' हम उनके आश्वस्त कइलीं कि हमहन क जरूर आपके एह इच्छा के पूरा करब जा।

बाबूजी से ओह दिन के मुलाकात के बाद बहुत दिन तक बात ना हो पाइल। आपन घर–गृहस्थी के जंजाल में घिरल–भरमल हम ना जा पवलीं उनसे मिले। एक दिन उनके बेटी से पता

चलल कि बाबूजी अब बोल ना पावत हउवन। सोचीं कि जाईं देख आईं बाकिर हिम्मत ना होवे। एतना बोले वाला बाबूजी के एह अनबोलता–असहाय हालत में देखे क करेजा ना रहल हमरे। उनके घरे से या उनकर केहू परिचित क फोन आवे त करेजा धक्क से रह जाए। हम अइसन कुल समाचार से बँचल चाहीं जवन बाबूजी से जुड़ल कवनों अशुभ समाचार। बाकिर बरजोरी 8 जनवरी 2024 के हिंदुस्तान अखबार पर नजर पड़ल–सूख के ढाँचा मात्र बचल बाबूजी के नान्ह लइकन नियन कोरा में सटवले उनके पुत्र के फोटो संगे एगो अरज छपल रहे 'हरि भइया के उपचार को मदद की अपील।' हम सन्न रह गइलीं। बाबूजी क बार–बार दोहरावल वाक्य गूँजत रहे कि 'बच्ची हो हमहन क अपने किरिया–करम क कुल्ह इंतजाम कइले हईं जा।'

फिर कइसे इ दिन देखे के पड़ गइल बाबूजी के... मन बहुत विचलित रहे। सोचलीं कि काल्ह जरूर जाइब बाबूजी के पास लेकिन काल्ह यानी 9 जनवरी के ओही अखबार में छपल मिलल– "भोजपुरी के विद्यापति ने संसार से ले ली विदाई"।

पातरि पीर (बरवै)

❑ स्व0 हरिराम द्विवेदी

मितवा बोलिया बोलै अस अनमोल
सुनतै मनवाँ जाला बरबस डोल।
सोच सोचि के जियरा सीतल होय
थकै न तनिक परनवाँ सुधियन ढोय।

नेहियां पाके हियरा हुलसइ मोर
बरै दियरिया भितराँ लगै अँजोर।
अस अपनइयत सोचीं जीव जुड़ाय
केतनो करीं परनवाँ नाहिं अघाय।

गंगाजल अस पावन परम पुनीत
कहाँ जुरै एह जुग में अइस पिरीत?
सुखद सपनवाँ पनपै सीतल छाँह।
जबै जुड़ै अँकवारी भरि-भरि बाँह

इहै मनाईं निसदिन आठउ याम
जिनिगी भर ई नेहिया निबहइ राम।
बनि बैरी विष बोबैं बाउर लोग
लगि लगि जाय जिनिगिया कुफुतई रोग

ई बनि कलक कुरेदै बारम्बार
डुहुकै जिनिगी जइसे छवै अँगार।

जे मितवन के बिच्चे बोवे आग
उजरवटी पर डालै करियर दाग।

देखि सकै न पिरितिया के परतीत
करमहीन जेके ना भावै गीत।
अइसन कुटिल सुभाव न जानै नेह
जनम अकारथ बिरथा मानव देह।

काँट गड़ै कढ़ि जाय न पीर ओराय
बहुत देर तक करकै करक बुझाय।
केतनी बिखधर पीरा सहइ परान
एके कइसे केहू जानइ आन।

निरमल नेहिया रहली बड़ टहकार
कउने कारन नहकै भइल अन्हार।
इहै सोचि के हियरा होय अधीर
गहिरी होत इ जाले पातरि पीर।

स्मृतिशेष : स्व0 हरिराम द्विवेदी – हरि भइया

विजय शंकर पाण्डेय

सन 1916 से 1947 क समय भारत खातिर बहुत कठिन आ भारतीय लोगन के 'करो या मरो' क समय रहल। अंग्रेज अपना आखिरी कोसिस में रहलन कि ई सोने क चिड़िया कहाये वाला देस कइसों हाथ से छूटे ना पावे तब सोने क चिड़िया पिंजड़ा तोड़ के स्वतंत्र बिचरण खातिर छटपटात–जूझत रहल। शेरवाँ से चकिया क पहड़ी रास्ता पकड़ के 6 मील के पैदल, घड़ारी वाली गाड़ी सिकिंजा से ढकेलत दौड़त–दौड़त, गाँव के लइकन के साथे नंगे पाँव जँघिया, कुर्ता, पहिनल गमछा बन्हले लइकन के चिढ़ावत, चुटकला सुनावत अठवीं कक्षा में चकिया के सरकारी स्कूल प्रवेश पावे वाला ई साँवला सलोना, छोट कद के नटखट लइका के केहू ना बूझत रहल कि बड़ा भइले पर इहै लइका अपने बोली भाषा क प्रसिद्ध लोकप्रिय कवि हरिराम द्विवेदी (हरि भइया) कहाई।

पं0 शुकदेव द्विवेदी के गोद में माता रेशमा देवी रात में माघ कृष्ण द्वितीय (तदनुसार 12 मार्च 1936) के एक साँवला, सलोना बालक दे दिहलिन। गाँव में शोर भइल कि हरि आ गइलन। छः महीना क भइलन तऽ हरिराम हो गइलन। शेरवा प्राइमरी स्कूल में पाँच वर्ष के अवस्था में पढ़े गइलन तऽ हरिराम द्विवेदी हो गइलन। जइसे–तइसे बड़ भइलन पढ़े बदे घरे से विद्यालय क दूरी बढ़त गइल। तब बनारस पढ़े बदे शेरवा से पैदल आवे के पड़े। आज के तरह तब न सड़क रहे न आवागमन के सुगम साधन। साइकिलो ना रहल। कवारे पर भा कान्ह में झोरा लटका के खाय क समान गठरी में बाँध के लियावे के पड़े।

हरि भइया क लगन उनके बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से बी.ए. अउर आगा बी.एड. करा दिहलस। बाद में एम.ए. काशी विद्यापीठ से कइलन। इनकर प्रतिभा आ जोग्यता देख के बनारस आकाशवाणी क डाइरेक्टर खेती गृहस्थी के कार्यक्रम में उद्घोषक के पद पर नियुक्त करि दिहलन। हरि भइया के कारण ई कार्यक्रम खेती–किसानी वाला लोगन बदे आकाशवाणी बनारस के आकर्षक क चर्चित प्रोग्राम बन गइल रहल। इहाँ से हरि भइया के बहुत ख्याति मिलल। हरि भइया लोक गीतन के कबियन में प्रमुख कवि कहाये लगलन। बहुत थोड़े समय के लिए आकाशवाणी गोरखपुर में गइल रहलन, लेकिन बनारस क लोग उनके उहाँ नाहीं रहे दिहलन।

हरि भइया वास्तव में अपना मातृभाषा क लोक कवि रहलन। हिन्दू समाज क हर तीज–त्योहार, मंगल उत्सव हरिभइया के रहनि आ बोल–चाल में रच–बस गइल रहल। सच कहीं तऽ उनका भीतर समाय गइल रहल। अनायास बिना कवनो प्रयास के ओनके जिहवा पर पूरा लौकिक गीत सरस्वती मइया लिया के रख दें। एक बार आपसी बातचीत के दौरान हमके बतवले रहलन कि "जब गाँव के पटिदारी में शादी बियाह के मौके पर माई गावे जाय तऽ हमहूँ ओकरे साथे जाईं। माई के गोदी में बइठ के सुनीं।"

फिर बतौलन कि करीब 40 बरिस तक ऊ रोज मोती झील से पैदल दशाश्वमेघ घाट गंगाजी नहाये बदे जाँस। अक्सर औरत लोगन क झुण्ड मंगलगीत गावत रस्ते में मिल जाय। एन ओनके पीछे–पीछे ओनकर गावल मंगलगीत पीयत चल जायँ, उहे भाव–लय गीत के रूप में उनका भीतर से फूटे होय। एतना सहजता, सरलता आ गइनता के साथ हरि भइया ओकर चित्रण करें जवन ह्रदय के छू लेव।

हरि भइया गाँव के बोल–चाल, रीति–रिवाज में एतना गहिरे पइठल रहलन कि आदमी सोच न सके। एतना सही चित्रण करैं, लगै कि फोटो खींच देत हयन। आपसी चचा में अइसने बिषय पर आपन तुकबन्दी सुनावैं कि हमलोग दाँते तले अँगुली दबा के रह जाईं। शब्द न मिलै कि कइसे बखान करीं।

मंच पर सुनावे बदे उनका पास कतने लोकप्रिय गीत रहल। ओनकर याददास्त इतना पोढ़ रहल कि घंटा भर एकल कविता पाठ करत रह जायँ। उनका चर्चित गीतन में "नदिया देखि के नहाये क मन करै, अमवाँ लगायै बाबा बारी बगीचा, बारहमासा, चिरइया बौलेले भिनसार, जीवन दायिनी गंगा, बनारस क महात्म, चइता, कजरी, फगुआ, के राग भरल गीत रहल करे। उनकर कई पुस्तक विशिष्ट मंचन पर विमोचित अउर सम्मानित भइल–

1. नदियो गइल दुबराय –भोजपुरी गीत संग्रह
2. अँगनइया–भोजपुरी गीत संग्रह
3. जीवन दायिनी गंगा–भोजपुरी–हिन्दी गीत संग्रह
4. साईं भजनावली–भोजपुरी–हिन्दी गीत संग्रह
5. पहचान बच्चों की–हिन्दी कविताएँ
6. नारी एक विशिष्ट काव्य कृति–हिन्दी
7. पानी कहै कहानी–संगीत रुपकन क संग्रह
8. पातरि पीर (बरवै छन्द)–भोजपुरी
9. हाशिये का दर्द–हिन्र्दाी गीत संग्रह
10 रमता जोगी–हिन्दी कविता
11. बैन फकीरा–हिन्दी कविता
12. हे देखा हो–व्यंग रचना संग्रह
13. काशी महिमा–हिन्दी
14. मूल्य बाइबिल के–हिन्दी दोहा में रुपान्तरण

स्व0 हरिराम द्विवेदी जी के भोजपुरी प्रतिनिधि कवि के रूप में एतना प्रतिष्ठा रहल कि सन 2006 में आई.सी.सी.आर. के माध्यम में म्याँमार देश के यात्रा कइलन, अउर उहाँ एनके बहुत ख्याति अउर सम्मान मिलल। अइसे तऽ हरि भइया कहीं न कहीं रोजे सम्मानित होखल करैं, लेकिन विशेष रूप में मिलल उनका सम्मान क विवरण एह तरह से बाय–

1. उत्तर प्रदेश क हिन्दी संस्थान से राहुत सांकृत्यापयन पुरस्कार।
2. हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग कऽ साहित्य सारस्वत सम्मान।
3. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण पुरस्कार।'
4. 'विद्या श्री न्यास' वाराणसी से 'लोक कवि' सम्मान।
5. विश्व भोजपुरी सम्मेलन से "सेतु सम्मान"।
6. साहित्य अकादेमी से 'भाषा सम्मान 2013'
7. काशी हिन्दू विश्व विद्यालय से शताब्दी वर्ष में 2015 में एल्यूम्नस एवार्ड।

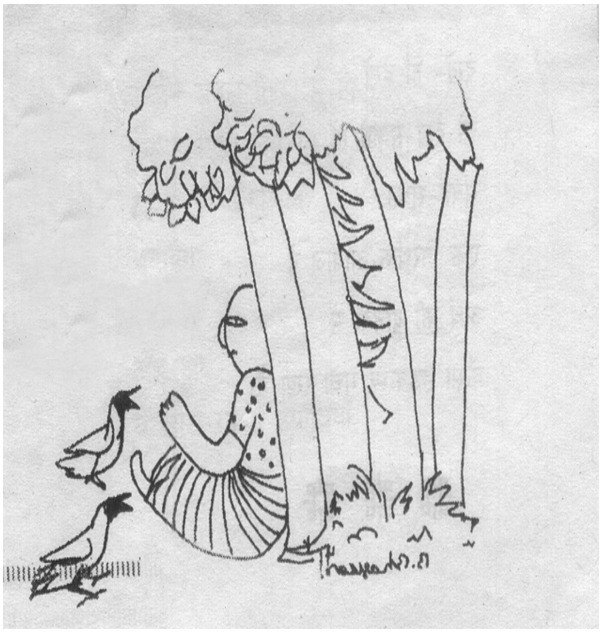

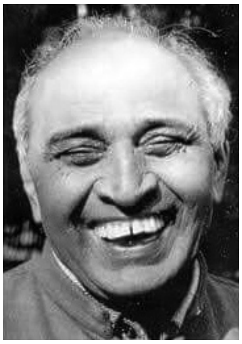

स्व0 कैलाश गौतम

आजु क गाँव

धीरे-धीरे शहर गाँव में देखा कइसन धँसै लगल हौ
सास के मुँह पर नई बहुरिया उलटे पल्ला हँसै लगल हौ
का मलमल का मारकीन अब सबै सफेदी छींट होत हौ
कवने मुँह से रही हरियरी खेत क माटी ईंट होत हौ
टूट रहल पुश्तैनी रिश्ता हुनर हाथ से छूट रहल हौ
बढ़त जात हौ खटियै खटिया रोज नया घर फूट रहल हौ

भिनसहरैं भागै क होले रतियै में तइयारी जम के
रोज बिहाने शहर वसूलै दूध-फूल-तरकारी जम के
रात-रात भर नींद न आवै पहिली बस आँखी में डोलै
कौआ मुरगा बाद में बोलै पहिले मिल क भोंपू बोलै
राग-रंग अब छत्तिस भइलैं तिरसठ भइल उदासी देखा
शहर भयल अधिकारी बड़का गाँव भयल चपरासी देखा

लाजशील अब के जोगवैला बुढ़वन में बस तनी रवा हौ
लेकिन ऊहौ सगरों नाहीं जहाँ-तहाँ बस हवै हवा हौ
जेकरे कवनो काम न धंधा ऊ अचेत फैशन में हउवै
चाम चूम में, टीम टाम में, सब अइसन तइसन में हउवै!
घरे-घरे पानी पहुँचावै वाला पाइप आय गयल हौ
पनिहारिन कल गइल गाँव से कुआँ क दिन नियराय गयल हौ
गोड़न बिछली गिरी न गगरी अब ना छम्मक छुम्मक होई
ठुमुक ठुमुक के नाच-नाच के गुजरतिया ना गगरी ढोई
जब से आइल गाँव में बिजुरी पंखा चलै त सोवै ललुवा
लालटेन के माने पूछै डिबरी देख के रोवै ललुवा
टोला-टोला खुलल कचहरी घर-घर में पंचाइत होले
जेकरे घर ना चाह बनैले ओकर बड़ी सिकाइत होले
देशी घीव शहर से आवै आम क पल्लो बन से आवै
चइती, कजरी, फगुवा, सोहर कइसन बारहमासा रहलन
छोटकी बड़की कुरुई रहलीं कुरुई बीच बतासा रहलन
लाल हरी रोशनी चउक क कुल पर पानी फेर रहल हौ
साल भरे क लइको सुन सुन फिल्मी गाना टेर रहल हौ
आपन पौरुख आपन पानी आपन सब कुछ लिखै के खातिर
सिविल लइन में घंटाघर पर गाँव खड़ा हौ बिकै के खातिर
सुरसतिया लछमिनिया दूनो ना अपने जंगला पर लउकैं
साँझ सबेरे जब देखा तब साहेब के बंगला पर लउकैं
आज गाँव क गणित गलत हौ कहाँ एकाई कहाँ दहाई
दूब न चीन्है कुसा न चीन्है आज क पंडित आज क नाई।

लघुकथा

पानी के सुख दुख

विनोद द्विवेदी

एक बेर पाण्डव लोग बनारस घूमे आइल। भुखाइल-पियासल ओ लोग के ओठ झुराइल रहे। द्रौपदी पानी-पानी क रट लगावे लगली। सहदेव आ नकुल अगस्तकुण्डा का गली में घुसि गइल लोग, देरी होत देखि भीमो ओहरे चलि गइलन। द्रौपदी क परेसानी अर्जुन से बरदास ना होत रहे ऊहो पाछा लागल पानी का खोज में चलि गइलन। जब बहुत देर हो गइल त युधिष्ठिर के जाए के परल। ऊ जाके देखत बाड़न कि नकुल-सहदेव दूनो जाना गड़हा खनत रहें, भीम जोर लगा के नलवे के झुकावत रहलन आ बाण से बोरिंग करे वाला धनुषधारी अर्जुन लगिए ठाढ़ दू गो मेहरारुन से झगरा करत रहलन कि 'पानी सबसे पहिले हम लेइब!'

युधिष्ठिर के देखि के नल क मालिक रतन यादव बोलल, 'पहिले हमरा सवाल के जबाब देबे के परी तब्बे पहिले पानी मिली।' उनका सहमति दिहला पर ऊ पुछलस, 'सबसे बड़ सुख का ह?'
'अपना नल में पानी आइल।' युधिष्ठिर जबाब देहलन।
'सबसे बड़ दुख का हऽ?' - 'पड़ोसी का घर में पानी आइल।'
नल के मालिक खुस होके बोलल- "एकदम सही। तू बहुत समझदार बाड़ऽ। अब एह नल क पानी सबसे पहिले तोहरे के मिली।"

तीन गो कविता

स्व0 आनन्द संधिदूत

(एक) तोहार सपना

रात, फुल छितरउए
तोहार सपना
हँसि-हँसि मुसुकउए
तोहार सपना।

ओठँघल जानि के सरिरिया के अतमा
मन अभिलाख बन तरई चनरमा
भरि नभ उधिअउए, तोहार सपना!
रात, फूल छितरउए
तोहार सपना।

कहाँ-कहाँ नाहीं बउँड़ात रहे अतमा
हाँफि-हाँफि गउए छुअत लागे थथमा
फूल गुलरी के भउए तोहार सपना!
रात, फुल छितरउए
तोहार सपना।

कँह बह निनिया के फुटुए किरिनिया
सुख-दुख जिनिगी के कथन-कहनिया
जाने कहाँ बहि गउए तोहार सपना!
रात, फुल छितरउए
तोहार सपना।

(दू) बोलन लागे डारे डारे

टप-टप चुए जइसे
भरि मधु कोठिला
बोलन लागे डारे-डारे
कूहु-कूहु कोकिला।

कहेली तपन जरि कवन कहानी
सीता के बिरह कि बिरह राधारानी
कान रोपि सुने जेके
मथुरा से मिथिला।

कागा संगे दूध-भात इचिको न छुअली
राजा घरे सोना का पिंजरवा न बसली
कवन दरद दरे
हियरा के होसिला।

के मारे गभिया कुबोली बोली बरछी
की हँसे मयेना कि सुगवा नकलची
कवना विरोधी का
बिबेखे चितबेदिला।

कइसन रिन रे बन्हक परे सँसिया
बूँद-बूँद कहाँ जरे अगिन पियसिया
कवना पिरितिया
के सझुरे न ममिला।

(तीन) अँजोर ले ले अइहऽ

पिया अइह त
अन्हरिया में अँजोर लेले अइहऽ
चान-तरई गढ़ौले पोरे-पोर लेले अइहऽ।

लेले अइह सुख-दुःख हरस-बिसदिया
ओठवा प’ तितिली पुतरिया प’ मोतिया
हिया लय-धुन मोरा
झकझोर लेले अइहऽ।

घरे-घरे बाँट दिहीं बायन-पेहान से
ढाँपि के पिरितिया उदित मुसकान से
जग घर अब बाँह में
बटोर लेले अइहऽ।
पिया अइहऽ त...

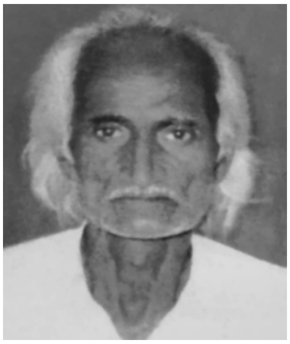

रामजियावनदास 'बावला'

सखि फागुन आइल

सगरी सरेहिया रँगाइलि
हो सखि फागुन आइल
खेतवा मटर गदराइलि हो
सखि फागुन आइल !

पिया परदेसिया क सुधिया सतावइ
बोल कोइलरिया क कहर ढहावइ
अमरइया बउराइलि हो
सखि फागुन आइल ।

दूधवा में रतिया चननिया नहाले
खोरी-खोरी होरी होय गीत मुस्काले
फुटही ढोलकिया मढ़ाइलि हो
सखि फागुन आइल !

रस बरिसावै मधुमास के बयरिया
बिरमल जाने कहाँ बावला सँवरिया
सपना प सपना टँगाइलि हो
सखि फागुन आइल !

श्री भगवान पाण्डेय 'निरास'

केसर इहां फुलाइल बा

आजु अचानक दुपहरिया में
याद केहू के आइल बा,
लागत बा कतना गुलाब
आ केसर इहाँ फुलाइल बा।

घर में महँके रजनीगंधा
बहरी हरसिंगार झरल,
ठूंठ फेंड़ में कनछा फूटल
क्यारी-क्यारी नेह ढरल।
आजु अमावस के आंगन में
चान उतरि के आइल बा।

ताल-तलइया भरि आइल
अमराई में गुंजार भइल,
तन पलास मन अमलतास
सेमर कपास टहकार भइल।
सपना के बा पाँखि भेंटाइल
मन पंछी बउराइल बा।।

अलंकार से सजल-धजल बा
गठल छंद जइसन काया,
लाज कल्पनो के लागे
देखते तहरा जस जाया।
संयम टूटल आजु ओठ से
गीत फेनु बिछिलाइल बा।।

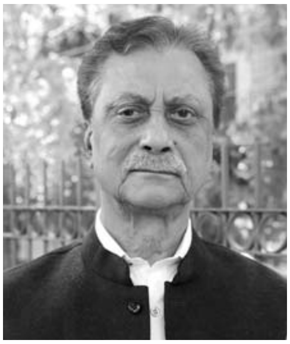

✍ अशोक द्विवेदी

(1) दुखवो अइसन मीठ

पिहिके फेरू पपिहरा
चीन्हल-जानल पीर लगे
तहरा सुधि में छटपटात मन
आज अधीर लगे।

जिभिया चाटि दुलारत बछरू
गइया जब हुलसे
नेह के आँच बरफ पघिले
बन परबत नदी हँसे
छछनल जिया जंतु जुड़वावत
नदिया-नीर लगे।

गिरत-उठत जिनिगी से हमके
अतने पता मिले
गिरे पात पियराइ बिरिछ से
फिर टूसा निकले
भोरे फेरी देत चिरइया
सुधी-फकीर लगे।

परते दीठि तहार
रुखाइल दिन अनुकूल लगल
बिहँसल अस अनुराग कि
बन-झर कँटवो फूल लगल
दुखवो अइसन मीठ
कि जइसन गुड़ के खीर लगे।

(2) काँट-कुस खिले

अब सीत- ताप घाम-छाँव
जौन कुछ मिले
दुख-सुख में रहे भाव सम
निबुके भले-भले !

महुआ नियर ढुरुके पिरीत
भूँइं पर बिछ जाय
चन्दा उगे उजराय रात
दिन अगर ढल जाय
झुरुके बयार सुरसुरात
साँस कुछ चले!

जुड़वावे या जरावे समय
नइखे हमरा हाथ
चाहत हमार बा कि कटे दिन ई
तोहरे साथ
तलफे न हिया, चैन मिले
आह ना निकले !

रूसीं-मनाईं, रोईं-हँसीं
का न करीं हम
अब का करीं, तूँही कहऽ
बा अकथ ए, हमदम
टूटे थथम कि डेग ई
आगा मुँहें हिले!

बदरी में लगे आगि तबो
लोर बन चू जाय
कुच कुच अन्हार में किरिन
तनिकी-सा बस छू जाय
सुख-दुख के खिले रंग
जइसे काँट-कुस खिले !
झुरुके बयार सुरसुरात
साँस कुछ चले।

सुभाष पाण्डेय के
दू गो फागुनी गीत

(एक)

फागुन नाचत-गावत आवत ।
अगुनी में आगे-पाछे सकल चराचर धावत ।

विविध रंग के फूल धरा पर, अँजुरिन छिटत-बिछावत ।
गोद भरत नवकी फसिलिन के, तनमन सब हरखावत ।
बाँटत देत-लुटावत आवत ।

पछुआ पर असवार घुमत नित, सभकर तन सिहरावत ।
सजना के गमछा, सजनी के अँचरा के लहरावत ।
उछलत कूदत-फाँनत आवत ।

गाल लाल टेसू गुलाब के परसि-परसि दुलरावत ।
मुकुट धरत सिर ठूँठ बिरिछ के उमगि-उमगि उमगावत ।
मटकत मोद मनावत आवत ।

मधुर राग होरी के टेरत, झाँझ-मृदंग बजावत ।
धरनि अबीरा कुमकुम-केशर रंग-गुलाल गिरावत ।
रस बरसावत, धावत आवत ।

(दू)

अँचरा गजब तहार
ए गोरी, कहवाँ रँगवलू?

एक खूँटे पीरा त दोसरे पिरितिया
बन्हलू किनारी सब नेह नीति-रितिया
सहज सरल सुविचार,
ए गोरी, कइसे जुगवलू?

ललना गदेलवा के अँचरा ओढ़ा के,
चूल्हा-चाकी कइलू दरद बिसरा के
सँवरल घर परिवार,
ए गोरी, कइसे सजवलू?

परदेशी पिय अइहें असों के फगुन में?
कागा उचरत बाटे काल्हि से सगुन में
अँचरा पंथ सँवार
ए गोरी, सपना जगवलू?

फाँड़े में सँइतेलू गंध भरी रोरी,
गाल गुलनार सोभे मचे रंग होरी,
आँचल झीन उहार,
ए गोरी, जिनिगी जुड़वलू?

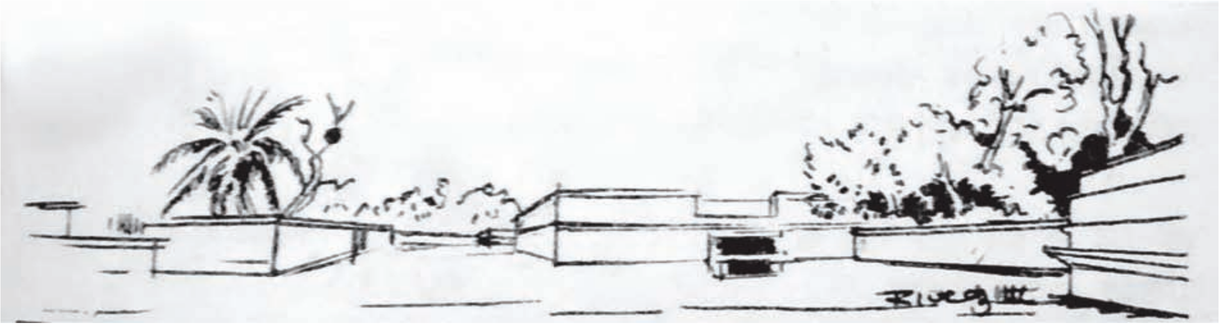

डा0 कमलेश राय के दू गो गीत

(एक)

सांझ के पहरा में हम
जब-जब गगन के पार देखीं
रात के अँगने हँसत
एगो नया भिनसार देखीं

भोर के दुवरे लखीं
पहिली किरिन क कुनमुनाइल
हँसत दिन के आस में
बनपांखियन क चहचहाइल
हर कदम अन्हियार के
टारत धवल उजियार देखीं

नेह क भँवरा पुलक के
पांखुरी में प्रीत बोवे
सगुन क पंछी ,हिया के
बांसुरी में गीत पोवे
कांट- कोरन पर खिलत
बिहँसत कली कचनार देखीं

दूर से राही कहीं
माझी रे, माझी रे पुकारे
आस क पतवार लेके
ठाढ़ हम नदिया किनारे
समय के ठहरल नदी में
सहज निरछल धार देखीं

धुंध के चादर में कबहूँ
धूप क चेहरा न होखे
राह में सूरुज के अब
अइसन कहीं कोहरा न होखे
काल्ह के मौसम बदे
हम आज क अखबार देखीं

(दू)

कबों पतझार क मौसम
कबों मधुमास मनभावन
हवे जिनगी क रंग दूनों
कबों भादों कबों सावन

कबों दहकत दुपहरी क
तपत मृगडाह ई लागे
कबों पीपर क डोलत पात
शीतल छांह ई लागे
कबों रस-रंग क महफिल
कबों जप-जोग-आराधन ।

कथानक दुख भरल लागे
कबों लम्बी कहानी क
कबों छन में मिटे ई
बुलबुला बन-बनके पानी क
कबों कांटन क जंगल तऽ
कबों फूलन क घर-आंगन ।

ए जिनगी क असल सूरत
कबों ऐना में आइल ना
सही पहिचान एकर
आज ले हमके बुझाइल ना
कबों घुंघुटा के दुलहिन तऽ
कबों लागेले बंजारन ।

हीरालाल 'हीरा'

बनजारा मन

बनजारा मन जइसे कतहूँ,
अचके ठहर गइल
उनका ओह चितवन के,
दिल पर कइसन असर भइल।

परिभाषा ना प्रेम के जनलीं,
हम रहनी नादान
रसे-रसे ऊ पीर उठल कि,
निकले जइसे प्रान
दवा बिरो कुछ काम न आइल
सब बे असर भइल।

मन तड़पे मिलिर्ती बाकिर फिर
उभरे तर्क हजार
दरस-परस का बेचैनी में,
दाबे लोक-बिचार
साँप छुछुन्नर के गति,
जिनिगी लागे जहर भइल।

पैकड़ बन्हले नाचि रहल बा,
मन मयूर आँगन में
भूख-पियास न लागे जइसे,
डाढ़ा लेसले तन में
एह पिरीत का चलते,
तन से मन दर-बदर भइल।

- बुलापुर, बलिय

शशि कुमार सिंह,
'प्रेमदेव'

--- दोहावली ---

बिनु बरखा धरती दुखी, चाँद बिना अस्मान ।
नेह बिना सोना मढ़ल जिनगी धूर समान ।।

तन के सुघराई गइल, मन के गइल उछाह ।
मोहन तोहके पूजि के, कइलीं कवन गुनाह ।।

थाती कवनो कीमती , खोजे जइसे चोर ।
साजन के खोजत फिरे , बिरहिन चारो ओर ।।

ऊहो तऽ रधिके नियन, कइली तप गंभीर ।
काहें मीरा के तबो चमकल ना तकदीर ।।

मुरली मधुर बजाइके, सुध-बुध लिहले छीन ।
कइसन दीनानाथ तूँ , कइलऽ अउरी दीन ।।

रहिहें कवनो देस में , भलहीं केतनो दूर ।
चाँद नियन बाकिर पिया, अइहें नजर जरूर ।।

तूँ ही सुख-दुःख के सखा, तूँ ही सजन हमार ।
तोहरा के, ए देवता ! कइसे दिहीं बिसार ।।

ना कोठी, ना कार, ना रुपिया चाहीं ढेर ।
अँखियन के सोझा रहऽ बस तूँ साँझ-सबेर ।।

हमरा तोहरा बीच में , माया-उदधि अपार ।
तूँ उहवाँ बेबस पिया, इहवाँ हम ला-चार ।।

- प्रिंसिपल कुँवर सिंह इण्टरमीडिएट कालेज, बलिया (उ प्र)

महुआबन के सवासिन

✍ दिनेश पाण्डेय

हेमंत सुगबुगाए लागल।

जाड़ पातर पड़ल, दिन लमरे लागल, राति सकुचाए लागल, साँझ–फजीर के खुनुक अबो ले शेष बा, दखिनहिया मलके लागल, कोइलर नफीरी के सुर साधल शुरू क देली, गाछ–बिरछ के पतई झरे से पगडंडी प चरमराहट होता, एक अनजानी मदिर गंध नथुना में भरे लागलि त बूझि जाईं कि हेमंत आ गइल।

रूप–गंध के खिंचाव से आज ले के बाँचल, कतना बानगी गिनाई केहू? ई अलहदा बाति ह कि आपन खिंचाव के सुरहुरी के सुख सभे लेल चाहेला बाकिर आन के अइसने बात प तेज ककुलहट उपरा आवेला। सुगम राहि में परल रोड़ा फोरे के फितरत कवनो नया बाति थोरे ह। लाही अदना कीट हवें, इनकर का बिसात? कवनो गंध के चाहना, कि कवनों रंग के मोह? ए मौसम में अधिका दीखे लें। बाकिर इचिको ना सोहासि, ऊ चाहे पियर सरिसों के फूल प होखसि भा आँखि के कोना में आत्महंता कूद के जरिए परपरहट पैदा कइले होखस। जीए के हक उनुको बा, ई जनला का बादो हेमंत में उनकर प्रकोप रुचिकर ना लागे। एगो अजीब भुनभुनहट के आवाज में डूबल माहौल में उदासी आ उझंखपन के मात्रा जादे लागेला। ई विरानगी बहरसी आ भतरियो लोक में व्याप्त होला। दरअसल, हेमंत विकास के पहिले होखेवाला बेतरतीबी, टूट–फूट आ निरमान के मौसम ह। पतझर के कोखि में बसंत के आधान होला। अगरचे बसंत बिगसन ह त हेमंत तेकर भूमिका ह। वातावरण में ए तरे के लच्छन दीखे लागे त अदबद के हेमंते ह।

पतीजे के बात ई कि हेमंत पता जाए आ पताए, चूवे आ चुकचुकाए, झरके आ झलराए, टपके आ टनमनाए के रुत ह। एक पतई डाढ़ि से टूटल आ उधिया–पता गइल, मोजर से मद के झींसी टपकल आ ललछहूँ ओठ के ओदपन बढ़ि गइल, कुछ झुराइल ह त कुछ फरफराइल ह, कुछ आस्ते से टपकल ह त कहईं जिनिगी के कसमसाहट नजर परल ह, बात बरोबर। ईहे जीवन–चक्र ह। कतहूँ हा–हा दइया के शोरगुल नइखे। पोखर के शांत तल प एगो कंकर गिरल, गोल–गोल घेरा–प–घेरा उठल फेरु सबकुछ थिर, जस के तस। बात चूवे–टपके के होत बा त महुआ के सुरुता परल सुभाविक बा। कबो–कबो अइसन लागेला कि जयशंकर प्रसाद जी महुए के देखि के दुइए पाँति में जीवन के जथारथ आ मकसद के समेटे में कामयाबी हासिल कइले होखबि कि कुछ पल के खुशनुमा जिनिगी बीतल त चुपचाप चू जाए में कवन हानि?1

महुआ में टुनकाही बेसी ह। हाथ लगते कुम्हिलाए के बात एकरे प सटीक बइठेला। कांति के मलिन होखे के आशंका से कहईं आगे, कुचल जाए के डर जादे बा। सुकवारी के हेह परकाष्ठा, मिठास आ मादकता के बादो अभिजात्य वर्ग में महुआ

के ओतना आदर ना मिलल बाकिर आम लोकजीवन में एकर गहिर पैठ बनल रहल। एह ख्याति के पीछे रूप, रस, गंध, परस के सरेखता आ सबसे बढ़ के उपयोगिता के नजरिया रहल होखी।

संस्कृत में मधूक, गुडपुष्प, मधुद्रुम, वानप्रस्थ, मधुष्ठील सामान्य रूप से महुआ के पर्याय हवें। मधूलक जल में होखेवाला महुआ ह।2 महाद्रुम, मधुपुष्प, मध्वग, तीक्ष्णसार आदि महुआ के आन नाँव हवें। वर्तमान में स्थानीय आधार प हिंदीभाषी इलाका में महुआ, मधुका, मकदम, महवा, कन्नड़ में इप्पे, तमिल में कट्टू–इल्लुपई, तेलुगु में इप्पा चेट्टु, इप्पी, मधुकामु, उड़िया में मोहा, मदगी, महुला, महुआ आ मलयालम में इलुपा, इरिप्पा, नजन्नल आ अंग्रेजी में बटर ट्री कहल जाला।3 कोंच, कोंछ भा कूँच महुआ के पेड़ में खिलल कलियन के गुच्छा ह। महुआ के फर आ बीआ के कोइन, कोइना, कोइँदा, गिलौंदा भा टोरा कहल जाला। महुआ के फूल से बनल मदिरा 'माध्वी' ह, गँवई क्षेत्र में जेकरा के 'ठर्रा' के नाँव से जानल जाला। महुआ के शराब खासकर आदिवासी इलाका में एक लोकप्रिय मादक पेय ह। एकर पेंड़ भारत के उडीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, केरल, गुजरात, पश्चिम बंगाल आ तमिलनाडु में पावल जाले। कइ आदिवासी क्षेत्रन में महुआ सांस्कृतिक विरासत के अंग ह आ ओही अनुरूप तेकर सनमान ह। एकर फूल से अनेक तरह के भोजन–सामग्री तैयार होलन जवना में रोटी, ठेकुआ, पूरी, घुघरी, हलुआ, डोभरी,, लपसी, खीर, पकौड़ा, गुलगुला, लड्डू, लाटा, अँचार, स्नैक्स (हलुक नाश्ता), गुलजामुन, केक, चॉकलेट, मालपूआ, गटगट, जैम अउ ना जाने का का, सभ शामिल बाड़न। कोइन से निकले वाला तेल के आपन अलगे पहिचान ह।

महुआ के मौज में आवे के मौसम हेमंत आ बसंत ह। एह मौसम में महुआ के पेड़ से फूल आ टोरा (कोइन) प्राप्त होखेला। ई उहे बखत ह जब गोंड, धुरवा, दोरली, हलबी आदि आदिवासी समुदाय में 'इंडूम–पंडुम' (महुआ के तिवहार) मनावल जाला जवना में महुआ के पेड़ के पूजा होखेला। महुआ के पेड़ से बिनती होला कि असों महुआ आ टोरा खूब टपके जे से गाँव के जरूरत पूरा हो सके। लोगन के मन में एह पेड़ बदे अपार श्रद्धा ह।

एह पेड़ के तासीर ठंडा ह। कहल गइल बा कि महुआ (जरि, तना, पत्तई, फूल आ फर) के काढा के रोजाना सेवन से आदिमी के शरीर ताजिनिगी निरोगी रहेला। महुआ कफ,पीत आ बाई, तीनों के शान्त करे वाला आ रक्तबर्धक ह।4 महुआ से बनल मदिरा के ख्याति बहुत पुरान ह। अनेक हिंदू, जैन–बौद्ध साहित्य आ वैद्यक ग्रंथन में एकरा से बनल कई अलग–अलग प्रकार के शराब के जिकिर मिलेला। महानिर्वाण तंत्र 5.141, में महाकाली के ध्यान के एगो चित्र मनन जोग बा–

Þe?kk³xh 'kf'k'k[kjk f=u;ukj äkcj fcHkrh
ikf.kH;keHk; oj pfoy l æ d rkjfoUnfLFkrkeA
uR;Ur ijrk fuih; e/kj ek/ohde| egkdky
oh{; fodkfl rkuuojkek|k Hk t dkfy dkeAß

'मेघबरनी, माथ प चमकत चंद्र–रेख, त्रिनैनी, रक्तांबरी, जिनकर दूनों हाथ में वर आ अभय बा, ऊ काली पुरहर खिलल लाल कमल पर बइठल हई। उनकर सुंदर चेहरा बरत बा। ऊ महाकाल के निरेख रहल बाड़ी जे महुआ के सवदगर शराब के नशा में धुत्त होके उनका सामने नाच रहल बाड़े।,

माध्वी के मस्ती में के के ना डोलल? कबीर साधु रहले, संयम जेकर फितरत रहल बाकिर माध्वी के सवाद के खिंचाव आ तेकर असर से उपजल आनंद के चाहना से कहवाँ मुक्त रह पइले? ई कहीं कि अंदाज तनी अलहदा रहल। कबो खंजड़ी उठल त खटाखट, भदाभद के ताल पर माध्वी के अवतरण से लेके चषकपान आ तेकरा से आगे असर तक के अनुभव बक गइले। संगे–संगे ईहो ताल ठोक गइलें कि केहू–केहू सुखनसीबे होई जेकर कंठ एह महारस से तिरपित होई–

"गुड़ करि ग्यान ध्यान करि महुवा,
भव भाठी करि भारा।
सुषमन नारी सहज समानी
पीवै पीवनहारा।" 5

'भाव की भठ्ठी में ज्ञान–गुड़ आ ध्यान–महुआ के मिश्रण से मदिरा चुआवल गइल। सुषुम्ना नाड़ी रस चुवानेवाली नलिका सहजे में समाहित होके महारस पान करावत हई। छक के कबीर के मन मत्त बा।,

संस्कृत–प्राकृत साहित्य में वनौषधि–वर्ग के

भरपूर प्रतिनिधित्त्व मिलल बाकिर वस्तु, परिवेश आ रुचि के असर से कुलीन पादप–वर्ग के जादे तरजीह मिलल। प्रचुरता, आमजन सुलभता, गुन–धरम आदि के लेके महुआ के प्रति एक खास नजरिया रहल तब्बो ई बिरिछ हजारहन शिद्दत के बीच आपन जगह के तलाश करे से कहवाँ चूकल? जहवें मोका लागल तन के ठाढ़ भ गइल आ नीमन–नीमन के ठेंगा देखा गइल। आखिर इंदुमति के छाती से होके नीचे त्रिबली तक ससर अइला 'किंचिद्विस्रंसिदूर्वाङ्कमधूकमाला6 –जइसन सुख कव जना के नसीब में रहल होखी? 'कुमारसंभवम्' के पार्वती के केश–विन्यासो में उनुकर जूड़ा में लपेटल दूब के अंकुर में पिरोवल महुआ के कोमल द्रुम–दूर्वावता पाण्डुमधूकदाम्ना। 7 – के उल्लेख सहज प्राकृतिक सिंगार के सरबस मानक के पीछे ढकेल देता। 'गीतगोविन्द' के मानिनी राधा के गाल के उपमान में चिक्कन पांडुबरन महुआ से सरेख के भेंटल?8 प्राकृत में गाथा–साहित्य के आपन अलगे पहिचान बा। एह अमृत–काव्य के अइसन तेज आकर्षण जे अभिजात्य संस्कृत साहित्य के अपना ओरि खींच ले गइल। एह दृष्टि से 'गाथासप्तशती' के कवनों शानी नइखे। एकर पाछिल–जमीन में गँवई जिंदगी बा। सबकुछ सहज बा, जिनिगी के जथारथ से जुड़ल बा, नीमन–जबून जवन जइसन बा, तइसन बा। एहिजा तरे–तरे गुल खिला के ऊपर से भद्रजन के मुलम्मा चढ़इले रहल गवारा नइखे। साहित्य अगरचे समाज के तश्वीर ह त तेकर बारीक अंकन के काम 'गाथासप्तशती' में भइल बा। महुआ आम जिनिगी के हमसफर रहल एसे एकर मौजूदगी सगरे बा, सुख–दुख में, भाव–कुभाव में, छल–प्रपंच में, जीवनचर्या में, ग्राह्य में, अग्राह्य में, सगरे। जिनिगी के जद्दोजहद कवन–कवन दिन ना देखावे? चाकरी, तिजारत, आजीविका के तलाश आदि कइ ओजह से देशाटन, प्रवास एगो बड़ मजबूरी ह वरन् घर छोड़ घुरबिनिया कइल केकर चाहना हो सकेला? महुआ के पथार देख के बटोही के मन पाछे छुटल घरवासिन के इयाद के उद्बेग में तलफलाता त एह विडंबना के कवन ओर, कवन छोर? प्रिया के अंग से समानता रखे वाली वस्तु में प्रीति भाव के ई नायाब नमूना ह जहवाँ बटोही आपन धनी के गाल सरीखा महुआ–फूल के सूँघऽता, छूअऽता, चूमऽता, करेज प रखता। तेकर रोंआँ ठाढ़ भ गइल बा–

"आजिघ्रति स्पृशति चुम्बति स्थापयति हृदये जनितरोमाञ्च। जाया कपोलसदृशं पश्यत पथिको मधूकपुष्पम्।।"9

जीवन में अइसनो वक्त होला जब आदिमी देह से कवनो काम में मशगूल होला, क्रियाशीलता के मजबूरी ह बाकिर मन में तेकर मुख्य–परिणाम से भिन्न सहजात–परिणाम के विपरीत होखे के आशंका से मन में बिचलन पैदा होला। हिंहों कुछ–कुछ अइसने हालात बा। महुआ के फूल अधिका झर जाए से हाली–हाली चुने परत बा। एक त श्रम के दबाव, दोसरे महुआ के चुके आ उपयुक्त मिलन–थल के समाप्त होखे के अनेसा से मन अहथिर नइखे। महुआ से बिनती बा कि तनी धीरे–धीरे टपक–

þcgi"iHkkjkouferHkfexr'kk[k J.k foKfIrEkA
xknkrVfodVfudte/kd 'kuxfy";flAAß10

'ए गोदावरी तट के विकट कुंजनिवासी महुआ, ढेर–ढेर खिलल फूलन के भार से तहर शाख जमीन तक झुक आइल ह। हमार एक निहोरा बा कि फूल तनी रह–रह के टपकाव।,

मिलन–थल के भंग होखे के आशंका ईहों बा बाकिर मन मे उठ रहल प्रतिक्रिया तनी खतरनाक लागत बा जहवाँ इच्छा पूरन होखे में बिघिन बुझात आपने बंधुजन बदे अहित कामना के पुरजोर भाव परगट बा। बिननहारी के देख के दू संहतियन के बीच के बतकही से कुछ अइसने तथ्य उजागर होता–

þfu"if'pekU;lrh n%[kkykdkfu e/kd i"ikf.kA
fprk;k cU/kkfjokLFkhfu jknu'khyk lefPpukfrAAß11

'दुशील स्त्री महुआ के शेष फूल के बहुत दुख से देख–देख के रो रहलि ह आ आपन सवाँगन के चिता के फूल से हाड़ चुने के अहसास से भर के चुनत जात रहलि ह।,

एगो गाथा में परोसिनी से बतकही के बहाने कुटनी के नायक बदे कहल गइल परोक्ष कथन ह जेकर लक्ष्यार्थ ई कि अब महुआबारी में गइला के कवनो फायदा ना मिली। तेकर छनकाहा मरद रात में महुआ चुने जाहीं नइखे देत। "ऊ बुड़बक अपनहीं चल जाता" कहे के संकेत ई कि ए से घरहीं के रास्ता साफ आ निरापद भ गइल ए बात प ऊ भकचोन्हर के ध्यान कहाँ गइल?

b"k;k'khy% ifrLrL;k jk=k e/kd u nnkR;PprEkA
mfPrukR;kReuo ekrjfr_ tdLoHkko%AA12

ख्अहो मतवा! तेकर मरद एतना छनकमिजाज ह कि ओकरा के रात में महुआ बीने बहरसी जाहीं ना देवे, बाकिर ऊ बुड़बकहा खुदे चल जाला।,

महुआ के जे जवना मिजाज से देखल ओही अनुरूप एकर सरूप नजर आइल, केहू बदे महुआ जिनिगी के पेंड़ ह, केहू के एकर सर्वहारा रूप प ध्यान गइल, केहू झुँझलाहट में हरामखोर महुआ के संज्ञा से नवाज गइल। जे उम्दा मिठाई के सवाद लिहले बा, जे सामरथी बा ओकरा नजर में महुआ के का अहमियत? 'आन्हर सियार के महुआ मिठाई' वाली कहाउति में व्यंग्य के व्यक्त ध्वनि जवन होखे बाकिर एकरा पीछे छुपल बुद्धि, संपदा आदि परिलब्धि से उपजल उच्च भाव जनाइए जाला। बेचारा सियार के बदकिस्मती, जवन दैव जोगे सुलभ बा तेकरा में सवाद के बेहतर आनंद उठा लेता त ए में कूट कइला के फा मकसद? ईहे हाल 'गीदी गाय गिलौंदे खाय, दौर–दौर महुआ तर जाय' में बा बाकिर का कइल जा सकेला? लोकमन के थाह–पता लगावल तनी मोसकिल काम ह। ऊ अपने गति चली।

कुछ लोगन्ह में एक खास आदत होला, जब सहजे भरखर प्राप्त बा त समतुल प्राप्ति खातिर उनकर नजर आन जगह के तलाश करे लागी। शाइद ई बुझात होखी कि नगीचवाला त हइए बा, अगते दूर वाला प हाथ अजमावल ठीक रही। एही दुबिधा भा अउर जादे के चाहना में बइसाख के गदहा अस दूबर भइल रहिहें। ठीके कहल गइल बा कि 'घर के महुआ बिनल न जाय, महुआ बिनन पहारे जाय।' महुआ के काबिलियत प कवनो संदेह ना कइल जा सके बाकिर जगह, काल आ परिस्थिति के भेद से एके चीज मुफीद आ नुकसानदेह दूनो हो सकेला। 'गोएँढ़ खेती मेंड़े महुआ, अइसन होय त कौन रखउआ' वाली लोकोक्ति के ईहे तात्पर्य ह। काहे कि एकर पेंड़ बड़ आ छायादार होला आ एह ओजह से जवन–जवन बरबादी हो सकेला, ऊ सब झेले पड़ी।

महुआ के नीचे अनगिन नेयामत बा। सभ मन के खेला ह जवन अलग–अलग संदर्भ में अलग–अलग अनुभूति पैदा क देला। 'त्रिभंगिमा' के एक गीत में हरिवंशराय बच्चन जी 'महुआ के नीचे मोती के झरे' के प्राकृतिक क्रियाकलाप के अजगुत असर से छूट नइखीं पावत। सबकुछ छायाचित्र जइसन गतिशील बा। हँसी–खेल बा त फँसावो बा, अब ऊ जीवन के सामान्य उलझन होखे भा जीउ में फँसल कवनो आँकुस। पीर जुबान प मत आवे। मन परबस बा। जवन बा ऊ सब सपन के छुवन अस बा। दूर से जनाता, आँखि भरल बा। दिन बहुरल, जी के बात कहि द। मनबसिया पिया के मन में बस जा। जेकरा मन में पिया के बिसरन नइखे ओकरा बदे हर पल सुनहरा, सारी दुनियाँ मधुबन। फिर उपसंहार– "सब सुख पाएँ/ सुख सरसाएँ/कोई न कभी मिलकर बिछुड़े/महुआ के/महुआ के नीचे मोती झरे/महुआ के।" हिंहा मोती झरे के जथारथ महज भौतिकता तक सीमित नइखे। ई मोती के झरल बाहर बा त कहईं भीतरो, सुख में बा त दुखो में, मिलन में बा त बिछुरनो में। ए सब में एक बात सामान्य बा कि सारा वाकया महुआ के तरे बा। आखिर ई महुआ के तिलिस्म का ह?

तीरन के उपादान कम नइखन, तेकर अनुभव प्राप्ति के साधन सीमित बा। सभ इन्द्रिय आपन–आपन विषय के ओरि भागेलें। बात खाली अतिने तक रहे त बात बुझाय बाकिर बहुत कुछ अइसन होला जेकरा बारे में बूझे से जादे जूझे के परिस्थिति बन आवेला। महुआ टपकत बा, तेकर मादकता से मन मतुआइल बा, ईहो ठीक बाकिर हेह अधरतिया में बीने जाए के जाँबाजी के ओजह समुझल अतिना सहज नइखे–

Þe/kj&e/kj jl Vidi] egvk pq, vk/kh jkr
cuok Hkby erokjk] egok fcuu l[kh tkrA

'अधरतिया में महुआ के फूल टपकता आ पूरा महुआबन बउरा देवे वाली सुगंध से मदमस्त हो रहल बा। अहो सखी, अब हम महुआ बीने जात बानीं।,

समय गतिशील ह। गतिशीलता से बदलाव होला। बदलाव में कुछ छूट जाला, कुछ टूट जाला, कुछ जूट जाला। ऋतुचक्र बदलल आ हेमंत सक्रिय भ गइल। का पीछे रहि जाई, का खरक जाई आ का अँखुवा फोर के उपरा आई ई, केकरा पता? बहरहाल त नजरि के जद में महुआ बा, पतई झरले मलंग अस ठाढ़। कुछ खैरबरन पुलुई कुलबुलात बाड़ें। डाढ़ि में गुच्छा–गुच्छा कूच निकल आइल बा। महुवा त आमों से मीठ ह नू? सजन लोग घेरि अइलें। हे गुरुजन! निरभेद काहे सुतल हईंजा?13 निहितार्थ आपन–आपन।

संदर्भ सूची

1 "यदि दो घड़ियों का जीवन । कोमल वृंतो में बीते, कुछ हानि तुम्हारी है क्या, चुपचाप चू पड़े जीते।" (जयशंकर प्रसाद) 2 अमरकोश 4.28। 3 इंडिया फ्लोरा ऑनलाइन । 4 मधूकं वातपित्ते च शस्यते। चरक संहिता 27.126 । 5 कबीर, सबदी 35.3 । 6 कालिदास, रघुवंश 6.25 । 7 धूपोष्मणात्याजितमार्द्रभावं केशान्तमन्तः कुसुमं तदीयं।

पर्याक्षिपत्काचिदुदारबन्धः दूर्वावता पाण्डुमधूकदाम्ना।। – कुमार संभवम् 7.14 । 8 स्निग्धो मधूकच्छविर्गण्ड दृ गीत गोविन्द 10 । 9 गा०स० 7.39 । 10 गा०स० 2.3 । 11 गा०स० 2.4 । 12 गा०स० 2.59 । 13 एक भोजपुरी विवाहगीत 'आमो से मीठ महुइया ए बाबा' के भाव। दिनेश पाण्डेय, संचार नगर, खगौल, पटना। पिन–801105

दिनेश पाण्डेय, संचार नगर, खगौल, पटना। पिन 801105

मास्टरी के नौकरी

डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव

अब अइसन लोग के डायरी में टंकला से फायदा। तबे सोचत बानी कि डायरी के ढेर बात- घटना बहुत कुछ देला । परसों के बात ह। हरेन्दर जी झटकले अइले । चेहरा पर खुशी छिंटाइल रहे। लगे बइठते कहले 'चाचा, हमार सेलेक्शन हो गइल । मास्टरी के नौकरी मिल गइल ।'

- बधाई देके हम पूछनी चल ऽ तहार बी. ए., बी. एड. के डिग्री सवारथ भइल। नाहीं त तू तीन साल से बेकार बइठल रहल ह। जब ना तब सरकार आ व्यवस्था के गरियावत रहल ह। अब तनखाहो पूरा मिली।

-परसों हम ज्वाइन करे जात बानी चाचा । हमार नोकरिया तनी कन्फर्म हो जाए दीं। फेन देखीं इहे हरेन्दर का का करत बाड़े।

हरेन्दर मास्टरी लाइन के ढेर बात मालूम क के बइठल रहले। एह नोकरी में जे ढेर ईमानदार आ कर्तव्य के जिम्मेदारी समझे वाला बा ओकरा कम गंजन नइखे। अइसने लोग के कंधा पर हेडमास्टर चढ़ल रहेला । सांसों लेबे के फुर्सत ना देला । जे जेतने निष्ठावान बा उ ओतने दबात-पिसात बा। जे मुँहजोर बा, साहेब लोग के खुशामद करे में कवनो कोताही नइखे करत ओकरे चाँदी बा। चरन-चांपन करत रहीं, दोसरा के आँख में धूरा झोंकत रहीं आ आपन उल्लू सीधा करत रहीं ।

साल भर ले हरेन्दर नरमे - नरमें आपन काम निकलले । हेडमास्टर साहेब के बेटी के बियाह में खूब मेहनत कइले। दस दिन ले उनकरे दुआरी पर बइठल रह गइले । जेने देखीं ओन्हहीं हरेन्दर बाबू मास्टर के नाम पुकारल जात बा। इस्कूल से छुट्टी लेबे के कवनो सवाले ना रहे। जब आपन संइयां राजी त का करिहें काजी । हेडमास्टरो साहेब मने मन गदगद रहले। चउदह मास्टरन में हरेन्दरे एगो काबिल मास्टर भेंटइले । बेटी के बियाह नीमन से बीतल । इस्कूल में हरेन्दर बाबू के कवनो कागज रुके ना पावल ।

सवा - डेढ़ साल के बाद नौकरी कन्फर्म हो गइल । कवनो लइका आके हमरा से कहलस- 'इसकुलिया में हरेन्दर मास्टर लउकेले ना। कुछ दिन बाद भेंटइले त हम पूछ देहनी- का हो हरेन्दर बाबू। नोकरिया छूट गहल आ कि ताहार ट्रांस्फर हो गइल ?

हरेन्दर हँस के बोलले नौकरी काहे छुटी चाचा। अइसन उपाय कइले बानी जे रजिस्टर में नोकरियो रही, आ हम दोसरो काम धंधा करत रहेब। आज त तनखाह उठावे आइल रहनी ह। अपना जगहिया पर एगो दोसर आदमी के रख देले बानी। हर महीना उनकरा के कुछ रुपिया दे दीले। उहे किलास ले ले। हमूं खुश, उहो खुश। रउआ चिहा के का देखत बानी। इस्कूल के प्रजातंत्र में इ सब चलेला । जेतने भीतरी ढुक के झांकेब रउआ ओतने खल-बेखल के बात - बेवहार लडकी, उनकर बात सुनके हमरा त ठकुआ मार देहलस। मास्टरी पेशा में जब अइसन भ्रष्टाचार भर गइल बा त अगिला पीढ़ी कइसे सुधरी। ऊपर से इन्कवारी आबत बा त अफसर लोग के जेब गरमा दीहल जाता। बड़-बड़ नेता जब करोड़ों खा जात बाड़े त हमनी के कवन गिनती बा। जहाँ बड़े-बड़े ढोल तहाँ टिमकी के मोल ?

मुस्कुरात हरेन्दर चल गइले। देश के आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर सोचे के जिम्मा हमार रहे।

गमछा बा त का गम बा!

भगवती प्रसाद द्विवेदी

बरिस 2019 के आखिर में जब मुंहामुंही कोरोना महामारी के चरचा होखे लागल रहे,त नाक–मुंह तोपे खातिर बतौर मास्क गमछा के महातम अउरी बढ़ि गइल रहे आ प्रधानो मंत्री एकरा इस्तेमाल के सभसे मुफीद बतवले रहनीं। फेरु त गमछा भा गमछी, अंगवछा भा अंगवछी का गांव, का शहर, का घर–आंगन, का बहरा–सभत्तर अपना जरूरत के धाक जमवले रहे। का सूती,का खद्दर के,का साटन के आ का रेशमी–हरेक रूप में सभ केहू के मन मोहत आइल बा। ओहू में एकरा सूती सरूप के का कहे के! केहू के रंग–बिरंगी गमछा पसन परेला, त केहू के उज्जर बकुला के पाँख नियर। केहू के छींटदार,त केहू के चुनरी वाला। देवी माई के चढ़ावल जाएवाला चुनरी के नांव पवले गमछा के माथ प भा कान्ह प धऽके "जय माता दी" के जयकारा करे में खूब मजा आवेला। भगत लोग के रूचेला लाल–भगवा रंग ,त एगो सियासियो दल के पसंदीदा भगवा गमछा खूब भावेला। एगो दोसर दल अपना हरियर रंग के गमछा खातिर जानल जाला। उज्जर धप–धप् रंग के चारू ओरि से रंग–बिरंगी पाढ़ वाला गमछा एगो अउरी पार्टी के पहिचान ह। बंगाल, उड़ीसा, गुजरात वगैरह सूबन के ई सांस्कृतिक विरासत ह। उहवां खास मेहमान के स्वागत फूल–माला का जगहा कान्ह प गमछा धऽके कइल जाला।

किसिम–किसिम के कसीदाकारी वाला गमछा उहां के खासियत होला। कलकतिहा गमछा के त कहहीं के का! खूब बड़हन अरज के चेक के बहुरंगी सूती गमछा भोजपुरिया समाज के नवहिन के मनपसंद पहिरावा होला–धोती, गंजी आ कलकतिहा गमछा।

बहुद्देशीय गमछा के उपयोगिता जिनिगी के हरेक डेग पर लउकेला। बेशकीमती तउली में ऊ बात कहां! एगो त महंग दाम,ओहू प धोवे–सुखावे आ लपेटे में दिक्कत। एगो त करइला, दोसरे नीम पर चढ़ल! दोसरा ओरि गमछा के देखीं। जतने सस्ता,ओतने सुबिस्ता। सूतिके उठत कहीं कि एकर इस्तेमाल शुरू। हर्रे लागी ना फिटिकिरी आ रंग चोख होत जाई। फजीरे हाथ–मुंह धोके गमछा से मुंह–हाथ पोंछी। नहा–धोके मोलाएम गमछा से सउंसे देह पोंछे आ देह–धाजा के साफ–सुथरा बनावे में गमछा के अगहर योगदान होला। चाहीं त गमछिए पहिरिके नहा लीं भा कपड़ा बदलिके गमछा पहिरि लीं। गमछा के ना भिंजते देरी लागी, ना सूखते। सजि–धजिके कान्ह प गमछा धऽके कतहीं आइल–गइल भद्र मानुस के निशानी होला।

बाकिर गमछा खाली 'धराऊं सा के डाल' ना होला। राह में कड़ेर घाम भा बरखा होखे, त गमछा के कपार पर ओढ़ि लीं।

ई एगो छाता के काम करी आ मन हरियर बनवले राखी। जाड़ के मौसम में गमछा से कपार,कान,नाक,मुंह बान्हि लीं।ओह घरी ऊ गुलबंद भा मफलर के भूमिका निबाही।

गिरहत आ मजूर जब गमछा के पगरी बान्हि लेलन,त काम करेके अउरी जोश उमड़ि परेला। भोजपुरिया समाज के मेहनतकश जनता जहवां गमछा के पगरी बान्हेले,उहवें ओकर अउर लमहर रूप साफा बनि जाला। सरदार लोग के खास पहिचान पगरी से होला आ उहो त ओकरे लमहर रूप होला। लरिकिन खातिर ऊहे गमछा दुपट्टा बनि जाला। ढेर लोग त घरे–दुआरे खाली गमछिए लपेटले रहेला। भोजपुरिया मनई रूमाल ना राखे। जब कान्ह प गमछा बा,त का गम बा! मुंह पर जाब लगाईं, माथ,मुंह, नाक प गमछा बान्हीं आ खुद के धूरि–धाकर, बेमारी–हेमारी आउर वायरस से बचाईं।

गमछा हरदम जोड़े के दियानत राखेला। एही से वर–कनिया के गँठजोड़उवल होला।

तबे नू दुलहा के कान्ह प एगो बियहुती गमछा सोभेला। बियाह में जब लावा–मेराई के रसम होला, त गमछे में लावा मेरावल जाला आ लावा मेरावेवाला कनिया के भाई के ऊ गमछा सौगात का रूप में दिआ जाला।

जब गमछा डांड़ में बन्हा जाला, त ई निशानी होला मैदाने–जंग में कमर कसिके उतरे के। फेरु त जीत के सेहरा बन्हात देरी ना लागे। अगर गमछा के साथ बा,त झोरा–झक्कर के का जरूरत! गमछिए में बजार के चीजु–बतुस गठिया लीं आ कान्ह प लेके चलि दीं। गमछिए में सातू बान्हि लीं आ खेत में भा राह में जब मन करे, गमछिए में सातू सानिके खा लीं। खइला का बाद ओकरा के पानी में खंघारि दीं। फेरु त कान्हे पर गमछा सूखि जाई। खेत–बधार में नींन लागे,त गमछा बिछाके सूति जाईं। जदी कपार का तरे गुमेटिके राखि देबि,त ई तकिया बनि जाई। अगर माथ प बरिआर बोझा राखे के होखे, त गमछा के लपेटिके बीड़ा बना लीं। ई बेगर अमनख मनले हरदम सेवा–टहल खातिर तत्पर रही। ई अब रउआं पर निरभर बा कि ओह बहुद्देशीय गमछा के रउआं कवना रूप में इस्तेमाल करत बानीं।

हमरा कुण्डलिया लिखेवाला गिरिधर कवि से खास शिकायत बा कि ऊ 'लाठी में गुन बहुत है,सदा राखिए संग!' के मार्फत लाठी के त गुनगान कइलन, बाकिर गमछा के गुन के गिनावत कवनो कुण्डलिया ना लिखलन। बताईं भला, इहो कवनो बात भइल! अगर गमछा ना रहित,त आजु माथ से लेके मुंह, नाक, कान आउर गरदन बान्हे के सेहतमंद सीख कहवां से मिलित! लरिकियो लोग के त मुंह बान्हिके राह चले के हुनर इहवें से भेंटाइल होई। चोरो–बटमार त इहे तरीका अपनावत मुँह बान्हिके चोरी, बटमारी करेलन स आ धरइला पर हाजत,थाना भा कचहरी में गमछा से मुंह बन्हले मुंह चोरवावत फिरेलन स।

अगर साँच कहल जाउ, त भोजपुरियन के जान गमछिए में बसेला। एह से गिरिधर कवि से माफी मांगत हम एगो कुण्डलिया रचल आ गमछा के गुन गावल जरूरी बूझत बानीं–

गमछा में हरदम बसे,भोजपुरियन के जान,
पगरी बन्हले खेत में, मेहनत करसु किसान,
मेहनत करसु किसान, गमछिए सातू सानसु
बरखा,घाम,सीत में, छाता जइसन तानसु,
धोती आ गंजी के संग, ई लागे चमचा,
नवही कइसन अगर कान्ह ना सोभे गमछा!

सर्जना, बिस्कुट फैक्टरी रोड, मगध आईटीआई के
निकट, नासरीगंज,दानापुर,
पटना–801503 (बिहार)

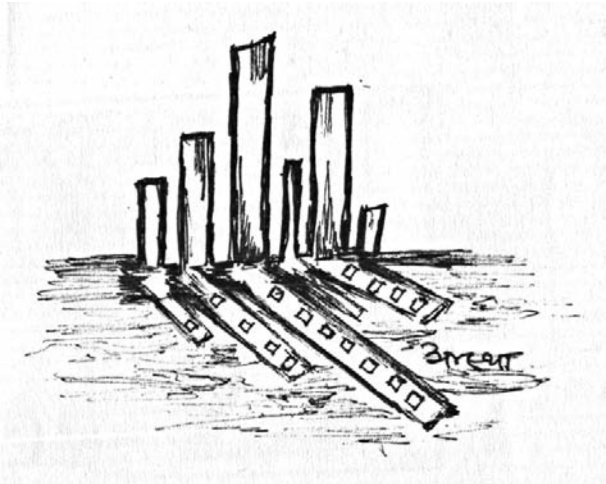

पूर्वज लोग से नेह–नाता के पर्व ह पितृपक्ष

मनोज भावुक

मर गइलें बाबा. मर गइली ईया. मर गइलें नाना. मर गइली नानी. बाबुओजी मर गइलें ... बाकिर ना मरल ओह लोग से जुड़ल संबंध. पितृपक्ष इहे बतावेला. श्राद्ध–पिंडदान आ तर्पण क के पूर्वज लोग के इहे नू बतावल जाला कि आजो ऊ लोग हमनी के परिवार के हिस्सा बा. आजो हमनी के ओह लोग के स्नेह आ आशीर्वाद के जरूरत बा. आजो ऊ लोग हमनी का जिनिगी में जीयत बा आ धड़कन में धड़कत बा.

आखिर हमनी का हईं जा के ? ओही लोग के नू परछाईं ! ओही लोग के नू प्रतिरूप ! ओही लोग के गुणसूत्र ! ओही लोग के डीएनए ! त अलगा कइसे हो सकेनी जा? ओह लोग के नाक–नक्शा, रंग–रूप, लंबाई, सुघराई, हाव–भाव हमनी में उतरल बा त कइसे कहीं कि ऊ लोग दुनिया से जाइयो के चल जाला. अरे, ऊ त हमनिये में रहेला लोग आ हमनी के बोली–भाषा, लहजा, व्यवहार आ संस्कार में अभिव्यक्त होत रहेला.

असहूँ हमनी का देश का दर्शन आ चिंतन परम्परा में मृत्यु के जीवन के खतम भइल ना मानल जाला बलुक देह के रूप परिवर्तन मानल जाला. हमनी ई मानीले कि हमनी के पितर लोग कवनो ना कवनो रूप में विद्यमान बा. एही वजह से शादी–बियाह आ अउरी अनुष्ठान में पितरो लोग के नेवतल जाला.

संत लोग कहेला कि हमनी के ईश्वर के संतान हईं जा, ईश्वर हमनी के अंदर बाड़ें तबो हमनी के ईश्वर के पूजा करेनी जा. ओही तरे हमनी के अपना पूर्वज के जामल हईं जा, ओही लोग से हमनी के देह मिलल बा, तबो हमनी के पितृपक्ष में अपना पूर्वज लोग के पूजा करेनी जा, श्राद्ध, पिंडदान आ तर्पण करेनी जा.

श्राद्ध आ श्रद्धा एकही स्रोत से निकलल बा. ओही तरह से तर्पण आ तृप्ति बा. पितर लोग खातिर श्रद्धा से कइल गइल मुक्ति–कर्म के श्राद्ध कहल जाला आ उन्हन लोग के तृप्त करे खातिर तिल मिश्रित जल अर्पित करे के क्रिया के तर्पण कहल जाला.

दरअसल श्राद्ध में श्रद्धा आ भावना ही प्रमुख बा. जवन सनातन धर्म अपना मुअला पुरखा–पुरनिया के पूजे के बात करत बा, ऊ जीयत बाप–दादा के तिरस्कार करे वाला बेटा–पतोह के कवना रूप में देखत होई, ई समझल जा सकेला. मुअले ना, अपना जीवित बुजुर्गन के प्रति भी आदर, सत्कार आ सम्मान के पवित्र भाव रखे के चाहीं ना त ई श्राद्ध, तर्पण आ पिंडदान एगो रस्म–अदायगी भर कहाई.

पितृपक्ष के दौरान पितर लोग के श्राद्ध कइल जाला. एह से सुख–समृद्धि के आशीर्वाद मिलेला आ पितर लोग संतुष्ट होलें.

एह दुनिया में कुछ लोग अइसनों बा जे ई कुल्ही ना मानेला. ऊ लोग कहेला कि मुक्ति के नाम पर हजारो साल से ई जवन कर्मकांड होता, ऊ पाखंड ह. अज्ञानता वश ई सब होता. मुअला के बाद कहानी सब खतम हो जाला. श्राद्ध में अर्पित कइल जाये वाला सम्पति, भोजन, कपड़ा, बिस्तर ओह लोग के कवनो कामे ना आवेला. हँ, पंडा–पुजारी के दोकानदारी जरूर चल जाला. धर्म आ विज्ञान, विश्वास आ अविश्वास, तर्क आ आस्था के बीच आजुओ बहुत लोग झूल रहल बा. कुछ लोग के एह सब में विश्वास नइखे लेकिन ' लोगवा का कही ' के डरे ई सब कर रहल बा.

हालांकि अब त विज्ञानों कुछ हद तक माने लागल बा कि आत्मा भा चेतना वस्तुतः एगो ऊर्जा ह आ ऊर्जा के त कबो नाश होला ना, बस रूपांतरण होला. त देह के नष्ट भइला के बादो आत्मा अपना संचित बुद्धि मत्ता के साथ एह सृष्टि में मौजूद रहेला. हमनी के ओकरा के देख भा महसूस ना कर पावेनी सन, ई अलग बात बा.

अइसन विषयन के गहन अध्येता, एगो चिंतक, अन्वेषक, लेखक आ फिल्मकार राय यशेन्द्र प्रसाद के कहनाम बा कि सनातन संस्कृति के तेरह दिन के श्राद्ध परंपरा के वैज्ञानिक महत्व बा, जवना के आज लोग अज्ञानता के कारण छोड़त चल जाता. ... आ 4 दिन के शॉर्ट–कट अपना के घोर अनर्थ कर रहल बा. मृत्यु के बाद सूक्ष्म–शरीर के मानस –देह (चेलबीव–चसेंउ) बनल रहेला, सभ इंद्री, मन, बुद्धि, सोच, स्मृति, मोह, चाह, इच्छा, तृष्णा के साथ. शरीर के पाँच कोष (संलमते) –– अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय आ आनंदमय––– में से मृत्यु के समय खाली अन्नमय कोष ही छूट जाला जे सबसे बाहरी कोष (संलमत) होला. ई सोचल बिलकुल गलत बा कि मृत्यु में आत्मा मुक्त हो जाले. मृत्यु के अर्थ मुक्ति नइखे. आत्मा के बाकी शरीर जस के तस रहेला. अपना कर्मफल के अनुसार ओकर पुनर्जन्म होला.

पुराणन में कइगो कथा पितृपक्ष के लेके प्रचलित बाटे. रामकथा में कहीं–कहीं श्री रामचंद्र जी द्वारा श्री दशरथ जी महाराज आ जटायु के गोदावरी नदी तट पर तिलांजलि देबे के उल्लेख मिलेला आ भरत जी द्वारा दशरथ जी महाराज खातिर दशगात्र विधान के तुलसीदास कत श्रामचरितमानसश में उल्लेख बा –ष्भरत कीन्हि दशगात्र विधाना.

लोक प्रसिद्ध कथा के मुताबिक जब लंका से रावण–विजय के बाद भगवान श्री रामचंद्र जी सीता मैया के संगे अयोध्या लवटत रहनीं त गया के एगो पर्वत पर विश्राम खातिर रुकल रहनीं. ओहीजा उहां के पिता दशरथ जी महाराज के हाथ पहाड़ के भीतर से निकलत लउकल आ ई ध्वनि भइल के ष हे पुत्र! तू हमार गया जी के एह पवित्र भूमि पर पिंडदान कर दे ताकि हमरा माया–मोह आ अवगुन–अपराध से पूरा तरे मुक्ति मिल जाव आ हम बैकुण्ठवासी हो जाईं.ष मान्यता बा कि प्रभु श्री रामचंद्र गया में दशरथ जी खातिर पिंडदान करके अपना पूर्वज सभे के श्रद्धा निवेदित कइले रहनीं. हिन्दू ध र्मावलंबियन के ई विश्वास बा कि गया जी में पिण्डदान आ श्राद्ध–पूजन से उनकरा पूर्वजन के सगरी भौतिक पाप–ताप कट जाला आ ऊ लोग सीधे बैकुण्ठवासी हो जालें.

पितृपक्ष भावनात्मक रूप से पितर से जोड़ले रहेला

अब रउरा पितृपक्ष मानी भा मत मानीं, ई त साँच बा कि हमनी के अपना पितर लोग से भावना के स्तर पर जुड़ल रहेनी जा. कुछ लोग के सपनों में ऊ लोग आवत रहेला. जन्म–पुनर्जन्म के लेके बहुत सारा कथो–कहानी बा. बहुत सारा साहित्य आ गीत–गजल–कवितो बा. जीवन के मरम समझावत तरह–तरह के राग वाला फिल्मी गीतो बा.

जिनिगियो त एगो रागे नू ह! हमार एगो दोहा बा –

जिनिगी एगो राग ह, खुल के गाईं गीत.

टूट जाय कब का पता, साँसन के संगीत

त भाई हो, पितृपक्ष चल रहल बा. पितर लोग के संगे गाय, कुत्ता आ कउआ के भोजन दियाइल ह. कउआ उचरत बा. हमार आपन एगो शेर इयाद आवत बा दृ

उचरे लागल हमरो छान्ही काग, ए बाबा

लागत बा कि हमरो जागी भाग, ए बाबा

मनोज कुमार सिंह, फ्लैट - 3017ए टावर-17,
महागुन माइवुड्स, ग्रेटर नोएडा वेस्ट, गौतमबुद्ध नगर, उ०प्र०

एगो पुरान आपुसी संवाद करत लोकगजल (1997)

आनन्द 'संधिदूत'

सभे बड़ियारा एगो हमहीं अबर जी
जूझे में सँकोची धकिआवे में लचर जी

हमसे सजोर बलु रोगवो क किरवा
लउकेला नाहीं तबो केतना असर जी

सन्त कहें माथ केश हटले ठहर से
जौन सुघराई भइल गन्दगी के घर जी

बन्हुआ मवेशी बीच हम बानीं छुटुआ
सब पूछे चरन में कहाँ राउर घर जी

बने के त बनऽतानीं हमहूँ मोहबती
जानऽतानी हमीं अभी केतना कसर जी

हाथ होत एतना कड़ेर हम रोकतीं
रीती छीती होत बा गरीब क कवर जी

सुख में जे बाटे ओके सुखले समझलीं
दुख में जे बाटे ओके बूझले हों तर जी

पेशगी पइसवा प पैरबी जरूरी बा
मुअहूँ के चाहीं जदी तनिकी जहर जी

टिकठी उठावे जोग भले न हो सभ्यता
लाश का परीक्षण में बाटे पुरहर जी

सन्धिदूत कुल्ही नीक एतने खराब बा
अनकर सुख देखि काहें आवे जर जी

अशोक द्विवेदी

केहू बड़ियारा नाहीं केहू ना अबर जी
सोचले में बाटे अभी कवनो कसर जी

जुझले जोतइले के नाँव हवे जिनिगी
जुझे वाला मनई के केकरा से डर जी

संत शैतान कहीं, भोगी भगवान कहीं
जिउवे बनवले बा सब देहिं घर जी

हम ना मवेशी हईं बन्हुआ भा पोसुआ
हमरा के हाँकी जिन एहर-ओहर जी

जौले मिलल नइखे तबे ले नवल बा
मोकवा मिलत देई सभके रगर जी

दुइए गो रोटिया के बाँटि-चुटि खइनीं
सोचनी ना मिली अब एकहीं कवर जी

झुठहूँ निनासे के, बिदोरी मुँह फेरि-फेरि
बहुते खराब ह बउरकी नजर जी

हमके लखाइ के अकास अउर तरई
कले-कले देत बानी पँखियो कतर जी

सोरि ले उखारीं ना त जामि जाई फेरु से
छोडीं जिन ओकरा में तनिको कसर जी

चलला के देईं कुछ चिन्ह भा सबूत अब
चलीं जिन जेने-तेने लदर-फदर जी

चुपे-चुप रहि के खिलवनी बहुत गुल
सोझ-साफ देई अब असली खबर जी

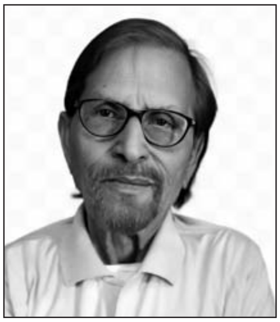

चन्द्रकान्त

1) चइत क चननियाँ

अँगना छटकि छितिराइ गइली रामा
चइत क चननियाँ

दूधवा नहाइ गइले खेत-खरिहनवाँ
देखि सुघरइया जुड़इलें परनवाँ
देखते चनरमा धधाइ गइलीं रामा
चइत क चननियाँ

बाग-बगइचा चढ़ल मधुमसवा
वनवाँ में गह-गह फूललें परसवा
सभकर मनवाँ लुभाइ गइलीं रामा
चइत क चननियाँ।

चढ़लें फसलिया पे सोनवाँ क पनियाँ
बिहसे किसनवाँ देखिके किसनियाँ
सुख क सनेसवा सुनाइ गइलीं रामा
चइत क चननियाँ

आधी-आधी रतिया के बोले कोइलिया
रहि-रहि सेजिया चिहुँकि उठे गोरिया
काहें बिरहिनियाँ बनाइ गइलीं रामा
चइत क चननियाँ

अँजुरी में चान लेइ हँसेला अकसवा
झूमि- झूमि बँसुरी बजावे लागल बँसवा
ननदी के नाच नचाइ गइलीं रामा
चइत क चननियाँ

2) चननियाँ क फूल झरे

भींजय रात भर सइँचल सपनवाँ
चननियाँ क फूल झरै
अँजोरिया क फूल झरै

टूटि के अकसवा से फूल
छटकि छितिराय गइल
कुहुकि- कुहुकि के कोइलिया
कि अगिया लगाय गइल
भींजै रात भर सेजिया कँगनवाँ
नयनवाँ से नीर झरै
अँजोरिया क फूल झरै
कच्ची कइनियाँ ई नेहिया
कि टूटे नाहीं नई-नई जाय
केरवा क पतिया ई हियरा
कि मोर रहि-रहि बिहराय
भींजय रातभर मन के अंगनवाँ
कि सुधि परिजतवा झरै
अँजोरिया क फूल झरै ।

सी-14 / 160 - बी/8, सोनिया, वाराणसी-10

मुंजहना वाली

प्रेमशीला शुक्ल

ए कथा में दू परिवार बा। एक परिवार मुंजहना गाँव में रहे, दूसरका सोनबरसा में। दूनूं गाँव का बीचे पाँच–दस गाँव अउरी होई। केदार के परिवार मुंजहना में रहत रहे, ओंकार के सोनबरसा में। ए दूनूं परिवार के जोड़े वाला रहलीी सुध ाा– केदार के बेटी, ओंकार के पतोह। बिआह भइला का बाद सुधा सोनबरसा में मुंजहना वाली कहाए लगली, मुंजहना में सोनबरसा वाली। केदार अपना माई–बाप के अकेल संतान रहलन। गाँव के लोग कहेला कि दू–चार पुस्त से केदार का परिवार में एकलौते संतान चलल आवऽता। ई जइसे ओह परिवार के पुस्तैनी बात होखे। जवन नया बात केदार का साथे भइल, ऊ ई कि जबे जब केदार दसे बरिस के रहलन, उनुका पिता के स्वर्गवास हो गइल। ओघरी केदार के पिता के उमिर तीस बरिस रहल होई। केहू का जानकारी नइखे कि अइसन ओ परिवार में कब भइल रहे। महीनो–दू–महीना तक एक बात पर गाँव के लोग आँसू बहावत रहल, केहू का कर सकत रहे। सब रो गा के अपना–अपना जिनिगी में अझुराइल बाकी केदार के परिवार के जिनिगी त अस अझुराइल कि ना दिन बीते ना नात। परिवार में केदार के इया–बाबा आ माई रहे लोग। कवनो तरह से अपना के दुःख के सहेज के ई लोग केदार के पालन–पोषण में लागल लोग। केदार के पालन–पोषण बहुत दुलार–प्यार का साथे होत रहे बाकी दुई बरिस बाद समय फेर बज्जर गिरवलस। छह महीना के अन्तर से केदार के इया–बाबा चल बसल लोग। अकेल केदार के माई केदार के लिहले जिनिगी के राह पर आगे बढ़ली।

केदार के माई केदार के कवनो कमी महसूस ना होखे दिहली। खइला–पियला से ले के पढ़ला–लिखला तक–हर तरह के इन्तजाम केदार के माई बेआ खातिर करे। गाँव के स्कूल से केदार बारहवीं तक के पढाई अच्छा नंबर से पास क लिहलें। आगे के पढ़ाई खारित शहर जाए के रहे। केदार के माई बेटा के आगे पढ़ावे के तइयार रहली बाकी केदार खुद मना क दिहलें। माई के अकेल छोड़के शहर गइला खातिर केदार तइयार ना गइलें। माई समझावे के कोसिस कइली, नोकरी

– चाकरी के सपना देखवली, केदार ना मनलें। कहलें, “गाँवे रहब। बाप–दादा के दिहल माटी बा न, ओहिके सइहारब–सम्हारब, जिनिगी निबुकि जाई।”

माई चुपा गइली।

केदार खेती–बारी में लगलें।

अपना परिवार के संस्कार केदार में जीयत रहे। जेतने शिक्षा उनुका मिलल रहे ओसे संस्कार में परिष्कारे भइल रहे। उनुका सोच में खुलापन रहे, समय के समझ

रहे। उनुका रहन–सहन में, बात–व्यवहार में ए सब के झलक साफ–साफ मिले। केदार जब बियाह जोग भइलें, माई बिआह क दिहली। नया दुलहिन के आवते घर रोसनगर हो गइल।

माई कहें, "लछिमी घर में पग डरले बाड़ी, अब हमरी घर के भाग संवरि जाई।

सांचो केदार के घर के भाग सँवरि गइल। केदार के दुलहिन सब ऊँच–नीच समझे वाली रहली। घर के जिम्मेदारी ऊ ओढ़ि–पहिर लिहली। केदार क जिनिगी में रस के सोता फूट पड़ल। भगवान केदार के दुलहिन के अंचरा में दू फूल डरलें। पहिले बेटा, ओकरा दू बरिस बाद बेटी। केदार के माई बेटा के नाम रखली विजय आ बेटी के सुधा। दूनूँ लइके उनुकी आँख के दू पुतरी, दुनूँ के लालन–पालन खूब सौख से। लइका–लइकी में फरक त ओघर में कबो ना भइल। जो केहू आस–पडोस के लोग इयाद दिया दे कि सुधा लइकी हई, विजय लइका हवें, एक अइसन दुनूं जने कइसे हो सकेलें त केदार के दुलहिन कहें, "दुनूं का जनम में पीरा भइल, एगो पीरा से दूसरका बेपीरा से त ना जनमल तब दू तरह काहे? हमार दुनूं संतान हवें, बस। का लइका, का लइकी?"

सुनुके केदार खुश हो जास। कहें, "हमार दुलहिन समझदार हई।" कहवइया मुँह अइसन मुँह लिहले रहि जाए।

केदार आगे जोड़ें, "हमनका लइका–लइकी में कवनो भेद ना कइल जाई। सुधा के ओइसे पढावल लिखावल जाई जइसे विजय के, हँ न, विजय के अम्मा, ठीक बात न?"

"एकदम ठीक। रउरो हमरे मन के बात कहनीं।" विजय के अम्मा खुश होके कहें।

केदार देखत रहलें, जुग–जमाना में बदलाव आ रहल बा। धीरे–धीरे लइकियन के पढ़ावे खातिर सब जागरूक हो रहल बा। गाँ के लइकी पढ़े जाताड़ी सन। अपने गाँव में सरकारी प्राइमरी बालिका विद्यालय खुल गइल बा। पुरनका इंटर कालेज बटले बा। सुधा के इंटर तक पढ़ला में कवनो झंझट नइखे। आगे के समय अइला पर देखल जाई। सब गुनत–बिचारत केदार अपना गृहस्थी के गाड़ी आगे बढ़ावत रहलें। छोटे बेंवत में उनुकर परिवार खुशहाल रहे। दिन कइसे बीतत गइल, पते ना चलल। विजय इण्टर पास के लिहलें, सुधा हाई स्कूल। विजय आगे के पढ़ाई करे शहर चलि गइलें, सुधा पुरनके स्कूल में 11वीं में पढ़े लगली। बेटा–बेटी दुनूं फस्ट डिवीजन पास होखे लोग। केदार ए बात से बहुत खुश रहें। सन्तान के आगे बढल भला केकरा ना सोहाई? बेटा–बेटी के सुन्दर भविष्य के सोचके केदार अपना भाग के सराहें, जवन अपने ना क पवलें ऊ संतान से पूरा भइला के सपना देखें। सपना से जगवली उनुकर माई, "सुधा सेयान भइली, पढ़वला का आगहूं कुछु सोच ताड़?"

"आंऽ, का कहताडू?" माई के बात सुनके केदार हड़बड़ा गइलन।

"बेटी के बाप हव। खाली पढ़वले से काम चली? बिआहो–दान करेके बा नऽ," माई बात साफ कइली।

"हूँ।" कहिके केदार चुपा गइलें।

सुधा सेयान हो गइली, कब? कुछे साल पहिले के त सुधा के जनम ह, अबे हाल–हाल तक ऊ फराक पहिनले खेलत–कूदत रहली ह, अब्बो महतारी के अँचरा तर लुकात रहेली, सुधा सेयान हो गइली?

केदार बात अपनी दुलहिन आगे रखलन।

"अम्मा जी ठीके त कहऽतानी। माई–बाप का आपन संतान हरदम लइके लागेला। सुधा के बिआह के बात हमन का सोचे के चाहीं। बाकी अबहिन अइसनो कवनो जल्दी नइखे। सुधा इण्टर क लें तब बिआह कइल जाई। हम अम्मा जी से बात के लेब।" दुलहिन केदार के तोख दिहली।

सुधा इंटरो फस्ट डिवीजन पास हो गइली।

अब बिआह से पहिले केदार का सामने सुधा के पढ़ाई के समस्या रहे। कॉलेज दूसरा गाँवे में रहे। माई सुधा के पढ़े खातिर दूसरा गाँवे जाए देबे के राजी ना रहली। कॉलेज के प्रिन्सिपल से बातचीत क के तय भइल कि सुधा के नाम कॉलेज में चलल करी आ ऊ घरहीं पढ़ल करिहें। खाली इम्तहान देबे का बेर कॉलेज जइहें।

सुधा के बिआह खातिर केदार रिश्तेदारी में दू–चार जगह चर्चा कइलें आ बर खोजल चालू कइलें। अबहिन से ऊ सोचत रहलें कि उनुकर बेटी सुन्दर बा, पढ़ल–लिखल बा, ओकर बिआह खोजले में उनुका दिक्कत ना होई। बाकी जइसे–जइसे ऊ ए काम में

आगे बढ़त गइलें, उनुका बुझाए लागल के ई काम आसान नइखे। कहीं घर मिले त बर ना, बर मिले त घर ना। अीपन मिलावल अलग समस्या आ सबसे ऊपर दहेज। लगन खुले आ खतम हो जाए, सुधा के बिआह तय ना हो पावे।

आस–पडोस कहे, “केदार का खोजऽताड़ें?”

केदार सोचें, “का खोजऽतानी, बस अपना बेटी जोग दामाद।”

“अउरी पढ़ावें, बेटी के कलट्टर बनइहें न?”

“ई कवनो पाप ह का?”

केदार सुनिके, गुनिके केदार चुप।

कबो मन में बुझाए, बेटी के पढ़ावल गलती हो गइल। कबो मन करे, बिआह के बारे में समाज के रीति–रिवाज के बदले के चाहीं। बेटी के बिआह खोजत–खोजत केदार के जूता खिया गइल। कहीं बात आगे बढे त दहेज पर आके रूक जाए। के केतना मांगि दी कवनो ठिकाना ना। आखिर एगो गिरहस्त केतना रूपया बचा सकेला। केदार का आपन सब कइल–धइल उल्टा लागे। उहो बेटा–बेटी के खाइल–पहिरल काटि के, नेवता–हकारी छोड़ि के, पढ़ाई–लिखाई बन्द क के सबका अइसन रहितन त का जानि कुछ बचल रहत। अब त सुधा एम.ए.आई में पहुँच गइली। टोला–मुहल्ला भीतरे–भीतरे ताना मारता कि पढते में सुधा अधबूढ़ अइसने मन आ दिमाग लेके एक दिन केदार ओंकार का दुआरी पहुँचले।

सोनबरसा के ओंकार चार भाई रहलें। बहिन रहली तीन गो। ओंकार के बाप बेचन कम बेंवत के आदमी रहलें। खेत रहे थोर परिवार रहे ढेर। दूसरा–दूसरा के खेत बंटाई लेके जोते–बोबें त सालभर के खर्ची के इन्तजाम होखे। ई रहे कि सवांगी के जोर रहे, सबके लिहले बेचन खेत में दिन–रात एक कइलें रहें। लइको मेहनती रहलें सन। बस तीसरा नंबर के ओंकार तनी ढील रहलें। उनुका यार दोस्त में बइठि के तास फेटल ढेर नीक लागे। थोडे देर कुदार चलावें त बइठि के सुस्ताए लागें। बढ़िया खाना, बढ़िया पहिरना उनुकर सवख रहे। ई सब ओ परिवार में कइसे चलित? एसे अक्सर उनुका चलते परिवार में दांजा–हिस्की, डाँट–फटकार भी हो जाए। ऊ आजिज रहलें परिवार से, परिवार आजिज रहे उनका से। सत्तरह बरिस के होत–होत ओंकार बिना बतवले घर छोड़िके निकल गइलें। बाप–महतारी रोवल–गावल अउरी का कर सकत रहल, संतोस क लिहस।

तीन साल बाद ओंकार घर भर के कपड़ा आ फल–मिठाई लेके बम्बई से घरे लवटलें। देखिके परिवार खुश भइल। ओंकार जब घर से निकललें एगारह में पढ़त रहलें। पढ़ाई एतने रहि गइल, पइसा के आवग शुरू हो गइल। जिनिगी आगे बढ़ल। ओंकार बीबी–बच्चा वाला आदमी भइलन। तीन लइकन से उनुकर घर गुलजार भइल। बम्बई से गाँवें आइल–गइल उनुकर बनल रहल।

ओंकार के गाँवें अइला के खबर केदार का अपना एगो साथी से मिलल। दुनूं जने सुधा के बिआह खातिर ओंकार कीहाँ आइल लोग। दुआर पर पहुँचते उहाँ के समचा आ स्वागत–सरकार देखि के केदार का लागल कि ए बेर ऊ सही जगह पहुँच गइल बाड़न। केदार के घर–परिवार आ सुधा के पढ़ाई के बारे में जानिके ओंकार का इतमिनान भइल तब ऊ आपन बात रखलन– “देखीं सभे, हमरा बाप–दादा के दीहल जजाद नइखे, अपना पहुँचा से कमाइल दू–चार पइसा बा। घरे से बम्बई गइनी त झोपड़–पट्टी में रही आ टीशन पर केस केला बेंचीं। आज हमरा तीनों लइकन के आपन–आपन दूकान बा? जमीन खरीद के मकान बनवा लेले बानी। सब अमला–फइला से रहेला, कवनो बात के कमी नइखे।”

केदार सोचत रहलें, “बढिया बा, बेटी शहर में रही, सब सुख–सुविधा मिली।” ओंकार आगे बढ़लन, “हमरा इहाँ रोज चार आदमी जातऽ, चार आदमी आवतऽ। हमके बेटा के बिआह बम्बई में नइखे करे के, अपने ओर करेके बा। दिक्कत ई बा कि जे आवऽ ओकर लइकी दस चाहे बारह पास बा, हमके पतोह चाहीं पोस्टग्रेजुएट। हमार दुनूं पतोह पोस्टग्रेजुएट हई सन आ संस्कार अइसन कि सबके जगहे–जगहे परोसल थरिया पहुँच जाला आ अंचवला का बाद उठि जाला। जबसे पतोह अइली सन हमनी का आपन बंडी–जंघिया तक नइखी जा धोवेले। हम भगवान से मनाइलें कि हमार छोटकीओ पतोह अइसने आवे।”

केदार सहज ना रह पवलें।

“आ सुनीं, इहो बता दीं, हम अपना तीनों लइकन के

इंटरे तक पढ़वले बानी। का होई पढ़ा के जी? नोकरी मिले के नइखे। डिग्री से पेट भरी का? हम देखतानी लइका लोगन के डिग्री बक्सा में बन्द बा आ ऊ लोग कलम छोड़ के हाथे में खुरपी–कुदार उठा लेले बा आ ना त तास के पत्ता फेटतऽ। एसे बढ़िया जेतना दिन पढ़े में लगाई ओतना दिन में रोजगार चाल पकड़ ली।" केदार आसमान से गिरलें। बाकी उनुकर साथी पूछ बइठलें, "त पतोह पोस्टग्रेजुएट काहें?"

"ठीक पुछनीं। एसे कि हमार अगिला पीढ़ी बिगड़े न। हमार पतोह के कमाई नइखे खाएके। हमार घर भरल बा, कबनो कमी नइखे। हमरा अपनी बड़की–मंझली पतोह अइसन घर सम्हारे वाली पतोह चाहीं।"

"आ दहेज?"

"दहेज का करी जी? हमरा कवनो कमी बा? देब त अच्छा, ना देब त ओहू से अच्छा।"

केदार आ उनुकर साथी हँसे लागल लोग।

"सोच–समझ लीं। घर में राय–बात क लीं। बेटी राउर एम.ए. में बा त पढ़ाई चले दीं। हमरा इहाँ गवना होला। गवना तक ओकर पढ़ाई पूरा हो जाई।" केदार का घर में बिआह के लेके एक किसिम के उदासी हरदम पसरल रहे। सोनबरसा से केदार का लवटते घर में हलचल होखे लागल। सब बात सुनके जान के परिवार में जेतना मुड़ी–ओतने मत। विजय एकदम विरोध में रहलें। "ई कवन बिआह? लइकी एम.ए. में पढ़त होखे, लइका इंटर पास। साल–दू–साल रूक जा लोग, हम कमाए लागब तब बिआह होई।" अजय के बिचार रहे।

माई कहें, "बूढ़ करबऽ लोगन का? अइसन बिआह मिलल बा, धन–समपत्ति बा, सहर में रहे के बा, सुधा राज करिहें।"

"दोसरो देखल जाए।" केदार के मनवाँ कहे।

केदार के दुलहिन कबो बेटी के मुँह देखें, कबो भावी सोचें। का लिखल बा बेटी के लिलार में?

बहुत सोचत–गुनत दुलहिन केदार से पूछली, "का जी, लइका कइसन बा? नीरोग, निरब्यसनी बा न? देह–धाजा से कइसन बा?

"ए कुल दिसाईं कवनो कमी नइखे। बस कमी जवन बा पढ़ाई के बा।" केदार कहलें। "सुनीं, माई–बाप संतान के जनम के भागी होला, करम के नाहीं। भगवान के नाम लेके आगे बढ़ीं। सबका सब चीज ना मिलेला। लछिमी आ सुरसती एक साथे ना रहेली। लइका में कवनो ऐब नइखे, देखनउक बा, पइसा वाला बा। का चाहीं?" दुलहिन केदार के समुझावे के कोसिस कइली।

"तनी, सुधा के मन ले ल।" कहत केदार चुपा गइलें। "अम्मा तूँ ठीक सोचताड़ू।" सुधा कहली

सोनबरसा से बारात आइल त मुंजहना में गरद उठि गइल। पुरनका हाथी–घोड़ा, नवका चारपहिया–दुपहिया–सब बारात में रहे, उहो एगो दूगो ना, लाइन के लाइन। केदारो दान–दहेज आ आव–भगत में कुछु उठा ना रखलें। द्वारपूजा में दुलहा आ अंगना में अंगना में जल देख के गाँव के लोग कहे लागल, "देरी त भइल बाकी सुधा के घर–बर दुनूँ बढ़िया मिलल।" केदार के दुलहिन खुश रहली, उनुकर तपस्या पूरा भइल। अपनी अम्मा के खुश देख के सुधा का आत्मा में बहुत संतोख भइल।

बिआह होत–होत भिनसार हो गइल। अब कोहबर गइले के रसम होत रहे। पट्टीदारी के लइकी लोग दुलहा से कुछ सुने के फरमाइस करत दुआर छेंकले रहल लोग। फरमाइस होते दुलहा बाबू ना आव देखलें ना ताव, एगो फूहर कविता सुना दिहलें। लइकी लोग लजा गइल। दुलहा का पीछे खड़ा सुधा काँप गइली। लइकी लोग दरवाजा से हटल। दुलहा–दुलहिन पासा खेले बइठल लोग। भऊजी खेलावत रहली। तीन बेर दुलहा तीर बेर जीत गइल रहलें। भऊजी तीसरका बेर सुधा के हाथ के पास लेआके पास डाल दिहली अबकी बेर हमार ननद जीतिहें। दुलहा सुधा का हाथ का पास से पासा अइसे झपटलें कि सुधा के अंगुठी सुधा के अंगुरी में धंस गइल। ए बेर "दुलहवा बड़ा बरजोर बा' कहत लइकी लोग हँसि दिहल। सुधा चुपचाप दरद अँगेज गइली। बिआह के तीसरे साल में सुधा के गवना भइल। बिदाई सीधे बम्बई। रेलगाड़ी से दादर रेलवे स्टेशन, फिर टैक्सी से रजवाड़ी। बम्बई आके सुधा बहुत अचरज में रहली।

रजवाड़ी में आपन दुमंजिला घर रहे। अगल–बगल के दोसर घर कवनो दुमंजिल, कवनो एक मंजिला। ई कवन बम्बई ह! ना ऊँच–ऊँच बिल्डिंग ना कवनो चमक दमका जवन लउकस तवन गाड़ी में से लउकल। रजवाड़ी ना गाँव लागे ना शहर, बम्बई त तनिको ना।

आ ससुराल के घर! एगो अजायबघर। आज के जमाना के हर चीज मौजूद बाकी सब फैंकल–पबारल, धूल में

लोटारल। कहाँ ई अँड़सा–मँड़सा वाला बड़ गुमसाइन घर, कहाँ मुंजहना के छोट, फइलल–फइलल सुरूज के रोसनी में नहाइल घर। ए घर के शौचालय देखके सुधा कुफुत में रहली। दुर्गन्ध भरल, पीयर मेघा अस ओकर रूप देखके सुधा का लागे, एसे नीक गाँव के खेत, उनुकी अपनी घर के शौचालय के त बाते दूसर। सुधा सोचली, हम सब सँवार लेब।

ए घर के रहनो–सहन अजीब रहे। केहू चउका पर चाहे डाइनिंग टेबुल पर खाए ना बइठे सबके जगहे–जगह थरिया पहुँचावल जाए आ अंचवल थरिया उठावल जाए। केहू आपन अण्डरवियर–बंडी तक ना धोवे। जे छोट रहे, ऊ सब के सेवा करे, दूसर केहू हाथ बँटा दे। सुघर सुधा देखत रहली, उनुकर छोटकी जेठानी का उपर सब जिम्मेदारी बा, अब सुधा के बारी बा। सुधा सोचली, हम सब सम्हार लेब। सुधा सँवार लिहली।

सुधा सम्हार लिहली।

सुधा कलट्टर ना बनली लायक पतोह बनली। ससुर का हिसाब से घर सम्हारे वाली पतोह। रजवाड़ी से सोनबरसा तक मुंजहना वाली के धन्नि–घन्नि हो गइल।

सुधा सब सम्हार–सँवार लिहली बाकी लाख कोसिस का बावजूदो आपन एकान्त ना संवार पवली।

सुधा के दुलहा जब–जब सुधा का पास बइठें, उनुकर एके बात रहे– केला आ कार्बाइड, केतना केला पाकल, केतना ना, नफा भइल कि नुकसान। देश–दुनिया के कवनो बात, आपन चाहे सुधा के सुख–दुःख के कवनो चरचा ऊ सुधा से ना करे। सुधा सब सुनत जाएं, बोले के कवनो मौका चाहे जरूरत ना आवे। सुधा खातिर ई सब ढेर पीड़ा के कारण ना रहे। ढेर पीड़ा के बलुक मर्मान्तक पीड़ा के कारण रहे, हर तरह के जीत के अपना मुट्ठी में कैद करे के उनुकर जिद। सुधा का बेर–बेर कोहबर के पासा खेलल, अपना दुलहा के झपट के पासा हथिआवल याद आवे। ओ समय सुधा एके परिहास समझली, अब जान गइली कि ई उनुकर सुभाव ह – हर बात में जीत, हर हाल में जीत। सुधा हारे खातिर तइयार रहली, हार सुधा के लालसा रहे। बाकी इहां जीत बहुत भयानक रहे, मगरमच्छ के जबड़ा रहे, जवन सुधा नाम के जीव के सोगहग लील गइल चाहत रहे। ना, सुधा ई ना होखे दीहें।

सुधा अपना ससुर से कहली, “बाबूजी हम पढ़ब। पी.एचडी. करब, यूनिवर्सिटी जाइब।”

“आँ?” ससुर अकचका गइलें।

सुधा बात दोहरवली।

“कवनो बात के कमी बा? कवनो तकलीफ बा?”

“ना, आगे पढ़ेके बा।”

“घर कइसे सम्हरी?”

“हम सब सम्हारब।”

“ठीक से सोच लऽ।” ससुर कइलें।

सुधा के दुलहा सुनलें।

“ई ना होई, ई कइसे होई?” कहत तमकि के उठलें।

सुधा शान्ति से जवाब दिहली, “हम ससुरजी से पूछ लेले बानी।”

थोड़े दिन में बात सोनबरसा तक फइल गइल– “मुंजहना वाली अपना दुलहा का कहला में नइखी।

बात मुंजहनो पहुँचल।

माई–बाप दुखी हो गइल। ए लोग का मन में सवाल उठे लागल

“इहे सुने खातिर बेटी के पढ़ावल गइल?”

जवाब विजय से मिलल– “सुधा गलत का कइली? पढ़ल कवनो गलत काम हऽ? सुधा सही रास्ता चुनली। एमें ‘कहला में ना रहला’ के कवनो बाते नइखे।”

– प्रेमशीला शुक्ल

फोन– 9450925784

ईमेल– premshila.shukla@gmail.com

प्रदक्षिणा, दक्षिणी उमानगर, सी.सी. रोड,
देवरिया–274001 (उ0प्र0)

आखिर कबले जगिहें हलकू

मीनाधर पाठक

"सोचऽतानी कि मन्दिर का लगे जवन खेत बा, ओहिमें उरिद बो दीं। दू तीन महीना ले खेत खाली रही, ए से नीक बा कि कुछ दलहन हो जाई।" तरकारी में रोटी बोरत कहलन भृगुनाथ पंडित। सुनि के बेना डोलावत उनकर मलिकाइन के हाथ रुकि गइल।

"गोहूँ में बड़ा नाफा हो गइल कि रउवा दलिहन बोवे के सोचतानी?" कहि के ऊ फेरू से बेना डोलावे लगली।

"त का करीं? खेत खाली छोड़ दीं?" गभुवइलें भृगुनाथ पंडित।

"बोइए के का होई? करजा–पताई से रुपया पइसा लगवला के बादो मनो–दू–मन उरिद ना निकले त बोवले से का फायदा?"

"पहिलहीं से रउवा भाखे लगनीं त अब का कहीं हम?" भृगुनाथ पंडित आखिरी कवर मुँह में डालि के थरिया सरका के उठि गइलें।

बेना एक ओर ध के मलिकाइन चुपचाप थरिया उठा के चापाकल लगे ध दिहली आ कल चला के उनकर हाथ धोवावे लगली।

"हम त एह से कहनीं हँ कि खेत गाँव के गोंयड़े बा। दू महीना की रखवारी से कम–से–कम घर में उपयोग करे खातिर दाल त हो जाई? बजार से कीने के त ना पड़ी? आ जबले धान रोपे के समय आई तबले उरिद कटा जाई।"

"जवन ठीक लागे ऊ करीं, बाकिर जब सगरो खेत में गोहूँ बो के उम्मीद भर उपज ना भइल त चार–पाँच कट्ठा में केतना उरिद हो जाई कि रउवा बजारे से ना कीने के पड़ी?" तनी रिसिया के अलगनी से अँगौछा खींचि के उनकी ओर बढ़ावत कहली मलिकाइन। भृगुनाथ चुपचाप हाथ–मुँह पोंछि के अँगौछा कान्हे पर ध के दुवारे नीबी की ओर निकल गइलन।

"एगो समय रहे कि खेत में फसल बो के अपनी बेंवत के हिसाब से खाद–पानी दे के भरपूर अनाज हो जात रहे। दलहन, तेलहन, मकई, मडुवा, बजरा, कोदो, का ना बोवात रहे? जवन मन करे तवन उपजा लिहल जात रहे। बाढ़ि आ सूखा ना पड़े त ए कुल से खेत से खरिहान आ खरिहान से दुआर भर जात रहे। ओही पर चदरा बिछा–बिछा सुतल जात रहे। बिकइला के बादो डेहरी–बखार भरल रहत रहे। भिच्छू–भिखारी के डलिया भर–भर दियात रहे। सोहनी–रोपनी, कटनी–ओसवनी खातिर मजूरन के बनिहारिओ ओही अनाज में से दियात रहे। कबो बेटी बहिन आवें त बोरा भर उनहूँ के लदा जात रहे। कबो हाथे पर पइसा कौड़ी ना होखे त दू–चार बोरा बेंच के तियना–तरकारी किनात रहे। बिआहे–गवने खातिर हल्लुक–पातर गहना–गुरिया बनवा के धरा जात रहे। बाबूजी दू–दू गो बहिन के खेतिए की बदौलत न बिअहलें? चाहे हमरो बिआह त ओहिसे भइल। के रहे कमासुत? बाकिर अब केहू का घरे खेती के

बदौलत चूल्हि नइखे बरत। कबो समय पर बरखा नइखे होत त कबो कुसमय बरिस जाता।

ऊपर से बड़हन बेध नीलगाइ। सबके घर के मर्द–मानुस बहरा कमाए ना जासु त रोटी के मोहाल हो जाता। जे बड़का खेतिहर बा ओकरो घरे अब पहिले जइसन अनाज नइखे बिकात बाकिर हाथी केतनो दुबराई तबो हाथिए रही। सगरो मार माध्यम वर्ग के खेतिहर पर पड़ल बा। छोट खेतिहर कुछो क लेता। केहू चिमनी पर त केहू ई–रेक्सा कीनि के चलावे लागल। केहू शहर में जा के तरकारी के ठेला लगावे लागल त केहू कहीं छोट–मोट नोकरी करे लागल। सगरो बेध हमनिए के बा। एक बेरा उपास हो जाई बाकिर गिर के ई कुल कार ना होई।

सोचते रहलें भृगुनाथ पंडित तबले बिजली आ गइल आ ओसारा में पंखा चले लागल। ऊ नीबी तरे से उठि के ओसारा में आ के चौकी पर ओठंग गइले बाकिर मन के द्वंद्व ना खतम भइल।

एकर बहिन...! जबसे ई सरकार आइल बिया तबसे ढेर बिपति बढ़ि गइल बा। नाहीं त पहिले एगो–दूगो नीलगाइ जइसे आवेंसन ओइसे गाँव भर ढोल पीटि–पाटि के एकनी के लखेद दे बाकिर अब ई कुल के सरकारी मनाही हो गइल बा आ एकनी के परिवार एतना बढ़ि गइल बा कि जेने से निकल जाताड़ीसन ओने के खेत साफे चाटि जाताड़ीसन। केतना सिकाइत भइल बाकिर अबले कवनो सुनवाई ना भइल। बरियार लोग आपन खेत तार से घेर लिहले बा बाकिर सबके बस के बाति नइखे ई। गाँव में पलायन त बहुत पहिले से शुरू हो गइल रहल ह बाकिर अब ई नीलगाइ जीए नइखीसन देत। अब त गाँव में अउरियो केहू नइखे रहि गइल। का करीं...! जब एही में रहे के बा, त हाथ–गोड़ डोलावे के पड़बे करी। उरिद त बोवाई। बाद में जवन होई तवन देखल जाई।

सोचि के एगो लमहर साँस भीतर कइलन भृगुनाथ पंडित आ आँखि पर अँगौछा ध के करवट ले लिहलन।

"ए उठीं जल्दी। का जाने काहें हल्ला होता? तनी देखीं त !" मलिकाइन के झपिलवले भृगुनाथ पंडित हउहा के उठलें आ गमछा कान्हे पर ध के सड़क पर आ गइलें। मलिकाइनों मूड़ी पर अँचरा सम्हारत उनका पीछे आ के ठाढ़ हो गइली।

"गाँव के भीतर से लोग लाठी डंडा लिहले बहरा बगइचा की ओर भागल जात रहे। मलिकाइन ओहिजा ठाढ़ रहि गइली बाकिर ऊ तनी आगे बढ़ि गइले।

"का रे मोतिया! का भइल रे?"

"राम बेलसवा के निलगाइ खानि दिहले बिया।" कहत मोतिया दउड़त चलि गइल। आपन अँगौछा कमर में बान्हि के उहो मोतिया के पाछे दउड़ि गइलन।

तबे हरिअरी लिहले एगो मेहरारू ओने से चलि आवत रहे। ओकरा के देखि के पुछली मलिकाइन, "का भइल हो ! काहें हल्ला भइल बा ?"

"रामबेलास के लिलगाइ खानि दिहले बिया। जानीं जे एकदम घाही क देले बिया।"

"आइहो दादा !" मलिकाइन करेजा पर हाथ ध लिहली। आँखि बहरा निकल आइल।

"हँ, अब देखीं कि का होला।" कहत ऊ मेहरारू चलि गइली। मलिकाइनों आ के दोगहा में बइठ गइली।

'' साँझि हो गइल रहे। नीम के पेड़ पर बसेरा करे वाली चिरईं सब लवटि आइल रहली। ओन्हनि के चहचहाइल आजु मलिकाइन के तनिको नीक ना लागत रहे। अबहिन ले भृगुनाथ पंडित लवटल ना रहलें। रामबेलास के लेके उनकर मन में आउर–बाउर खेयाल आवत रहे। उनका मन पड़त रहे कि जब ऊ कनिया बनि के ए घर में उतरली तब रामबेलास के माई उनका के बुकुवा लगवले रहली। तब रामबेलास छोट रहलें आ उनके बाबूजी ए घर के हरवाही करत रहलें। का जाने कबसे उनके परिवार ए घर से जुड़ल रहे। जबसे ऊ हाँड़ी छुवली तब से दूनू समय खेलावन के खाना उहे बनावें। उनसे पहिले उनके सास बनावत रहली। दिन के खाना उनके खेते पर पहुँचावल जा आ राति के खाना खेलावन ब आ के ले जाँसु। जब–जब घर में कुछो नीमन बने तब–तब रामबेलास के बोला के दे दिहल जात रहे। तीज तियुहार अलगे से। बड़ी साध से खेलावन बेटा के बिआह कइलें बाकिर दस बरिस ले जब कवनो सन्तान ना जनमल त उनके दूसर बिआह भइल आ नवकी से रामबेलास के दू गो बेटा भइलें। दूनू मेहरारू लोग के आँखी के पुतरी। जबसे खेलावन मुवलें तबसे रामबेलास हर जोते लगलें।

उनके बड़का बेटा चिमनी पर काम करेला आ छोटका पढ़े जाला। ओही रामबेलास के आजु निलगाइ घाही क दिहले रहे। ऊ सोचते रहली कि भृगुनाथ पंडित ओसारा में गोड़ धइलें।

"काहें अन्हारे बइठल बानीं?" कहते–कहत ऊ

देवाल पर लागल स्विच दबा दिहलें। ओसारा में अँजोर हो गइल।

"का भइल हो! का करत रहलें रामबेलास ? कइसे मार दिहलस गाई?" ढेर घाव लागि गइल बा का हो!" एक बेर में कइगो बाति पूछि लिहली ऊ।

"खेते में पहरा देत रहलें तबले ओकनी के झुण्ड आ गइल। ऊ लाठी ले के चहेटे लगलें आ ऊ कुल धावा बोल दिहलीसन। बड़ी घाव लागि गइल बा।"

"हे भगवान् जी !"

"परधान जी के जीप में लादि के देउरिया सदर ले गइल बा लोग। अब देखीं का होता?"

"हे संझा माई! रामबेलास के रच्छा करब।" ऊपर देखि के हाथ जोड़ली मलिकाइन।

दुइए दिन बाद खबर आ गइल कि रामबेलास सिधार गइलन। रोहा–रोहट भइल। माटी ले के कलेक्टर निवास पर नीलगाइ के समस्या के ले के धरना भइल। प्रशासन के लोग समझा बुझा के ओहिजा अंतिम क्रियाकर्म करा दिहल लोग। पाख ना बीतल आ सब लोगबाग अपने अपने काम में लाग गइल। कुछ ना बदलल। बस रामबेलास कहानी हो गइलें।

''मलिकाइन खूब मना कइली बाकिर भृगुनाथ पंडित मंदिर लगे खेत तइयार करा के उरिद बोवा दिहलें त ऊ चुपा गइली। कुछुवे दिन बाद खेत में उरिद अँखुवा गइल। मेड़ पर ठाड़ भृगुनाथ के हियरा जुड़ा गइल बाकिर अब ओकर ढेर रखवारी करे के पड़ी काहें से कि ए समय ढेर खेत खलिहर रहे आ जइसे इ खेत हरियर होई, देखि के उ धावा बोलिहेंसन। मन में ई कुल सोचते–सोचत ऊ घरे की ओर चल दिहलें।

''भृगुनाथ पंडित आपन डेरा मन्दिर पर जमा लिहले रहलें। मंदिर का लगे यज्ञशाला में उनकर खटिया बिछौना धइल रहत रहे। डिब्बा में किरासन तेल आ मलिकाइन के पुरान लुग्गा। लाठी हमेशा उनका हाथे में रहत रहे। समय पर घरे जा के उ नहा–खा आवें। दिन भर मंदिर पर लाठी लिहले बइठल रहें आ राति के खटिया बिछा के मच्छरदानी लगा के सुति रहें। धीरे–धीरे महीना बीति गइल।

जवन हरियर खेत भइल रहे! देखि के भृगुनाथ पंडित के मन भी हरियर हो गइल रहे। उरिद के बेल हवा के साथे लहर–लहर लफार मारत रहे। अब त दिन भर भृगुनाथ पंडित खेते में रहें। पूरे खेत में घूमि–घूमि घास उखाड़ल करें। उनके खेत देखि के लोग पछतात रहे कि हमहूँ बो दिहले रहितीं त मन–दू–मन त होइये जाइत बाकिर अब बरखा के महीनाभर रहि गइल रहे। एसे उरिद के सपना छोड़ के बेहन लगावे के तैयारी में रहे लोग।'

गाँव भर में भृगुनाथ पंडित के खेत के चर्चा रहे। दू बेर खेत में पानी लागि गइल रहे आ अब जवन पोढ़–पोढ़ छीमी हो गइल रहे।

साँझि के बेरा रहे। पच्छिम के आकाश में जवन ललाई चढ़ल रहे। दिन भर आगि उगिल– उगिल के सूरज भगवान् ए बेरा जुड़ाइल रहलें। झहर–झहर बयारि बहत रहे। दिनभर एने–ओने दानापानी खोजत चिरईं लवटि के बगइचा में हल्ला कइले रहलीसन बाकिर ए बेरा ओकनी के हल्ला, कान में मिसिरी घोलत रहे। देखते–देखत दिन बिदा हो गइल। बिछोह सबसे दुखदायी होला। भले काल्हि फेरू से सुरुज भगवान उदय होइहें बाकिर अजु बिदा हो गइलें।

आकाश में तनिएसा ललाई बचल रहे। मेंड़ पर से उठि गइलें भृगुनाथ पंडित आ घर की ओर चल दिहलें। का जाने उनका मन में का आइल कि मंदिर ले आ के एक बेर घूमि के खेते की ओर देखलें। देखते मुँह बा दिहलें। एक, दू, तीन, चार, पाँच, एक के पाछे एक चँवर की ओर से निलगाइ के पूरा जत्था चलि आवत रहे। उनके धड़कन बढ़ि गइल। ऊ भागि के यज्ञशाला से आपन लाठी उठा लिहलन बाकिर एतना बड़हन झुण्ड से लाठी से ऊ ना निपटि सकत रहलें। उनके रामबेलास मन पड़ि गइले। ऊ झट दे घर से ले आइल मलिकाइन के पुरान साड़ी फाड़ि के किरासन तेल में भिंजा लिहलन आ अपनी लाठी पर बान्हि के माचिस छुवा दिहलन। तबले आसमान के ललाई एकदम खतम हो गइल रहे आ अन्हार होखे लागल रहे। कपड़ा फरफरा के जरे लागल। लुकारी पारत भृगुनाथ पंडित कण्ठ फारि के चिल्लात दउड़लें ओकनी की ओर। अबले निलगाइ के झुण्ड खेत की लगे ले आ गइल रहे बाकिर एकदम से आगि देख के उलटे गोड़ चँवर की ओर भागल। जे देखल ऊहे हल्ला करत भागल उनका पाछे। भृगुनाथ पंडित लामें ले चहेंटत चलि गइलें। कुछु लोग उनके पकड़ि के आगि बुतावल आ रीसि से हाँफत–काँपत भृगुनाथ के मंदिर पर ले आ के कल चला के पानी पिआवल।

"चलीं महाराज! घरे चलीं। अब ए बेरा ना अइहेंसन।"

लोग की समझवले हारल–थाकल भृगुनाथ पंडित

चुपचाप उठि के घर की ओर चल दिहलन।'

"का भइल हे!" मलिकाइन उनके हालत देखि के घबड़ा गइली।

"निलगाइ आ गइलीसन, अब एगो दाना न छोड़िहेंसन।"

सुनि के उनके करेजा धक् से हो गइल बाकिर अपना के संभाल के कहली ऊ, "सब भोले बाबा पर छोड़ि दीं आ चलि के हाथ–गोड़ धोईं।"

'"सुनीं! अब हम खाए खातिर घरे ना आएब। हमार खाना–पानी रउवा मंदिर पर

भेजवा देब।" परेशान हाल में कहलें भृगुनाथ पंडित ।

"एतना हेरान होखे के गरज नइखे। भगवान् जी के जवन मंजूर होई, उ होई।"

"रउवा का जानीं कि आजु क साल से लागते भर निकलता। समाज में कइसे आपन सम्मान बचल बा ई हमहीं जनतानी। नाहीं त बड़–बड़ घर से लोग अब निकल के चपरासीगीरी ले करे लागल बाकिर हमसे ना होई ई कुल। बीया से ले के खाद, पानी, दवाई में बेसी रुपया लाग गइल। अब जे लागतो भर उरिद ना भइल त ई रूपया के कर्जा कइसे भराई?"

"सब जनतानी। पहिलहीं मना कइनीं हम बाकिर रउवा ना मननीं।"

"अब त बो दिहलेबानी। जइसे भी बचे, बचावे के पड़ी।" कहि के भृगुनाथ पंडित लाठी लिहले उठि के चल दिहलें।

"ए खा के जायीं हे! राति में उपास न कइल जाला।" कहते रहि गइली मलिकाइन आ भृगुनाथ पंडित निकल गइलन।

''एकहक दिन बीतत रहे। दिनभर भृगुनाथ पंडित यज्ञशाला में बइठि के खेत की ओर आँखि लगवलें रहे। जैसे गाइन के देखें, चाहेंट लें बाकिर राति में आँखी लागि जा आ ओतने में खेत में उकुल मुँह लगादेंसन।

आधा खेत बचल रहे। भृगुनाथ पंडित सोचत रहलें कि लागत भर कइसो ऊ बचा लें त आपन करजा से उरिन हो जाँ। अब आपन खटिया उठा के ऊ खेते में बिछा लिहलन। दिन भर यज्ञशाला में आ राति भर खेते में पहरा देबे लगलन कि खेते में उनके देखि के शायद नीलगाइ ना आवेंसन।

ओदिने राति में मलिकाइन खाना ले के अइली त भृगुनाथ पंडित के खेते में देखली। खाना यज्ञशाला में ध के ऊ भागल खेते में आ गइली।

"ई का हे! कवनो कीरा छू दे चाहें निलगइए कुल चहलि दें, त का होई ? चलीं उठीं। ढेर भइल रखवारी। सब संकर जी के हवाले क दीं। उठीं, घरे चलीं।" मलिकाइन उनकी काँख में हाथ लगा दिहली बाकिर भृगुनाथ पंडित टस–से–मस ना भइलन।

"रउवा घरे जायीं।" कहलन ऊ।

"रउवा के लिहले बिना ना जाएब हम।"

"हठ मति करीं।"

"हठ त रउवा करतानीं जी।"

मलिकाइन कहते रहि गइली बाकिर भृगुनाथ पंडित ना मनलें। उनके खाना खिया के पानी ध के ऊ घरे चलि गइली।

''

सुबह के नौ बजल होई। मलिकाइन थरिया में खाना परोसि के दूध के डिब्बा में पानी भर के ओकर ढक्कन लगावत रहली तब्बे एगो लइका भागल आइल, "काकी जी ! जल्दी चलीं। खेत निलगाइ चरताड़ी सन आ बाबा जी सुतल बानीं। उठते नइखीं।

मलिकाइन के साँस टंगा गइल। सब छोड़ के मंदिर की ओर भगली। बीस–पच्चीस गो नीलगाइ खेत में आराम से चबर–चबर उरिद चरत रहलीसन आ भृगुनाथ पंडित चदरा तानि के आराम से सुतल रहलन। भीड़ चुपचाप तमासा देखत रहे। काहेंसे कि भगवला पर कहीं रामबेलास के गति भृगुनाथ पंडित के ना हो जाउ। मलिकाइन मन्दिर भीतर शंकर जी के आगे मूड़ी पटकत रहली।

"हे, भोले नाथ ! नीलगाइ खेत चरें त चरें बाकिर हमरी पंडित जी के रच्छा करब।

केचुली

✍ बिम्मी कुँवर सिंह

वर्मा जी अपना दूनो बेटी जया आ माया के अपना अवकात से बेसी बढ़िया पढ़ाई–लिखाई करवले रहले। जया एम.ए, बीएड रहली आ घर से एक कोस दूर अगरेजी इसकूल में टेमपररी मास्टरनी रहली। माया पालिटेक्निक के पढ़ाई करत रहली। वर्मा जी आ उनकर पत्नी अपना दूनो बेटी के जीउ जान से मानत रहुअन जा।

जया बेटी सयान भइल बाड़ी आ बिआह जोहे के बा एकर खबर वर्मा जी आ उनकर मलकिनी के उनकरा आस पड़ोस, हित मीत आ नाता रिश्तेदार लोगन से लागल रहे। पढ़ल–लिखल नोकरिहा लइका के जोहाई चालू भ गइल।

वर्मा जी के साढ़ू के जाने सुने वाला प्रतापगढ़ के सिन्हा जी के बेटा सुरेश संगे बात तय हो गइल रहे। लइका दू भाई आ एगो बहिन रहली। सुरेश सबसे बड़ रहलन।

बिआह से हफ्ता भर पहिले वर्मा जी आ उनकर मेहरारू जया बेटी के घर–परिवार–ससुरार के कायदा–कानून समुझावत रहे लोग ।

“बेटी हो एक्के बात इयाद रखिहऽ कि सास के माई आ ससुर जी के पिता मनिहऽ। छोट देवर–ननद के आपन भाई–बहिन लेखा मान–दुलार करिहऽ”

वर्माइन बेटी के समुझवली ।

‘हम तहरा परवरिस में कवनो कोर–कसर बाकी नइखी छोड़ले बेटी, सरकारी अस्पताल में मामूली छोटा बाबू हई, तवना प भी तू दूनो बहिन के सिक्षा आ संस्कार देबे में कवनो कमी नइखी कइले। हरमेसा अपना पापा के ऐह बात के खेयाल रखिह, कवनो ऊंच–नीच ना होखे बेटी’

वर्मा जी आपन अनुभवी मंत्र बेटी के नइहर के दुलारल मन–मिजाज प लेवर देले।

जया चुपचाप मां–बाप के बात के सुनके ओह बात प अमल करे के मने–मन ठान लेली। उनकरा पूरा भरोसा रहे जे प्रेम बेवहार से उ मय घर के दिल जीत लीहें।

ससुरा अइला के बाद जया के एक हफ्ता त नीके–नीक बीतल, बाकिर जब मय हीत नात चल गइले लोग तब सास–ससुर आ ननद–देवर अपना खाल में से बहरी आ गइल लोग।

भोरे पाँच से छ ना बजल कि सास के प्रवचन चालू हो जात रहे

‘ए कनिया इ कवन रहन ह हो, किरिन फूटला से पहिले उठ जाइल करा त?’

कनिया मने–मन सोचस कि नया–नया बिआह भइल बा त दूल्हा से बोलत बतिआवत त भोर हो जा ता, त कब सूती आ कब उठी!!

कनिका के नइहरे से आदत रहे मुँह धोवते चाह पीए के, ना त खराई मार देत रहे।

एक दिन ननद मेहना मरली ‘ए भाई भउजी के बेड टी के आदत बा त काहे ना नइहर से पान–छ दर्जन कप ले ले अइली ह?’

जया के करेजा इ कुल बात सुन के दुखा जात रहे, बाकिर उ खाली मुस्कियात रहस सभकरा बात प। इहे सोचस कि एकदिन सब ठीक हो जाई।

देवर त भउजी के आलमारी आ बेग के आपन समुझत रहलन , बिना पूछले ओछले जब ना तब सौ–पचास निकाल के आपन काम क लेस। जब जया देख लेस त बता देस 'भउजी किताब फोटोस्टेट करावे के बा त भउजी संघतियन के चाट समोसा खिआवे के बा!'

ऊपर से भउजी के मजाके मजाक में जहर जइसन बात कह देस

'ए भउजी राउर बाबूजी मय समान त देले बाड़े बाकिर हमनी से पूछ के ना नू कीनलन ह , उनकर पसंद नू एकदम बन–बनिहार लेखा बा, हमार मय संघतिया हँसे लन स'

जया भीतरे भीतर अँइठा के रह जास । एकदिन जब उ ननद आ देवर के बात सुरेश से कहली त सुरेश बहिन के त कुछ ना बोलले बाकिर छोट भाई के तनि कड़ा होके कहले कि 'बड़ भउजाई से असहीं बात कइल जाला?'

ओ घरी त मय घर चुपचाप रहे बाकिर अगिला दिने सुरेश के आफिस जाते सभ केहू काँव–काँव करे लागल। ननद लबरी कहे त सास घर फोड़नी । जया अपना कोठारी में जा के फफक–फफक के रोअली। बाकिर अपना माई–बाबू से कुछ ना कहली ।

टभकत घाव के जर से इलाज ना होखला प उ नासूर बन जाला। गते–गते लोगन के ताना से जया के प्रेम बेवहार से घर स्वरग बन जाला, अइसन जुमला अब बेमानी लागे लागल रहे ।

उ सुरेश से कवनो बात कहस त उ उल्टे उखड़ जास कि 'तहरा के सभ केहू खराबे लागी त हम का करी!! काहे तहार बाबूजी बिआह क देले ह?, रहतू निकहा अपना माई के आँचर में।'

दू दिन अलम से बीते ना कि फेर तीसरा दिन कवनो तीत घटना से जया के मन बेमार लेखा हो जात रहे। उ सोचे लागस कि असहीं घुट–घुट के जिनगी कइसे कटी। रात के बेरा सुरेश के दू बोल प्रेम के सुन के उ फेर मोम लेखा पिघिल जास।

असही ढिमिलात–सम्हरत जिनगी चलत रहें।

ओह दिन दुपरिया के जया के ननद कालेज से अइली त चार–पाँच गो सहेली के भी संगे ले ले आइल रहली। जया के कोठारी के केवाड़ी लगे ठाड़ हो के सास आदेश देली कि आटा के हलुआ खूब घीउ डाल के बना द, मय छउँड़ी भुखाइले आइल बाड़ी सन।

जया अपना माई संगे फोन प बतिआवत रहली, उ भीतरे से कहली ठीक बा माँ जी अभिए बना देत बानी। फोन प बतिआवे में उनकरा समय के धेयान न रहल आ जब उस रसोई में भागल गइली हलुआ बनावे त सास के बर–बरौनी चालू रहे। उ हाली–हाली हलुआ बना के ट्रे में सजा–बजा के बइठका में गइली त ओजुग कवनो सहेली ना रहली जा। आ उनकर ननद खिसिन भूत बनल बहरी तिकवत रहली।

जया पूछली कि 'कहाँ बाड़ी लोग राउर सहेली?, हम हलुआ बनवनी ह उहें लोग खातिर।' त ननद झनक के उठली आ जया के हाथ से हलुआ के ट्रे छीन के बहरी बीग देली ।

जया खिसिया के ननद से बोलली 'इ कवन रहन ह जी, ऐतना मेहनत से चीज समान लगा के हलुआ बनवनी ह आ रउरा बीग देनी?'

जया के ननद उनकरा मुँह के सोझा अंगुरी नचावत बोलली 'हम बीगीं चाहे खाई तोरा से का मतलब, तोरा बाप के पइसा लागल बा?'

जया भी ओही वेग में जबाब दिहली

'ना जी हमरा बाप के त पइसा नइखे लागल बाकिर हमार जाँगर त लागल नू बा! आ पइसा त बड़–बड़ जना खरिच देत होइहें बाकिर जाँगर केहू खटावे तब नू हम जानीं!'

जया के बात अभी छूटल ना कि सास गरजे लगली 'ना हो दादा इ वरमवा के छउड़ी आइल बिआ तबे से त हमनी के खाए क पानी होता, ना त पहिले हमनी के उपासे सूतत रहनी जा।'

काठ छिले त होखे चिकना, आ बात छिले त होखे रुखड़ा...ऐजुग भी बात के बखिया उघारल जात रहें।

तू–तू, मैं–मैं चलते रहे कि सुरेश आ उनकर पिताजी आफिस से आ गइल रहले आ घर के अखाड़ा बनल देख के उ दूनो बेकत के भक्क मार देहलस।

बहरी हलुआ आ भीतरी बुद्ध भगवान के माटी के दू फुट ऊंचा मूरती धरती प टूट के छितराइल रहे। बेटा आ सवांग के देखते सास आपन तिरिया चरितर वाला तरकस से सबसे खतरनाक बाण फेकली 'हमरा बुचिया के तहार मेहरारू उरेब–उरेब लांछन लगावत बाड़ी, बबुआ हो अइसे कब ले चली?'

ननद रानी अपना भइया आ पापा के देख के लोर ग्रंथियन के बेलगाम छोड़ देले रहली।

सास ननद के सारथी झूठ, चिचियात रहें आ जया के सच्चाई माई बेटी के असुअन के जमनोत्री में बिला गइल रहे। आफिस के थकल–हारल सुरेश अउँजाइल जया के लगे जा के उनकरा पीठ प तीन–चार थप्पड़ लगा देलन आ अपना कोठरी में चल गइले।

ससुर भी अपना पत्नी आ बेटी से शांत रहे के बोल के हाथ मुह धोवे खातिर गुसलखाना में चल गइले। बइठका के सोफा प अवाक बन के बइठल जया के कुछ बुझात ना रहे कि उ अब का करस। उनकर शिक्षा–दीक्षा, पढाई–लिखाई मय उनकरा के मुँह बिरावत रहे।

ओह समय जया के उत्पाती दिमाग परकास के बेग से भी बेसी चाल से चलत रहे, उ कबो किरासन तेल आ दियासलाई के देखस त कबो हरहरात गंगा जी के बारे में सोचस।

मन करेड़ क के उ मय बात अपना माँ पापा के बतवली आ उनकरा उमेद भी रहे कि पिताजी आत्याचार सहे के खिलाफ होखिहे। बाकिर इ का !! इ त उल्टा भइल। माँ पापा त 'कम खा, गम खा'के नसीहत दे के फोन रख दिहल लोग।

जया के बेर–बेर अपना स्वाभिमान से समझौता करे के पड़त रहे। कुछ दिन बाद उ अपना बहिन माया से कहली कि ससुरा में हर बेजाही प हमरे के निहुरे के पड़ेला, ऐह से पहिले कि हमार अख्तियार ओलर जाए, कुछ जुगत लगाव हो बहिन। माया अपना दीदी के दरद बूझ गइली।

जया के जिनगी फेर पँवरत बूड़त चले लागल। लमहर अमावस आ छन भर के अँजोरिया रहे। सुरेश कवनो हाल प अपना परिवार के बाउर करार क के उ लोग से अलग रहे के तइयार ना रहले। जया नधाइल बैल लेखा उनकरा संगे घिसिरात रहली।

एह बीच में जया दू तीन बेर अपना नइहर चार–पाँच दिन खातिर गइल रहली। उनकरा इ महसूस भइल कि माँ पापा डेराइल बा लोग कि जया बेटी कही कवनो अइसन बात ना कह देस भा कर देस जेकर असर माया के भावी भबिस्य प पड़े। जया माई बाबूजी के दुविधा खूब निमना से बूझ गइल रहली।

ससुरा में अब उ कोसिस करत रहली कि बेसी बात के तूले ना दिहल जाओ। जया के सास जब उनकरा माई–बाबू के ताना मारस त उ इहें सोच के कि समधिन–समधिन जाने बूझे, चुप रहस।

एकदिन सांझ के चाय पिअला के बाद जया के ससुर अखबार पढ़ते पढ़त पूछले कि 'ऐ जया उ अस्पताल के सुपरिटेंडेंट डाक्टर जस्टिन गुरिया किहाँ से तू लोग के खान पिआन त नइखे नू?'

जया खूब चहक के बोलली 'ना पिताजी उ लोग त बहुत बढ़िया स्वभाव के हवें, जब गुरिया चाची केक–ओक बनावत रहली त हमनी खूब चाव से खात रहनी जा, उ लोग संगे त हम आ हमार बहिन क बेर चर्च भी गइल

बानी जा।'

ससुर अखबार पढ़ल बीचे में छोड़ के चश्मा के भीतरी से मुँह बवले जया के देखे लगले आ बड़ा जरलाठ मुँह क के बोलले 'धत्त तेरी, स्याला बड़ा फालतू घर में सुरेश के बिआह क देनी हो, एकनी के त कवनो धरमे–करम नइखे ?'

जया के बुझाइल जे उनकरा के केहू गहिर खाही में बीग देले होखे, आँख के आगे अन्हेरिया छा गइल।

उ अपना के सम्हारते बोलली 'पिताजी राउर सोच केतना पिछड़ा बा? हई भोर से रात ले रउरा अखबार झूठहू नू पढ़े नी?'

ससुर डपटले 'भाग हमरा सोंझा से!'

सास चिचिआए लगली
'बाप हो बाप, अब त इ ससुर से मुँह चलइहें ! ना ना, इ त ना चली। आवस सुरेश त आजे फैसला हो के रही।'

सुरेशो ओह दिन आफिस से जल्दिए आ गइल रहुअन मय माजरा उनकर माई चिचिआ के बता देली। सुरेश बउराइल आन्ही लेखा अपना कोठारी में गइले आ जया के झोटा ध के खिसिरावत अपना बाबूजी के गोड़ प पटक देले, आ दहाड़ते बोलले

'माफी माँग बाबूजी से, ना त आजे तोरा के नइहर के रस्ता धरा देम। जया बेइज्जती के दरद से छपिटा उठली। बाकिर ओह घरी उनकरा कुछ ना बुझाइल उ रोआसे मुँहे दूनो हाथ जोड़ के अपना ससुर से माफी मांग लेली, आ अपना के सरिहावत कोठारी में जा के दमभर कुहक–कुहक के रोवली।,

रोवत–रोवत रात बीतल बाकिर केहू खाए खातिर भी पूछे ना आइल उ धरती प बइठ के रोवत ओजुगे सूत गइल रहली। भोरे पिआस से तड़फड़ात उ उठली, आ चुहानी में जाके बासिए मुँहे दू तीन गिलास पानी हकर–हकर पी गइली।

ओकरा बाद नहा धो के उ चुपचाप रसोई बनवली। घर के सब केहू के लागल कि कनिया डेरा के बिना कहले मय काम करे लागल।

दू दिन बाद जया के बाबूजी जीप लेके आ गइले आ जया के अपना संगे ले गइले। पनरह दिन नइहर में रहला के बाद जया के ले के सुरेश प्रतापगढ़ आ गइले।

पनरह दिन बादे केन्द्रीय विद्यालय से अध्यापिका खातिर इन्टरव्यू के कागज आ गइल रहें। आ महीना बीतते केन्द्रीय विद्यालय, इलाहाबाद से पोस्टिंग के लेटर भी आ गइल। इ मय काज बहुते चुपचाप भइल। घर के कवनो बेकत के कानो–कान खबर ना लागल। सुरेश के आफिस गइला के बाद माया टैक्सी लेके आ गइल रहली।

दुपहरिया के दूनो बहिन आपन जरूरी समान अटैची में सरिहार के इलाहाबाद खातिर निकल गइल लोग। रस्ता में जया एगो मैसेज सुरेश के मोबाइल प भेजली...

प्रिय सुरेश जी,

हमार चुनाव केन्द्रीय विद्यालय इलाहाबाद में परमानेंट शिक्षिका के पद प हो गइल बा, हम अपना जरूरत भर के कपड़ा लत्ता ले के जा रहल बानी।

हम रउरा से तलाक नइखी लेत आ ना कबो लेब। बस अपना स्वाभिमान के रक्षा करे खातिर, गारी सुन के, लात घूँसा खा के, खानदान के मान राखे खातिर दम तूर देबे वाला सड़ल–गलल मान–मरयादा के केचुली उतार रहल बानी। राउर जब मन करी त हमरा भीरी चल आइब। रउरा खातिर हमार दरवाजा सदा खुलल रही ।

राउरे जया।

लेखक– बिम्मी कुंवर
चेन्नई
सम्पर्क सूत्र sanjaybimmi@gmail-com

राधा

✍ डा. आशा रानी लाल

राधा रानी रउवा का बानी ? न सेयान बानी न लइका। अगर रउवा लइका बानी त अपना मन के पुरवे खातिर मचलतीं, इठलइतीं आ जिद पर जिद करतीं, हल्ला चाहे रोधना मचइतीं, भुईयाँ लोटतीं आ जब ले मन माफिक लड्डू–मिठाई ना पवतीं तब ले चैन ना करतीं। लइका रहतीं त मनवो जल्दी पूर जाइत आ सयान रहतीं तऽ ओह मन के पुरवे खातिर उत्जोग करतीं, बाकी ई तऽ बुझाते नइखे कि रउवा अपना मन के केतना सतावतानी। राधाजी राउर मन करेला कि कृष्णा से जुड़ल रहीं, बस एह चाह के पुरवे के सोझा रउवा अवरी कुछु लउकते नइखे। न भूख लागता न पियास। भूखो लागि त ई मनखका खोजित, आ का जाने रउवा पनियो पियेलीं कि ना? पियास लागित त उठती आ पानी खातिर एने ओने जइतीं, बाकी एहू से कवनो मतलब नइखे। रउवा बस ओह सलोनी–सूरत के चाहतानी– इहो बात बोलत नइखी, न उनकर नाँव के माला जपतानी– ई कइसन प्रेम बा? माला जपे से तऽ अँगुरी हिलेला, तऽ उहो नइखे होत, हँ उनके ना देखला से खाली ओह कदम के नीचे खाढ़ बानी आ उनकर रास्ता ताकतानी। बुझाता कि रउवा मन आ देंह के कठुआ मार देले बा, खाली ताकत रहतानी। अब रउवा मन के भितरी का होता, ई त केहू नइखे बुझत, बाकी रउवा बस एके जगहिया जम के बे–प्रान के होके रहि गइल बानी। जईसे राउर प्रान बस उनही में बसत होखे।

, राधाजी राउर ई कइसन प्रेम बा? एगो लइकनी के प्रेम खातिर ई बात कहल गइल बा कि केहू एके जान ना पावेला, एह से कि लइकी बोलेली नाही – खाली आँख, भौंह आ मन से इशारा करे जानेली। ई बात एह से होला कि लइकी लोग लजाली। एहू पर केहू केहू तऽ एकदमे ना लजाला जइसे लैला। लैला–मजनू खातिर बेचैन रही, त लजइली ना। एह समाज के ढेला–ईंटा खइली– एहू पर मजनू से पिरीत कइल छोड़ली ना। लैला के प्रेम हिलल ना, ऊ मजनू के सदेह चहली जवना में उनकर स्वार्थ सटल रहे, बाकी राउर मन अइसनो नइखे। राउर प्रेम कृष्णा के देहें से ना आत्मा से बा, तबे त रउवा बरसाने से दउर के नदी, पहाड़, काँटा कूसा पार करत ब्रज तक जात नइखीं, बस ओही करील के कॉटन के बीच कदम के डार पकड़ले खड़ा बानी। ई बात बा, कि रउवो अपना माई–बाबूजी से डेरात नइखी आ लागता कि ओहू लोगिन के रउरा बियाह–शादी के कवनो फिकिर चिन्ता नइखे, चाहे लोग ई सोचत होखे कि ई बेटी बेबहरा हो गइल बा, एकरा से के बियाह करी, तऽ छोड़ देले होखी लोग।

राधाजी– रउरा खुबसूरती में तऽ कवनो कमी हइए नइखे। एतना सुन्दर

त एह दुनिया में दूसर कवनो मेहरारू लउकबे ना करेली। सुनले रहीं कि रउरा सुघरई के एक बेर कृष्ण बरसाने के गली में देख के कहले रहन कि – ''कि आरे ? यौवन अभिरामा" ई बात विद्यापतिजी बतवले बानऽ। तऽ अइसन सुन्दर सुन्दरता जे के देखते इ कृष्णो भकुआ गइल रहन – ऊ रउरे लगे नऽ बा? तबो रउवा एगो साँवर लड़िका – जे सब गोपिन के साथे रास रचावतान के मोह में फँस गइल बानी। कबो एह साँवरी सूरत से उबर नइखीं पावत। इहो सोच के तऽ ओह बंशीवाला के नइखीं छोड़त कि ऊ भौंरा अइसन फूल फूल पर मँडरात रहेलन। बुझाता कि राधाजी रउवा उनका कुल अटपटेपन से प्यार हो गइल बा। रउवा जब इहो सुनलीं कि ई कृष्ण रूकमीनी जी से बियाह कऽ लेले बानऽ तबो चुपात नइखीं, खाली तड़पततानी कि कहिया उनके देखब? तऽ ई बताईं कृष्णा के कवना रूप से रउवा प्यार हो गइल बा। कृष्ण रास रचवलन तबो ऊ राउर बानऽ, कृष्ण बियाह कऽ लेलन तबो ऊ राउरे बानऽ, इ कइसन प्रेम बा? सभ लइकी चाहे मेहरारू तऽ प्रेम करेली– तऽ ओसे बियाह कइल चाहेली चाहे कइयो लेली। मीरा के देखी नऽ, ऊ बियाह कइली की ना, बाकी कहली कि– ''जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।" ऊ राउरे कृष्ण के अपन पति कहऽतारी, आ उनही के सोझा नचतो गावतारी, तऽइ का कहाई? कबीर मरद रहन, तऽ जब उनको भीतर ई प्रेम आ पियार जागल, चाहे उमड़ल – तऽ उहो अपना के मेहरारूए बना लेलन, आ कहलन कि – ''आँखो की करि कोठरी पुतली पलंग बिछाय, पलकों का चिक डारि के 'पीव' को लिया रिझाय।" कवनो मेहरारू इहे चाहेली कि उनकर 'पीव' उनका लगे रहँस, बाकी राधाजी रउवा तऽ इहो बात नइखीं सोचत। राउर कृष्णा तऽ छुट्टा घुमऽतान, तबो अपना हाव भाव से रउवा इहे कहतानी कि– रउवा उनकरे बानी, अवरी केहू के ना। ई राउर कइसन प्रेम बा, जवन निछान उनहीं खातिर बा?

सुनले बानी कि मेहरारूए– मेहरारू के दुःख बुझेले, बाकी हम तऽ केतनो रउरा मन के निहारतानी आ टकटोरतानी चाहे छुअतानी बाकी ऊ लउकते नइखे। लागता कि राउर मन रउरा लगे हइए नइखे। सुनले रहीं कित मन एकही होइबे करेला, तऽ ऊ तऽ श्याम के लगे चल गइल बा, काहे कि अष्टछाप के कवियो लोग कहले रहे कि जब रउरा अक्रूर के साधे कृष्ण के जात देखली तऽ कहलीं कि "प्राण नहीं रह पावेंगे, उड़ जावेगें घनश्याम जहाँ। जीवन–धन के बिना हाय! मन पावेगा विश्राम कहाँ?" इहे बात सूरो कहलन कि – ''उधो मन नाहीं दस बीस, एक हुतो सो गयो श्याम संग को अराधै ईश।" तऽ अब ऊ मन हमरा कहाँ भेंटाई – कि रउरा बारे में हम जानब। राधाजी रउवा तऽ ओह सलोना रूप पर अइसन मुग्ध हो गइल बानी चाहे मोहा गइल बानी कि रउवा आ रउवा प्रेम में कवनो दूरी रहिए नइखे गइल। रउवे प्रेम बानी आ प्रेमे रउवा बानी। रउवा एह रूप के खाली ''राधा'' कहल जा सकेला।

राधाजी–रउवा एगो गँवई लड़की बानी, बाकी राउर प्रेम नऽ तऽ गँवई बा न गँवार। ई सीधवा प्रेम तऽ जइसे कपारे चढ़ के बोले लागता। राउर गाँव के ई प्रेम जवन नदी, पहाड़ आ जंगल–बन में जनमल बा ओहपर सभकर नजर पड़ता। एह देस के सभ बेद–पुरान जे प्रेम के बारे में बतावेला, ओह के रउवा – प्रेम के देखे खातिर ओह गाँवे में जाए के पड़ता। ऊ रउवा लगे पहुँच के चुपा जाता, ठिठक जाता, ओकरा आगे बढ़िए नइखे पावत। राउर ई अनोखा प्रेम रउवा के पाके अइसन रूप धड लेता कि सब रिद्धी–सिद्धी उहाँ जाके, आ राउर देबीए नाहीं महादेबी के रूप देखके, अपन मूड़ी उँहे पटके लागतारी, आ चुपा जातारी। राउर प्रेम केतना पवित्र, केतना निश्च्छल आ सादा भाव के बा कि देवता, ऋषी, महात्मा सब ओके देख के चकित हो जाता। एह बेद–पुरान के बाद चन्डीदास, जयदेव, विद्यापति आ सूर सभे एह प्रेम के देखे आ जाने, ओने दउरता बाकी एह लोगिन के उहे दसा होता कि– ''लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई. लाल।" तऽ रउवा प्रेम के देख के ई सभे लोग रोवे आ गावे लागता, तऽ कवि बन जाता, बाकी केहू रउवा के बुझ नइखे पावत। साँचो रउवा एगो बुझउवले बन गइल बानी। का? एही के प्रेमा–भक्तिकहल जाला का? ई तऽ रउवे बुझब कि राउर प्रेम का बा?

राधाजी का रउरा अपना के कबो चिन्हीला नाऽ का? अपना बारे में चाहे अपना बाबूजी के बारे में कबो ना सोचिला? रउवा त एगो उँच–कुल के राजा बृषभानजी के बेटी बानी। रउरा एह प्रेम के फाँस में परला के कवन अइसन आफत आ गइल। केतना राज

करतीं, राजा के बेटी होके, सुख चौन से रहतीं। तऽ एह कुल सुख के रउवा एह करील के काँटा के बन जंगल में बइठ के काहे तियाग देली? रउवा का मिलल एगो धुमक्कड, लोभी आ लम्पट मरद के फेरा में पड़ के? जिनगीभर एकटक निहारते रह गइलीं, एह पलक के कबो गीरे ना दीहली, बाकी ओह निर्मोही के का राउर ईयाद आइल। ऊत रोज नया नया लोगिन के नाच गाना में भुलाइले रह गइलन। रउवा निहारत रहीं, आ ऊ ललचावत रहन, कबो पलट के देखतो ना रहन। राधाजी रउवा लगे ओह मदारी के पुकारे के कवन शब्द आ रास्ता रहे, जेसे अपना आदत से रउवा डिगत ना रहीं। बस ओह प्रेम में खाली ताकते रह जात रही। नऽ दिन के चिन्ता नऽ रात के, नऽ गर्मी के चिन्ता न जाड़ के, नऽ देह के सुध, नऽ सुख के चिन्ता–चिन्ता बाऽ तऽ खाली ओह साँवरी सुरत के। आज ले साँचो केहू राउर एह सूरत के तप के समझ ना पावल। ऋषी, मुनी, साधु, सन्यासी सभे जप–तप आ पूजा–पाठ करेला बाकी राउर तपस्या तऽ सबसे न्यारी तपस्या बा, जेके केहू बूझ ना पावल । जोगी, तपस्वी, महात्मा में तऽ केहू धुनी रमावेला, तऽ केहू तप में अपना के तपावेला, केहू जप आ तप करेला – बाकी रउवा तऽ एह कुल करतूत में से एको ना अपनवलीं। रउवा चुपचाप खड़ा होके चाहे बइठ के ताकत रहीलाँ। राधाजी रउवा आँख. में का बा, कवन शक्ति बा, कि खाली तकला से राउर मन पूर जाता। एह कृष्णा के रोंवा–रोंवा पर रउवा छा जातानी, काहे कि लोग कहेला कि रउरा तन के झाँई परला से श्याम हरियरा जालन– "जा तन की झाँई परे, श्याम हरित दुति होय''। इ बतिया साँच लागेला काहे कि पीला आ नीला रंग मिलावे से हरियर त बनिए जाला। ई खूबी तऽ रउवे में पावल गइल बा दूसरा में नाही। जब रउवा देंह में एतना चमक बा, तऽ ओह आँख में काहे ना होई, जवना में कइगो रंग रहेला।

राधाजी रउरा नऽ तऽ राज पाट चाँही न राजा। हमरा बुझाता कि रउरा बस एके गो चाह बा कि ओह साँवली सूरत से सट के खड़ा रहीं। उहे भइबो कइल । राउर तप तऽ पूरा भइल, काहे कि हर जगह कृष्णा रउवे जोरे सट के खड़ा भइल लउकेलन। सभे केहू रटेला राधा–कृष्ण–राधा–कृष्ण। केहू दूसर बात ना बोले। एगो बात बा कि रउवा तऽ मेहरारू बानी, तऽ का? ऊ मरद जे राउर पति नइखन उनका साथे सट के खड़ा भइल सोभता का? का इ अच्छाकहल जाई? उनकर मेहरारू रउवा बारे में काऽ सोचिहन? एक जगह सुनले रहीं, उहे सूरदास कहत रहन कि जब इ कृष्ण छोट रहन आ कुआँर रहन तऽ राउर बड़–बड़ आँख आ गोर मुँह देख के मोहित हो गइलन। ओह घरी जब ऊ गाय दुहे जाँस तऽ– ''एक धार दोहन पहुचावँस आ एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी'', तऽ उहाँ रउरे नऽ रहीं। रउवा से ऊ त लरिकाइएँ से प्रेम करत रहन– "लरिकाईं को प्रेम कहो अलि कैसे छूटे'', ई भइलो पर अपना आदत से लाचार रहन।

रउवा तऽ मेहरारू रहीं, जब एक मरद से निगाह मिलल तऽ ऊ आखीरी ले बनले रही। रउवा ई तऽ देखा दिहलीं नऽ कि भले ऊ रउवा से बियाह ना कइलन, तऽका भइल, जीत तऽ रउवा प्रेमें के न भइल कि हर जगहा रउवा साथही सट के खड़ा होखे के परल। ई जगह केहू ना ले पवलस। एह रउरा प्रेम के सोझा तऽ बड़हन– बड़हन भक्त लोगिन के भौचक्का होखे के परेला ।

राधाजी राउर ई रूप देख के त कहे के परत बा कि रउवा प्रेम के अवतार बानी। एही चलते राउर नाँव राधा बा ।

जगत मउसी

✍ **शारदा पाण्डेय**

आकाश में चारों ओर से बादर घेरि आइल। दिने में अन्हार हो गइल। बुझाइल कि आजु दइब बिना बरिसल ना जइहें। जगत मउसी काका के बोलाइ के कहली, "कन्हइया! तनी भीति के सहारा लेइ के ऊपर चढ़ि के देखि लिहितऽ, बुझाता कि बीच में एकाध गो खपड़ा हटल बा। कहीं बादर बरिस जाई तऽ घरवा में पानी टपके लागी।

ओने काका ऊपर चढ़ि के खपड़ा सुधारे लगले, एने मउसी काछ मारि के पटनी पर चढ़ि के चीज बहुरन सम्हारे लगली। कबो–कबो कुछ सामानो धरवावे लगली। भगमानो देखि के सोचे लगली कि एक ही अदिमी के कतना रूप होखेला? ईहे महया जब गंगा जी नहाये जाली तऽ केहू इनिकर मुँह ना देखि पावे। साठ–पैंसठ के उमिरियों में मइया घूघ कढ़ले बहरा आवेली–जाली।

एह घरी उनुका के देखि के केकरा बिस्वास होई? अतना फुरती से पटनी पर चढ़ली कि हमनी से ना होई। सोचते खड़ा रहलीं तऽले महया कहली कि,"का सोचऽतारे? तनी हई चइलवा धरु। हम अब नीचे उतरबि।"

भागमनी घइला थाम लिहली। ताखा पर गोड़ धऽइ के मइया उतरि अइली। खाली भगमानो मइया कहेली अउरी सभ केहू मउसिए कहेला। ललकी गहुँआ रंग के मइया, खनहन देहि, साधारण ऊँचाई, बड़–बड़ उलथ आँखि, तरासल नाक–नक्श, आँखि में एगो अजबे तेज। देखिहें तऽ बुझाई कि भीतर तक झाँकि लेली, गम्भीर भावमय चेहरा, कान्ह तक खिचड़ी बार; जवन घरे वाला देखि सकेला; काहें कि माथ पर हरमेसा साड़ी रहेले। ऊजर साड़ी पहिरिहें पातरे किनारा वाली। हँसिहें बिना स्वर के, बाकिर पूरा मुँह वात्सल्य के घिकनाहट से हँसत–दमकत रहीं। ओह पर कबो कवनो चिन्ता के भा क्रोध के रेख ना देखनी। ससुरा में रहतो मइया मउसी कहाये लगली। उनुकर बहिन उनुका बड़ देआदिन के पतोह बनि के उतरली। तऽ उनुकर कुल्ही बेटा–बेटी उनुका के मउसी कहे लोग। तब गँवे–गँवे अवरूओ लइका–लइकी मउसिए कहे लालग, फेरू तऽ ऊ मउसिए कहाये लगली। सगरो गाँव कहे लागल आ ऊ जगत मउसी हो गइली।

ई जगत मउसी अपना व्यवहार से सउँसे गाँव में देवता निपर पुजासु। केहू के कवनो काम परे, समस्या आवे, रूपया पइसा के आवश्यकता होखे तऽ ऊ मउसी के लगे आवे। ओकरा समस्या के समाधान होइ जाए। मउसी कइसे प्रबंध करिहें केहू ना जानल। मउसी बाल विधवा रहली। बाकिर घर के कुल्ही देआदिन के लइका उनके रहल, कवनो भेद–भाव ना। उनुका पर आपन लइका सँउप के सभे निर्भेद रहे–सूते। उनुका के कबो केहू खाली बइठल ना देखले होई। पूरा बीस–बाइस लोगन के घर के धुरी ऊहे रहली। कहाँ का बा? कतना बा? ओकर कुल्ही प्रबंधन उनुका हाथ में रहल। ऊ अपना नियम के कठोरता से पालन करसु तऽ पूरा परिवारो बिना कवनो

प्रश्न के ओही पर चले। घर में शांति आ सम्पन्नता रहल। कबो तेज आवाज में ना बोलसु। आपन काम करत रहसु। सभ उनुके मुँह जोहे। भगवानो सोचे लगली कि मइया थाकेली ना?। जाड़ा में बोरसी आगा धइले गदरा निकिअइहें। माठा महिहें। दूध–अँवटइला पर सभके बोलाइ के नापि–नापि के पहिले दूध पीये के दीहें। फेरू जब अँवटाइल ललछहुआ दूध में जोरन डाले के होई त भगमानो के बोलाइ के दीहें। भगमानो गऽरहे दूध पीएली। अपने मउसी कबो दूध ना पीहें। कहिहें कि, "बाछा के अंस मारि के दूध पीअल हमरा से ना होई।" टमाटर, बैगन, मुरई, मसूर के दाल कबो ना खइहें। चमड़ा के चप्पल ना पहिरिहें। रेक्सा पर ना बइठिहें कि अदिमी के सवारी ना करे के चाहीं। सभले बऽड़ बात कि ऊ खाली गंगाजले पीहें। गंगा जी नगिचे रहली तऽ जे जाई एक लोटा भा गगरा जल ले आई। कतनो बेराम होइहें अँग्रेजी दवाई ना करिहें। गंगाजले उनुकर दवाई रहल जब प्रयागराज अइहें तब पैदले गंगाजी जइहें आ अइहें। जबकि गंगा जी उनुका घर से चार–पाँच कोस दूर रहली। अइसन तपस्या, कठिन साधना, आ चेहरा पर कतना थकान ना; आइ के घर के काम में लागि जइहें। गाँवे रहिहें तऽ मुँह अन्हारे गंगाजी से आइ के शिवाला पर जइहें, शंकर जी पर जल चढ़इहें, डेढ़ परिक्रमा करिहें। जे भेंटाई सभ गोड़ छुअत जाई आ आशीर्वाद पावत जाई अपना योग्य। केहू के कहिहें खुश रहऽ, केहू के भगवान तहार आँचर भरसु, घर में शांति होखो, धान धान्य आवे। बेटी के हाथ पीयर होखे; अउरी ना जाने का–का? माने कि सभके घर के हाल, समस्या ऊ जानत रहली। मउसी तनिको पढ़ल–लिखल ना रहली, बाकिर रामायण, महाभारत आ भागवत के कथा जानत रहली। राति खा जब हमनी के सूते के तेयारी रही तऽ कवनो ना कवनो कथा जरूरे सुनइहें। इनका राम जी के बनवास आ सीता के अग्नि–परीक्षा दूनू बड़ा कष्टदायक बुझाई। आँखि से कथा कहत–कहत लोर झरे लागी। फेरू चुप होके कहिहें, " जनता बिस्वासे खातिर कुल्ही करे के होखेला।"

एह कथन के संगे आकाश के ओर देखि के ठन्डा साँस लीहें तऽ बुझाई जइसे वातावरण ठहरि गइल; फेरू केहू ओह बीच में ना बोली। जिनिगी के कतना पन्ना उनुका मन में उलझ जात होई ऊ तऽ ऊहे जनिहें, भा उनुकर भगवान जनिहें। बाकिर सोझा बइठल हमनी अइसन श्रोता मण्डली में एगो चुप्पी सनसना जाई। एक बेर एगो राजकुमार आ सूप बनावे वाला लइका के लोककथा सुनावे लगली, जवना में ऊ डोम के बेटा राजकुमार के जुआ में हरा दिहलस तऽ राजकुमार के बाजी कें अनुसार अपना बहिन राजकुमारी के ओह लइका के देबे के परल। पूरा कहानी लगभग दस दिन तक चलल। अतना रोचक ऊ कथा रहल कि भगवानो आ कूल्ही पितिआउत भाई–बहिन गोल बान्हि के बइस जासु। सभके धियान कथा पर रहे। बाकिर ऊ कथा रहे कि द्रोपदी के सारी बनि गइल रहे। खतमें ना होखे। राजकुमारी के दुख आ हीरामन सुग्गा के जासूसी मन के बन्हले रहे। केहू टसके ना चाहे, आ मउसी रहली कि जोन्ही के देखि के कहिहें कि देखऽ बृहस्पति आ सुकवा लगे–लगे आ गइल लोग। ढेर राति बीतल अब सूति जा लोग। काल्हु आगा के बात होई। करत–करत अंत में कहानी सुखान्त भइल। बाकिर भगमानो के राजकुमारी आ सुग्गा के संवाद कबो ना भुलाइल। सुगा ओह सरोवर के ऊपर जाइ के मेड़राय आ जहाँ पानी में बुदबुद होखे गावे कि–

"तोर माई रोवे तोर बाबा रोवे

तोर पोसल सुगवा सेहो रोवे।।"

तऽ एगो मेही बोल सुनाइल कि

"हाथ बान्हल बा गोड़ छानल बा

डोम बिहसल बा सूप बीनत बा।।"

सुगा फेरू ऊहे बोलल, ओने से फेरू लहर घुरमल। एह बेरी आवाज तनी साफ बुझाइल। राजा जानि गइलन। सरोवर के उड़ाह करववलन आ राजकुमारी के डोम किहें से छोड़ाइ लिहलन। डोम के देस निकाला दिहलन आ राजकुमार के जेहल।

भागमनी सोचसु कि ओहू जमाना में लोगन के कतना योग्यता रहल होई कि पानी में घर बनवा लेत रहलन। ऊ कवन लोग रहल? मउसी से कहली तऽ जबाब मिलल कि, "ई तऽ कऽथा हऽ। बाकिर कवनो साधन जरूरे रहल होई कि लोग आकाश में उड़ि जइहें, पताल में बसि जइहें, रूप बदलि लीहें। रावनवा कइलहिं नू रहल। आजुओ देखु कि जहाज उड़ता कि ना? पंछिए आ माछरि के देखि के ई कुल्ह बनल होई। अदिमी का ना करि सके?

घर में बीसन प्राणी रहले, बाकिर भगमानो के मन तऽ बस मउसिए के लगे रहे। ऊ उनुका के कबो

ईया, कबो मइया, कबो मउसी कहिहें, उनुका लागी कि मउसी नीयर केहू नइखे। जहाँ–जहाँ मउसी जइहें भगमानो पाछा लागि जइहें। दुपहरिया हो तऽ मउसी कहिहें,"ए बुचिया! सभ केहू सूतऽता तूहूँ तनी सूति जो। सुतला से मन तनी अनमन हो जाला।" बाकिर भागमनी ना सुनिहें। कहिहें,"तनी तूहूँ सूति लऽ।" मउसी ना बोलिहें।

भागमनी मउसी के संगे लागल रहिहें। मउसी ओह दुपहरिया में जब सभे सूतल रही बहरका दलानी में बइठि के लाल, हरिअर, नीला रंग के पका के जल मूँजि रंगिहें आ फेरू सुखला पर कवनो कपड़ा के टूक लेके ओकरा के पोंछि के चिक्कन करिहें तऽ भगमानों के ओमें हाथ जरूरे लागि जाई। दउरी भा मोन्हा के पेनी फनिहें तऽ ऊहो एकाध घेरा बनाइ के संतुष्ट होइहें। मोर पाड़ह साड़ी के किनारा से जब रंग–बिरंगा सूत निकाल के पानी में भेंइ के फेरू सुखा के जल अँगुरियन में लपेट के चउआ बनइहें तऽ इहो काहें पीदे रहिहें? ईहो लपेटे लगिहें। कबो–कबो मउसी फाढ़न के जोरि के सुन्दर झोरा सी दी हें। एक बेर ओह रंग–बिरंग के डोरा से अतना डिजाइन डारि के चिरई, पहाड़, अदिमी, घोड़ा, फेड़ बना–बना के सुजनी सिअली कि गाँव भर में केहू के घरे कवनो हित नाता आवे तऽ ऊ सुजनी बिछावल जाए। जे देखे ऊहे अचम्भो में परि जाय। फेरू लोग ओकरा के चपोत के घरे भेजवा देसु। ऊ सुजनी धराउँ हो गइल रहे। कबो मउसी आटा के चोकर लेके, भा बाँचल कपड़ा के कतरन भरि के चिरइन के लर सजा देसु, जवन लइकियन के झाँपी साजे खातिर धराइ जाउ। एक बेर दू फुट ऊँच साढ़े तीन–चार फुट लमहर करिआ हाथी महीनन के मेहनत से सिअली, ओमे पुअरा आ चोकर भरले रहली, ओकरा पर लाल आसन सिअली, पिलवान बइसवली, जेकरा हाथ में लोहा के तार के भाला नीयर ऊँकुसी थमवली। जे देखे देखत रहि जाउ। फेरू ऊ लइकियन के बहुँरवत में भेजल जाए लागल एक धिरवन के संगे कि 'हमार हाथी लवआ ले अइह लोग।' अतना गुनी मउसी कुल्ही काम करत ई कुलही कलाकृति बनावसु। भगमानो सोचत रहली कि आजु मउसी रहिती तऽ सरकार उनुका के कवनो सम्मान जरूरे दीहित। मधुबनी शैली के कुल्ही बिरासत मउसी जइसे गाँव–जवार में अकेले सम्हरले रहली। अँचार, खटाई, अमावट डाले में उनुकर कवनो सानी ना रहल। गाँव में अपना पट्टीदारन में काज परोजन परे तऽ मउसी के हाथ परोजन में बने वाला सामान लोग छुआवे आवे। लोगन में अइसन बिस्वास रहे कि उनुका छुअला से भंडार में कवनो कमी ना होखेला। एक दिन भगमानो पुछली कि, "ए ईया! तूँ अपना गाँवे ना जालू? तहार मन कइसे लागि जाला?" मउसी एकटक भगमानो के देखली, फेरू कहली कि, "ए बुचिया? अब हमरा नइहर में केहू नइखे। जब रहल तऽ एक बेर के गइल चउदह बरिस के बाद एजू लवटि के अइनी।" भगमानो अवाक् रहि गइली। अतना दिन केहू नइहर में कइसे आ काहें रहि सकेला? ऊ मउसी के ओर देखे लगली पूछे के हिम्मत ना परल। जाइ के खाटी पर बइसि गइली। जेठ के महीना धनकट रहे। मउसी पथार परल गहूँ चलाइ के अइली आ ओही खाटी पर ऊहो बइठि गइली। कहे लगली, "तें हमरा नइहर के बारे में पूछतारिस नू? ऊ तोर ननिआउर हऽ। तोर परनाना अपना गाँव के बड़ अदिमी रहलन। जे ओह खोरी से जाई दुआर पर माथा टेकि के जाई। उनुका गाइत्री सिद्ध रहली। फिरंगी आवसन् तऽ उनुके दुआर पर सऽभा होखत रहे। धोबी उनुका नाँव के बिरहा गावसन्–

'परयाग में गाइले बाबा बेनीमाधो के

कासी में बाबा बिसनाथ

गया में गाइले गजाधर बाबा के

तारसु सभ के भगवान।

राजपुर में गाइले बैजू हो बाबा के

जिन्हि करसु गँउआ हो डाँवाडोल

सोझा ना बोलेला केहू बोल।।"

अब केहू नइखे।" कहि के ईया का जाने का सोचे लगली। भगमानो ओइसहीं बइसल रहली। कुछ देर पर बेना डोलावत मउसी कहली कि "तोहरा भाई के बिआह के कुछ दिन बादे भइया के दूगो लइका भइलन। बाबू जी पोतन के मुँह देखि के भगवान कीहें चलि गइलन। माइयो एह बीचे चलि गइल रहे। कलरा कइलल ओमे हमार भउजाई माने तोर मामीयो चलि गइली। भइया दूगो छव आ चारि बरिस के लइकन के संगे अथके परि गइलन, तऽ हमरा के बोलावे अइलन। एजू केहू हमरा के भेजे के तेयार ना भइल। तोहरा एगो बाबा से हमार पितिआउत फूआ बिअहल रहली। ऊहे सभले अधिका भेंड़ मरली। तोहार माई डेराई के रोवे लागल। ऊ लरकोर ना भइल रहे। तनी तना–तनी भइल तऽ हम केवाड़ी के ओट से तहरा अपना बाबा आ मइया से कहनी

कि, "एह हाल में हम नइहर जाइब।"

कहत मउसी फेरू कुछ सोचे–देखे लगली। बुला ऊ एजू ना रहली। फेरू बड़ा धीम आवाज में कहली कि, "घर के मरद लोग कहल के बेकहला हो गइलू तऽ जा; फेरू केहू ले आवे ना जाई।"

हम कहनी कि,"हम जमींदार के बेटी हईं। जिनिगी नइहर में नीके गुजर जाई।" आ हम भइया के संगे नइहर बिना कवनो साज–समान के चलि गइनी। दूनू भतीजन के पलनी–पोसनी, बिआह कइनी। घर बसि गइल। हर तीज–परब पर खिचड़ी पर जोड़ा काँवर सामान तहरा माई के भेजत रहनी कि केहू कुछ बोले ना पावो। एजू से दस बरिस बाद कहाव पर कहाव आइल। बाकिर हम ना लवटनी। एह बीचे तहार दूगो बाबा लोग चलि बसल। तहरा माई के बड़की बबुनी भइल खबर मिलल। हम पटाइल रहनी। अंत में जब घरवा के बाबा आ तहार मइया जिद बान्हि के कन्हैया के सिखा–पढ़ा के भेजल लोग तऽ हम राम के बनवास पूरा कइके लोगन के धिरइ के चउदह बरिस पर लवटनी। तब से आजु तीस बरिस भइल ना गइनी। अब तऽ हमार एह जू रहल ढेर जरूरी बा।" कहि के ईया–मउसी अइसन साँस लिहली जइसे जिनिगी के कूल्ही साल एक संगे गुजर गइल होखे। फेरू तनी रूकि के कहली कि, "बुचिया! आजु से तू अइसन सवाल जनि करिहे जिनिगी त नदी के एगो ध ाार हऽ। कब कतना पानी एकरा में बहि जाला केहू ना जाने। बाकिर बिसरलका जब मन परेला तऽ कतना आगि–पानी एक संगे जरे–बहेला ओकरा के संगेरल कठिन हो जालां आजु ले हमरा से केहू कबो कुछ ना पूछल, हमार बहिनियो।"

हम पटा गइनी। जगत मउसी फेरू उठली आ जाइ के गहूँ चलवली। खाँची से आम काढ़ि–काढ़ि सितुही से छीले लगली, कूँचा डारे खातिर। ऊ अपना मन के कइसे साधि लेली ई केहू ना बूझि पावे। ऊपर से कवनो हिलोर ना लउके, सागर नीयर भितर–भीतर कतना कुछ रतन–मोती समाइल रहे। अकेलापन के घड़ियाल मुँह बवले होई। बाकिर मउसी संत नीअर दुःख–सुख क एक भाव से अँगवत रहली।

शरद पूर्णिमा के दिन अनगुतहा उठि के मउसी गंगाजी नहाये गइली। लवटि के अइली तऽ कहली कि, "ए बुचिया! बबुनी के आ अपना बाबू जी के बोला ले।" हम पुछनी कि, "काहें खातिर?"

कहली," हमरा अब जाए के बा।" हमरा कुछ ना बुझाइल। कहनी, "कहँवा?" मउसी तनी थिराइ के बोलली, "आछा सुनु। जो कूदन माई के बोला ले।" हम मुँह देखे लगनी। ना समुझ पवनी तऽ गइनी बहिनिया के बोलावे। बहिनिया आइल, तऽ मउसी उनुको से ईहे कहली, "बबुनी। हम चाहतानी कि कूदन माई के बोला के जवन कुछ हमरा लगे बा दे दीं। जब जाए के बा तऽ राखे के का मतलब?" बहिन जी हँसि दिहली। कहली कि, "अब तहरा का भइल बा? एकदम ठीक बाडू। कुल्ही दे देबू त दोबारा ई कुल्ह कीने के परी। काहें अइसन करबू? भाव में जनि बहऽ। हम जातानी गंगा जी। आइब तऽ बतिआवल जाई।" कहि के चलि गइली। भगमानो सुनत खड़ा रहली। उनुका बहिन जी के बात नीक ना लागल। मउसी के मन, जवन चाहसु करसु। रोकल ठीक नइखे। सोचते जाइ के कूदन माई के बोला लिहली आ। अपने चलि गइली शिवालां आजु उनुका संगे मउसी ना रहली। लवटि के अइली तऽ देखली, ईया मउसी एगो पुरान साड़ी के दोबरि के भुइयाँ सूतल बाड़ी। पूरा कमरा हो गइल बा झन्न। खाटी, झाँपी, ओढ़न बिछावन कुछ नइखे लउकत। खाली फूले के लोआ में गंगाजल में तुलसीदल डालि के मउसी सिरहाना धइले बाड़ी। भगमानो के बुझइबे ना कइल ई का हो गइल? तऽले बहिनिया नहाइ के आ गइल। देखते हरान हो गइली। पुछली, "मउसी। ई का कइलू? भुइयाँ से उठऽ।"

मउसी कहली, "बबुनी! अब हमार जाए के घरी आ गइल बा। हमरा नाक के छूँछी गंगाजल में धोइ के मुँह में डाल दे। हमरा काम किरिआ के रूपया पछिम के ताखा पर से लेले। घर के एकहू रूपया हमरा पर जनि लगइहऽ। केहू से हमार रूपया जनि मँगिहें। जेकरा देबे के होई अपनही दे दीही। अपना बाबू जी के बोला दे।" बहिन जी रोवे लगली, सभ केहू आ गइल। गँवे–गँवे गाँव भर में खबर फइल गइल। आँगन घर खचाखच भरि गइल। मउसी मरन सेज पर बाड़ी। लोग गोड़ छुये, अन्न–वस्त्र छुआवे, आशीर्वाद लेबे खातिर आवे लागल। दोसरो जगह के लोग उनुका दर्शन खातिर आइल। बाबूजी अइलन तऽ लोग एक ओर हो गइल। बाबू जी मउसी के गोड़ छू के रोवे लगलन। मउसी के मुख मुद्रा एकदम निर्विकार शांत रहल। कहली, "बबुआ! हमार अशीर्वाद लऽ। हमार जिनिगी आदर जतन से निबाहि दिहलऽ।

तहरा के आपन बेटा जननी। अब तहरा कान्ह पर चढ़ि के जाइब। कन्हइया के धियान रखिहऽ।" कहि के मउसी सभके दूनू हाथ जोरि के प्रणाम कइली, असीसली आ आँखि बन्द कइ लिहली। फेरू केहू के ना देखली।

गाँव जवार में सुनल देखल सभे उनुका के देवता माने। संसार के प्रति अइसन निरासक्त रहि के गइल केहू ना देखले रहे। भगमानो कब से आटा में हाथ लवले ई कूल्ही दृश्य देखि लिहली। उनका बुझाइल कि ई कुल्ह आजुए भइल। गिरत लोर पोंछि के आटा साने लगली। सोचे लगली हमार ईया–मउसी अब कहाँ भेंटइहन? बुला जोन्ही बनि गइल होइहें। काहें कि ऊ कहत रहली कि जे नीमन काम करेला ऊ ध्रुव नीमर जोन्ही बनि के चमकेला। फेरू ऊ एह धरती पर काहें आई?

142, बाघम्बरी गृहयोजना, भारद्वाजपुरम्, प्रयाग–

लघुकथा

नवका जजमान

विनोद द्विवेदी

"अजी इयाद बाटे नऽ नवका जजमान किहाँ परसों पूजा आ अभिषेक करावे के बा?" पंडिताइन पुछली

– "हँ हो, भले इयाद परा दिहलू। आजु पूछे के बा कि जवन पूजन–सामग्री के लिस्ट देले रहनी, ऊ सब आ गइल कि ना।" पंडित घर से बहरियात कहलन

– अरे ओ लिस्टवा में साड़ी–ओड़ी लिखाइल बा न, कि खाली अपने धोती–गमछा के चिन्ता बा?" पंडिताइन हँसत, 'बोल' बोलत उनका पाछा धवरलीं।

एने पंडित निकललन, ओने जजमान पूजन सामग्री बन्हववला का बाद एगो कपड़ा का दुकान में पहुँचलन आ धोती–साड़ी कपड़ा का दुकान में पहुँचलन आ धोती–साड़ी कपड़ा क लिस्ट दुकानदार के देत कहलन– "तनी जल्दी करऽ।"

दुकानदार साड़ी, कपड़ा क बंडल सामने धइलस तले अउँजा के बोल परलन– "अरे भाई पंडित खातिर सस्ता वाला धाती–साड़ी दे दऽ हमरा अतना टाइम नइखे कि छाँटीं। सड़िया तनी रंगीन आ हलुके दाम वाला दीहऽ। एगो काम अउरी– हई दाम क लेबुलवा नोचि दऽ। एक–एक मीटर लाल एकरंगा आ पीयर कपड़ा के टुकड़ा दे दीहऽ।"

दुकानदार कूल्हि कपड़ा सरिहाइ के पैकेट में धरे लागल तवले नवका जजमान उपहास उड़ावत कहि परलन– "जमाना बदल गइल बाकि पंडिज्जी लोगन क लालच ना गइल।"

– "एगो बात हमहूँ कहीं..।" दुकानदार मुस्कियात बोलल "जमाना बहुते बदलि गइल, बाकि जजमान लोगन के कंजुसाई ना गइल। साहेब जब पूजा आ दान करहीं के बा त नीक से करे के चाहीं।"

जजमान के बुरा लागल बाकि उठले आ कपड़ा के दाम देके बहरा निकलि गइले।

न्यू कालोनी ककरमता, वाराणसी

ओम धीरज

1) चला गउँवाँ देखि आईं

चला गऊवाँ देखि आईं
चइत महीनवा ।
चाँदी-से रात लागे
सोने से दिनवा ।

दिनवा में देखा पाकल
गेहुँआ के बलिया,
सोना भरि थाल जइसन
चमके फसिलिया,
हँसि मिलि गीत गावैं
हँसुआ कँगनवा ।

महुआ क ठाढ़ि होइ
देखा सहूरवा,
बाँटत बा सोना नियर
मुफुत अँगूरवा,
लरिकन क टोली धावै
होते बिहनवा ।

अमवा के डारि देखा
लागल टिकोरवा,
नन्हका लुकाइल जइसे
माई के कोरवाँ,
कोइलर पिउ-पिउ
भाखे सगुनवा ।

छहियाँ के छाँह देखा
सुघ्घर बगीचवा,
चार गो गदेला खेलत
बाटें नगीचवा,
बाबा अगोरैं सोचैं
आपन सुदिनवा ।

2) भोर भइलें ना

धीरे-धीरे अँचरा पसारे किरिनिया कि भोर भइलें ना,
बोले लाल ललमुनिया
कि भोर भइले ना !

पहिले त छुवेलीं पहड़वा क टुनगी
उतरत क चूमेली पेड़वा क फुनगी
आखिरे में ठाढ़ भइलीं उतरी जमीनिया
कि भोर भइले ना !

रात भर अन्हरिया अँजोरिया सतवलीं
मोती जइसन अँसुवन के धरती चुववलीं
डर के कुँहेस भागे छोड़ि के सिवनिया
कि भोर भइले ना !

धरती त पहिनेलीं धानी चुनरिया
रंग बदरंग कइलेस रतिया अन्हरिया
लजिया ढकै सुरूज भेजलें ओढ़निया
कि भोर भइले ना !

हीरा मोती बैलन के बहरे निकललैं
सानी भूसा घास खुद हथवै मिलवलैं।
कौड़ा बारे बदे बाबा कर लँ जतनिया
कि भोर भइले ना !

हुक्का चिलम बेटी बाबा के थमवलीं
सुनगत अगिनियाँ कुरेद के जगवलीं
कइसे दहेजे बेचीं माई जस जमिनिया
कि भोर भइले ना !

पुस्तक विमोचन आ परिचर्चा (नई दिल्ली)

बिग-सी स्टूडियो : ''पाती'' 103 वाँ अंक के विमोचन

श्री केशव मोहन पाण्डेय, डा0 हरेराम पाठक, शशि प्रेमदेव, डा0 अशोक द्विवेदी,
श्री अजीत दुबे, प्रगत द्विवेदी आ मनोज भावुक

कविवर श्री रामदरस मिश्र जी के गजल संकलन ''खुले मेरे ख्वाबों के पर धीरे धीरे''
(सर्वभाषा ट्रस्ट प्रकाशन) के विमोचन

कवि श्री शशि प्रेमदेव के कविता संग्रह ''कितना कुछ कहना था'' के विमोचन

‘पाती’ अक्षर-सम्मान आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया के 12 वाँ अधिवेशन

वरिष्ठ साहित्यकार ‘श्री राजगुप्त’ ‘‘पाती’’ सम्पादक डा0 अशोक द्विवेदी के सम्मानित करत

चर्चित कवि दिनेश पाण्डेय आ शशि प्रेमदेव के अक्षर सम्मान देत प्रो0 सदानन्द शाही, डा0 प्रकाश उदय, ‘पाती’ संपादक अशोक द्विवेदी आ श्री विजय मिश्र

कवि श्री शिवजी पाण्डेय ''रसराज'' के पाती अक्षर सम्मान देत सम्पादक का साथ
प्रोफे0 सदानन्द शाही, डा0 प्रकाश उदय, विजय मिश्र

पाती अक्षर सम्मान से नवाजे गए तीन कवि

बलिया। विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया और पाती रचना मंच की ओर से टाउन हॉल में बारहवां अधिवेशन का आयोजन किया गया। इसके मुख्य अतिथि प्रोफेसर सदानंद शाही और विशिष्ट अतिथि डा. प्रकाश उदय एवं प्रोफेसर पृथ्वी राज सिंह रहे। सम्मेलन मे तीन चर्चित कवि लेखकों दिनेश पाण्डेय, शशि प्रेमदेव एवं शिव पाण्डेय रसराज को पाती अक्षर सम्मान से सम्मानित किया गया। भोजपुरी साहित्य के बढ़त डेग विषय पर बोलते हुए प्रोफेसर साही ने कहा कि वर्तमान समय में यशस्वी भोजपुरी पत्रिका पाती के साथ अन्य कई पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ, निरंतर प्रकाशित हो रही कृतियां निरंतर प्रकाश में आ रही है। डॉ प्रकाश उदय ने कहा कि आजकल बड़े प्रकाशन भी भोजपुरी की साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन कर रहे है। मातृभाषा में शिक्षा देने के सरकारी अभियान का भी सकारात्मक असर दीख रहा है। कुछ विश्वविद्यालयों में भोजपुरी की पढ़ाई भी हो रही है। जार्ज ग्रियर्सन द्वारा भोजपुरी भाषा सर्वेक्षण और उस पर लिखी पुस्तक के भोजपुरी भाग का अनुवाद करने वाले डा. पृथ्वी राज सिंह ने कहा कि हिन्दी समर्थक बेकार में भोजपुरी के खिलाफ प्रलाप कर रहे है। कार्यक्रम के द्वितीय सत्र की काव्य गोष्ठी में मिथिलेश गहमरी, अक्षय पाण्डेय, डा. प्रकाश उदय, दिनेश पाण्डेय, हीरालाल हीरा, शशि प्रेमदेव, शिव जी पाण्डेय रसराज, विजय मिश्र, डा. शत्रुघ्न पाण्डेय, डा. अशोक द्विवेदी, अशोक तिवारी,रामेश्वर सिंह, सत्यमोहन श्रीवास्तव, विंध्याचल सिंह, विनोद कुमार विमल, मुकेश चंचल आदि कवियों ने अपनी समय संदर्भ और स्तरीय कविताएं सुनाकर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विजय मिश्र व संचालन केके सिन्हा ने किया।

राष्ट्रीय सहारा

पाती अक्षर-सम्मान समारोह के कुछ विशेष झलक

बलिया विश्व भोज0 सम्मेलन, 12 वाँ अधिवेशन में कवि गोष्ठी

मंच संचालक श्री के0 के0 सिन्हा, डा0 प्रकाश उदय, डा0 शत्रुघ्न पाण्डेय, अक्षय पाण्डेय, मिथिलेश गहमरी, दिनेश पाण्डेय, विजय मिश्र, शिवजी पाण्डेय, शशि प्रेमदेव आदि

लघुकथा डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव

(1) अब लड़की के टान बा

कहे लागब त ओराई ना । बाकिर बिना कहले रहलो नइखे जात। फजीरे-फजीरे सुखदेव मिल गइले ।

-ए भाई ! इ का ? हम का देखत बानी ? तू त बियाह क के बम्बई चल गइल रहल ऽ ह ! फेन गाँवे कब आ गइल ऽ ?

हमरा सवाल पर उनकर चेहरा उदास हो गइल। कहले हमार जनाना त हरजाई मिल गइल भइया । महीना-सवा महीना साथे रहिके खूब चभलस। होटल - सिनेमा घूमलस। एक दिन गायब हो गइल। ओही चाल के एगो जवान भगा ले गइल। पुलिस में केस गइल। खोजबीन भइल । उ काहे के मिलो। सोचनी अब दोसर बियाहे कइले में गुंजाइश बा। आखिर हमरो के देखे-भाले वाला केहू चाहीं कि ना। फूआ कहलस कि अभी तहार उमिरे का भइल। हमरा आगे तू धरती पर गिरल ऽ दुआरी के आगे आगी के लगे सेंहुड़ के काँट लीआके हमही धइले रहनी। बहुत होखब ऽ त तीस हेलत होखब ऽ।

फिकिर में मत पड़ ए हमार बाबू। ताहार बियाह हम करायेबा । ओकरे खबर पर हम आइल बानी। हमरा खातिर कवनो सुन्दर लइकी देखले बिया फूआ । सुने में आइल ह कि फूफा बेफैट बानी। कहनी कि अइसन नीमन लइकी खातिर दोआह लइका ठीक ना होई । काल्ह फुफहर जाके ओ लोग से बात करे के बा। आज करीम मियाँ के घरे जात बानी । दाढ़ी हजामत बनवा लीं। ना त बिहने मंगर हो जाई ।

पाँच दिन हो गइल सुखदेव अपना फुफहर से लवट अइले ।पता चलल कि जवन लइकी उ देखले रहली उ बहक गइल। अब दोसर देखल जाता। फूफा एगो के देखले रहले- जवानी जोन्हरी के बाल नियर गोटाइल रहे। बतियवला से पता चलल कि तनी बहिर हीय। हमार मन झवान हो गइल। हमरा मुँह से निकलल- का फूफा, रउआ हमरा से कवना जनम के दुसमनी के बदला लेबे के चाहत बानी ?

फूफा कहनीं -दोआह के अइसने लइकी मिली। खांटी सुन्दर मिलल कठिन बा। सुन तानी कि आजकल हर जघे लड़की सन के टान बा। लोग बेटा जन्मवला पर जोर दे रहल बा । कानून में गर्भ गिरावल भारी अपराध बा। तबो लोग पता लगाइए लेत बा। अभी त कुछ लइकी एने ओने लउकियो जात बाड़ी सन, कुछ साल बाद लइकी सन के अकाल पड़ जाई ।

सुखदेव के मन बेचैन बा । अब का करीं ए दादा। लड़की सन के जब एतना टान बा त हमार का होई । बांड़ होके जीए के पड़ी। बाँड़ लोग के बुढ़ारी में भारी गंजन होला । केहु एक लोटा पानी देबेवाला ना जुरेला।

सुखदेव पूछले-- त भइया, राउर का राय बा। ओही बहिरी से बियाह क लीं ?

हमरा मुँह से निकलल घबरा मत। धीरज से काम ल। भूख लागला के मतलब इ ना होला कि मरीचा चबा का पेट भर लीं। दम धारऽ हमूं कवनो ठीक-ठाक लड़की के देखत बानी । तले भगवान में विश्वास रख ऽ देवी-देवता लोग के इयाद करत रह ऽ। सुनलहीं होखबऽ।

-सदा भवानी दाहिने, सनमुख रहस गनेस, तीन देव मिली रच्छा करिहें ब्रह्मा, बिशनु, महेस ।

सुखदेव आँख मूंद के देवता लोग के ध्यान कइले । अगिला हफ्ता आवे के कहि के चल गइले ।

(2) गाड़ी पर गाड़ी, अब के जाई ससुरारी

ससुरारी गइला में पहिले केतना आनन्द रहे। अब कवनो प्रोग्राम बनावे के पहिले दस बार सोचे के पड़त बा। नया-नया रेलगाड़ी रोज खुलत बा। जवना लाइन पर पहिले पाँच गो गाड़ी आवऽ जा सन ओही लाइन पर अब बीस-बीस गो ट्रेन दनदनात बाड़ी सन । तीन चार मिनट बीतत नइखे कि दोसर गाड़ी धड़धड़ाइल पास हो जात बिया। तबो मुसाफिर लोग के भीड़ कम नइखे होत। लागत बा जे गाँव के गाँव खाली रेलगाड़िये में सवार हो गइल बा। तबे नू दिल्ली, मद्रास, बम्बई भा कलकत्ता जइसन शहर में ठेलम ठेल हो गइल बा। जहाँ देखीं ओहीजा जन सागर लहरा रहल बा। रेल में भीड़, दोकान-बाजार में धक्कमधुक्की अहफिस, इस्कूल, कोर्ट कचहरी-अस्पताल में कहीं गोड़ धरे के जगह नइखे लउकत, सगरो मेला-ठेला के नजारा। अब अइसन में नीमन - नीमन कपड़ा पेन्ह के ससुरारी जाये वाला कल्पना माटी में लसरा जात बा। एह भीड़ में बीतल सुख सपना भइल जात बा । बुझात नइखे कि इ आबादी कहाँ जाके रुकी। अइसन भीड़ के सामने अनाज- पानी आ दुनिया भर के सुख-सुविधा रेत में पानी नियर बिलाइल जात बा।

एक जना चार दिन ले हुमचले बाकिर रेलगाड़ी में उनकर रिजर्वेशन ना भइल । खिसियइले घरे आके कहले अइसन एगो बम गिर जाइत कि दुनिया के आधा आबादी बर्बाद हो जाइत तब तनी जीए खातिर फांफर जगह मिलित।

कवनो मुशायरा में आपन गजल सुनावत एगो शायर बोलले एक बेर एगो देहाती कुकुर शहर में आ गइल त देखलस कि एगो शहरी कुकुर आपन पोंछ समेट के सड़की पर बइठल बा। देहाती कुकुर बोललस, काहे भाई, आपन पोंछ काहे सिकोड़ के बइठल बाड़ऽ ?

शहरी कुत्ता कहलस आन्हर बाड़ ऽ का जी ? देखत नइखऽ एह शहर में पोंछ फइलावे के जगहिए कहाँ बचल बा?

भगवान जानस, दुनिया के इ आबादी कहाँ जाके थमी।

इ सब देखके कपार पर चिन्ता बइठ गइल बिया। आदमी त बहुते उपाय क के देख लेहलस, अब देवते लोग के सहारा बा। तबे नू ढोलक पर थाप मार के गीत गावे के पहिले गवइया देवता लोग के गोहरवलस-

सदा भवानी दाहिने, सनमुख रहस गनेस, तीन देव मिली रछा करिहें ब्रह्मा, विश्नु, महेस ।।

सुनील कुमार 'तंग' के चार गो गीत

एक

चाँद गगन से झांके जब
बदरी के खिड़की खोल
प्रीत के गीत भइल अनमोल!!

सारा जग अउंघाइल बाटे
दिल के धड़कन जागे
रूप अंजोरिया छम से आवे
झलक देखा के भागे
संयम सपना के अंगना में
रहि रहि मारे बोल!
प्रीत के गीत भइल अनमोल!!

अक्षर-अक्षर से रस टपके
स्वर शरबत जस लागे
शब्द-शब्द मधुआइल अइसन
छन्द-छन्द रस पागे
अमर प्रेम के राग रागिनी
जस मिसरी के घोल!
प्रीत के गीत भइल अनमोल!!

प्रेम मिलन के गीत अचानक
कहँवा आज सुनाइल
जइसे केहू पास खड़ा बा
अनहक जिऊ घबराइल
कान में बाजे झांझ-मजीरा
मन में बाजे ढोल!
प्रीत के गीत भइल अनमोल!!

दू

उड़त चिरइया रहि-रहि सोचे
मारे कवन गुलेल
सियासी भइल जंगली खेल!!

एह जंगल में आजादी के
दावा रोज ठोकाइल
बाकिर उत्पीड़न के चरचा
चारों ओर सुनाइल
बाज़ झपट्टा रोजे मारे
ना फांसी ना जेल!
सियासी भइल जंगली खेल!!

ऊपर से इ कवन शिकारी
बइठल घात लगावे
आश्वासन के दाना छींटे
रक्षक बन फुसिलावे
कायदा आ कानून के छोड़ीं
हर सिस्टम बा फेल!
सियासी भइल जंगली खेल!!

शान्ति दूत जे रहे कबूतर
छोड़ के खोंता भागल
छोटका-छोटका जीव-जनावर
डर से काँपे लागल
बाघ-सींघ अब रोज
पिआवत बा लाठी में तेल!
सियासी भइल जंगली खेल!!

तीन

जिनिगिया धइले कहाँ धराता
मुट्ठी के बालू जस लागे
पल-पल खरकल जाता!
जिनिगिया धइले कहाँ धराता!!

रूप-धूप जस लागे जिनगी
मउवत पीछे आगे जिनगी
जइसे सूरुज चढ़ल अकासे
दउरल भागल जाता
जिनिगिया धइले कहाँ धराता!!

सब सपना हऽ अतने जानी
अनकर आपन का पहिचानी
हीत-नात सब धीरे-धीरे
अपने छूटत जाता!
जिनिगिया धइले कहाँ धराता!!

सूतल मन इ जब-जब जागे
अपनो लोग पराया लागे
जतने हम सझुरावे चाहीं
ओतने अझुरल जाता!
जिनिगिया धइले कहाँ धराता!!

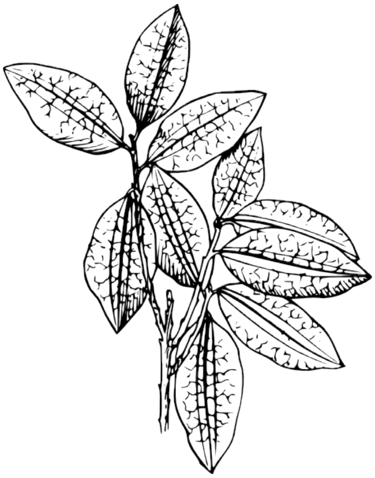

चार

इ दुनिया रंग-रंग के लागे
केहू के लोर लिखाइल भागे
केहू के किस्मत जागे!
इ दुनिया रंग-रंग के लागे!!

केहू खातिर लागल मेला
मेलो में बा केहू अकेला
आशा-टिसुना रहि-रहि सोचे
केहू ना पीछे-आगे!
इ दुनिया रंग-रंग के लागे!!

बिरहिन के ई रात ह जिनगी
खुसियन के बरसात ह जिनगी
पल पहाड़ कतहूँ, आ कतहूँ
पलक झपकते भागे!
इ दुनिया रंग-रंग के लागे!!

सुख-दुख के इ नगरी साधो
काम-क्रोध बस सगरी साधो
माया के धीकल सिउठा से
छन से काया दागे!
इ दुनिया रंग-रंग के लागे!!

रजिस्ट्री रोड, कुमारपुरम सिवान (बिहार)
841226 मो०- 7563096507

''भोजपुरी साहित्य में छपरा-त्रयी के योगदान''

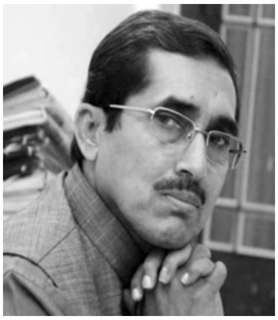

सुनील कुमार पाठक

प्रोफे0 हरिकिशोर पाण्डेय

(1) - इहाँ के उर्मिलन के लाज भोजपुरिये में रह गइल

(संदर्भ : प्रो. हरिकिशोर पांडेय के भोजपुरी कविता)

प्रो.हरिकिशोर पांडेय जी के भोजपुरी पद्य– गद्य संग्रह श्वसंत अगराइल बाश हाले में मिलल बा। पांडेय जी समीक्षक आ रुचिर गद्य–लेखन खातिर जानल जाइले बाकिर कवितो में उहाँ के हाथ–आजमाइश देखे–पढ़े लायेक बा। पांडेय जी जगदम महाविद्यालय,छपरा में अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक आ प्राचार्य रहनीं। छपरा के गंगा सिंह महाविद्यालय में डा.विश्वरंजन जी अंग्रेजी के प्राध्यापक रहनीं। आदरणीय पांडेय जी आ स्व.विश्वरंजन जी ई दूनू आदिमी के निवास छपरा रेलवे–स्टेशन के माल गोदाम वाली रोड में आर पी एफ आफिस से पहिले पड़त रहे। रोड के पूरब पांडेय जी आ पच्छिम विश्वरंजन जी।विश्वरंजन जी के ढाबा में 'चर्चना' के गोष्ठियन में छपरा के हिन्दी,भोजपुरी आ उर्दू के कवियन के बिटोर होखे। नया–नया कविता सुनावे के रहत रहे आ ओह पर खुलके बतकही होखे। कवितन पर प्रो.हरिकिशोर जी के टिप्पणी खास महत्व के होखे। एही गोष्ठियन में कविता पर बोलत–बतियावत उहाँ के खुदो कविता भोजपुरियो में लिखे लागल रहनीं। भोजपुरी में उहाँ के उतारे में पांडेय कपिल जी के महत्वपूर्ण भूमिका रहे, ई बात पांडेय जी 'वसंत अगराइल बा' के अपना 'आपन बात' में सँकरलहूँ बानीं।

पांडेय जी के पढ़ला पर पहिलके नजर में समझल जा सकत बा कि उहाँ के कविता में विचार पक्ष के प्रधानता बा। एह कवितन में अंग्रेजी कवितनो के प्रभाव के झलक मिलल स्वाभाविक बा। तबो भोजपुरी संस्कृति आ समाज के आचार–व्यवहार, रीति –रिवाज,परम्परा–प्रचलन आदि के हरिकिशोर जी के कवितनो में निठाह संवेदना से भरल अभिव्यक्ति भरपूर भइल बा–एह बात के इन्कार नइखे कइल जा सकत।

हरिकिशोर जी गीत–गजल,मुक्तक,सानेट ,दोहा आदि के अलावे कुछ मुक्त छंद के कवितो लिखले बानीं। प्रेम,प्रकृति,आम आदिमी के जिनिगी के उबियाहट–अलचारी, सामाजिक जीवन के कटुता, राजनीतिक आ लोकतांत्रिक व्यवस्था में आइल गिरावट, गरीबी–बेरोजगारी आदि से मुक्ति में मौजूदा अर्थतंत्र के असफलता–ई सब हरिकिशोर जी के कवितन के विषय–वस्तु बा।

आजादी के बाद सामाजिक–राजनीतिक जीवन में आम आदिमी के हालत में जवना तरे के सुधार के जरूरत रहे,ओकरा दुख–दीनता के मुक्ति खातिर जइसन ईमानदार प्रयास के आवश्यकता रहे,ओमें कमी देखे के मिलल। फलतः अमीरी–गरीबी के खाई बढ़त गइल। आर्थिक उदारीकरण आ बाजारवाद कोढ़ में खाज के काम कइलस। पूँजीवाद के प्रकोप से आम इंसान के जिनिगी तबाही आ तंगिश में पड़

गइल। हरिकिशोर जी के कवि एह सभ तरे के चिन्ता से व्यथित दिखत बा।बाकिर उनका कविता में ई चिन्ता प्रखर प्रतिरोध बनि के सामने ना आ सकल। तबो उहाँ के व्यंग्य के लहजा में एकदम सीधा ढंग से इहो कहे से ना चूकनीं कि– 'नाता बहुत पुरान बा त जाईं का करब!' चद्दर फटलकी बाँह पर लटकाईं का करब!' नेवता में धोती देब त टिहुकी बहुत शहर बदलल रिवाज बा महटिआईं का करब!' हरदी के नेह दूब से कइसे आ कब भइल' इतिहास के कुछ बात अब छिपाईं का करब!'

हरिकिशोर जी के कविता के कवनो राजनीतिक एजेंडा नइखे–ई बात ओकर कमजोरी आ मजबूती दूनू रूप में विवेचित हो सकत बा। कविता में राजनीति आ राजनीतिक मकसद से कविता–लिखाई–दूनू दू चीज ह। का बढ़िया ह आ का बेजाँय–एह पर फरिया के कुछ बोलल कठिन बा। कारण किदुनिया में राजनीति से अछूता आज कुछऊ नइखे रह गइल। राजनीति से परहेज के राजनीति जादे खतरनाक होले। साफ बात बा कि आज कवनो कला लेखाँ कवितो राजनीतिक परिस्थितियन आ सत्ता के गतिविधियन से प्रेरित–प्रभावित होते बिया। हरिकिशोर जी के कविता में राजनीति के सीधा हस्तक्षेप भले ना दिखे बाकिर उनका कवितन में ओकर प्रभाव के झलक त बड़ले बा–

1 – 'प्रजातंत्र के मंत्र ई/वशीकरण के तीर/ देसी पाउच पर छपल/सीता के तस्वीर।'

2 – 'उनकर समय गुलाब बा/अकवन भइल हमार/ हम जोहीं शिवरात के /जंगल बइठ लचार।'

3 – 'आजादी के खेत में/मनवा भइल उतान/ पुअरा पवलन खेतिहर/मुसवा पवलस धान।'

– किसानी के काम आज देश में केतना कठिन हो गइल बा,ई छिपल बात नइखे। खेतिहर का पुअरा भर के आस बा जबकि मुसवा धान लूटि ले जाता।अर्थतंत्र के चौपट करे में मुसवन के कुतुरनी के बहुत खतरनाक भूमिका बिया। 'देसी पाउच' पर 'सीता के तस्वीर' के रूपक रचत कवि लोकतांत्रिक व्यवस्था में धार्मिक –हस्तक्षेप के झलकावत बा।

सामाजिक जीवन में समाइल दुराव,कटुता, तोहमत,शोषण,लूट–खसोट,हिंसा–हत्या आदि के देख के कवि दुखी आ नाराज बा। ऊपर से दिखावटी प्रेम आ भीतर से गर्दन तक उतार लेबे के मनसा श्मुख में राम बगल में छूरीश के कहावत चरितार्थ करत बा।कवि अइसनका दौर में सावधानी के सीख देत बा–

'हर अँकवार अब होशियार बा चलीं कतहीं/इहाँ अब हर नजर तेरुआर बा,चलीं कतहीं/जिये के बात त साथे रहे,रउआ इयाद होई/इहे एह गजल का एतबार बा,चलीं कतहीं।

–गजल के बात के एतबारो अब घटल बा , तबे त कवि कहीं दोसरा जगे चले के बात करत बा। कवि काल्ह आ आज के दुनिया के फरक बड़ा बारीकी से उकेरले बा –

'पहिलहूँ लोग फुलात रहे/पाकत रहे झरत रहे/ बाकिर एगो बात रहे/गाछ अइसे ना रुन्हात रहे। मगर अब लोहा के जाल बाधचिरई भुखाइल आवतो बाड़ी/त पाँव बिधुना जाता/उनकर जीयल काल बाध्ना बढ़ी सुनत बा ना राजा/ऊ का खास,का पियस/ का ले प्रदेस जास/जब गाँवेघर के ई हाल बा।'

भोजपुरी लोककथा के कविता में अइसनका प्रयोग से अरथ के बढ़िया विस्तार मिलल बा। आज धरती–आसमान,नदी–पहाड़,बदरी–घटा,जेठ–सावन, चौता–कजरी सब आजो ऊहे बा, तबो मनई–मन में ऊ हुलास के थिरकनआ संवेदना के सजलता नइखे रह गइल जवन कबो मनुष्यता के असली थाती आ पहचान रहे। हरिकिशोर जी लिखत बानीं–

'उहे आकाश बा,धरती उहे,पंचांग उहे बा/ उहे सावन झमझम आके एहू साल बरसल बा/मगर ई का भइल भइया!/ना कवनो आँख कजराता /ना मन के रेत भींजत बा/ना कवनो बात अँकुराता! /इ पाहुन साल भर पर आके एहू साल तरसल बा/पत्थर के बा ई लोग/भींजलो पर चटक जाता/जे नियरो चलत लउकत बा धबिना बोलले झटक जाता।/ई सावन करम ठोकत बा/ कि कवना साल बरसल बा!'

–पत्थर बनल लोगन के भींजला के बावजूदो चटक जाये के विवशता के व्यंजना कवि के मौलिक उद्भावना मानल जा सकत बा जवन कवि के अद्भुत कल्पनाशीलता आ अभिव्यक्ति– सामर्थ्य के परिचायक बा।

कवि भोजपुरी क्षेत्र के सामाजिक जीवन में घुसल जा रहल अपसंस्कृति के चाकचिक के प्रति आपन व्यथा के छिपावत नइखे।ऊ लोकजीवन में रचल–बसल गीत–संगीत,खेल–कूद,मान–मनुहार से मनई के बढ़ रहल दूरी से दुखी बा–

'अइँछ– पइँछ के भगा दिहल बा/लुका–छिपी ,घुघुआ–माना/आ कउँचावल कोइल के/कूद नहाइल बरखा में आ/शंख बजावल सुनके धावल/माथ नवावल तुलसी–दल के/भगा दिहल बा बा अइँछ–पइँछ के।'

लोकाचार आ लोक–व्यवहार के तिलांजलि दिहला के नतीजा सामने बा–सामाजिक समरसता के ताना–बाना छिन्न–भिन्न हो रहल बा, आपसी मेल–मुहब्बत,भाईचारा–शांति सब बिसरे–बिखरे लागल बा।

हरिकिशोर जी अंग्रेजी के प्रोफेसर रहनीं।अंग्रेजी कविता में वर्ड्सवर्थ,शेली,कीट्स,रॉबर्ट फ्रॉस्ट, टेनिसन, थॉमस आदि के प्रकृति काव्य के पढ़त–पढ़ावत उहाँ के प्रकृति के विभिन्न बहुवर्णी उपादानन आ ओकनी के भाव–भंगिमा के उकेरे के एगो व्यापक दृष्टि गह लेले रहनीं।इहे कारण बा कि उहाँ के कविता में आलम्बन आ उद्दीपन–दूनू रूप में प्रकृति के बहुरंगी रूप देखे के मिलत बा।भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित श्रृंगारिक क्रिया–व्यापारन के बड़ी मनोरम चित्र देखे लायेक बा–

'धरती माथ मिसले बिया/आकाश का अँकवारी से/ इन्द्रधनुष टूट–टूट गिरल/धरती का अंग–अंग पर/ सात रंग में नहाइल नेह/हजार–हजार तितली बन उड़ल।' भोजपुरी कविता खातिर ई चित्र एगो ताजगी लेले सामने हाजिर भइल रहे। 'एगो चित्र' शीर्षक पूरा कविता में नया–नया बिम्बन आ प्रतीकन के प्रयोग के साथे– साथे मिथकन तक के बहुत सधल–मँजल प्रयोग देखे के मिलत बा–

'बवँड़ेरा के भइँसा छड़पल/मसुरिया के झोंटा घिसियावत/बान्ह में उतर गइल/ राउर सिरिजना का हाथ ना मिलल/त जीभ से चाहत बाध्मगर जेकरा हजार हाथ बा/राउर करेज कहाँ फाटत बा!/द्रौपदी का बाद चीर ओरा गइलधकि द्वारका ले पुकार नइखे पहुँचत/ठीक बा कि दीति अदिति दू जानी रहली / मगर प्रजापति त रउए नू रहीं!ष

पांडेय जी भोजपुरी के चइता गायन शैलियो में एगो गीत लिखले बानीं–

'आजुओ फागुन टुसिआइल/चइत मोजराइल हो रामा/श्याम नाहीं गोकुल आइल हो रामा,श्याम नाहीं आइल।/आजुवो चनरमा वृंदावन आवे/पंचम तान कोयलिया सुनावे/मथुरा मुरलिया पराइल हो रामा/श्याम नाहीं आइल।'

–एह चइता में प्रकृति के मानवीकरण करत ओकरा पर मानवीय मनोभावन के प्रभाव खूब सजीवता के साथ देखावल गइल बा।

कहल जाला कि कविता जवानिये के चीज ह।जइसे– जइसे कवि पकठात जाला ओकरा कविता में दर्शन उतरे लागेला। बाकिर कवि जब बुढ़ापा में बुढ़ापा पर कविता लिखी त ओकरा कविता में अनुभव के मौलिकता आ सच्चाई के समस्या ना रहि जाले।हरिकिशोर जी के एह संग्रह में बुढ़ापा पर कुछ कविता अइसन बाड़ी सन जवनन के देखला पर ई कहल जा सकत बा कि भोजपुरियो में वृद्ध–विमर्श से जुड़ल बहुत सार्थक सिरिजना भइल बा। कवि के दू–गो कवितन से कुछ पंक्तियन के देखल जा सकत बा–

1– 'जवानी के आँख खाली एगो कैमरे ह/ बुढ़ापा के आँख अतीत के एक्सरे ह। ओकर सावन झूम–झूम के जीवन पर बरिसल बा/हलुक होके उमिर घटा के केस कपास भइल बा/ओकर आन्हर आँखिन में जीवन के व्यथा रहल बा/ओकर गालन के गड़हा छाड़ ह ओह यमुना के ध्जे वियोग के वृन्दावन के पाछा छोड़ बहल

बा।

2–आदमी गवें–गवें ठूंठ होत जालाध्बुढ़ापा के फागुनध्रामायण में लुकावल चिट्ठी हध्आ ओकर झुराइल देहध्समय के चबावल सिट्ठी ह।ष

– एह पंक्तियन में अइसन मरम के छूवेवाला उपमानन के उरेहाई भइल बा जवन कवनो अनुभव के आँच में तपल कविये के बूता के बात रहे।

हरिकिशोर जी के श्कैजुअल कविश कमे बाकिर गुलेरी जी के कहानियन लेखाँ बड़ी यादगार

गजल कहलस।एगो गजल के कुछ शेर सवादे लायेक बाड़न सँ–

बरखा में खिलखिलात चमेली रहे नहात/ लागल कि तोहरा मन से अब तकरार चल गइल/अँचरा में अँजोरिया के तरेंगन के ले खोईंछाध्गँवई गजल हमार भी ससुरार चल गइल।

–गजल में शहरी बोध आ संवेदना के बढ़ रहल प्रभाव के ससुरारी के लगाव से जोड़ के कवि कमाल के कथन–भंगिमा पेश कर देले बा।

भारत राष्ट्र के परिकल्पना पांडेय जी के कविता में बड़ा गरिमामय रूप में अभिव्यंजित बा–

ष्एगो बड़हन बर के गाछध्हजारन बरिस पुरान/कोसन फइलल डाढ़ आ पत्ता/कश्मीर से कन्याकुमारी/केरल से कलकत्ता।

भोजपुरी माटी के लाल भिखारी ठाकुर पर हरिकिशोर जी के कवितो पढ़े लायेक बिया।गजल के रूप लिखाइल भिखारी जी पर एगो अइसन कविता बिया जवना में भाव के गहिराई,विचारन के उदात्तता , भाषा के ताजगी आ कथन के भंगिमा देखे लायेक बा–

छूटल मध्ययुग के कोढ़ त तुलसी के काढ़ा से / मगर आपन जड़ी के गुण ऊ भिखारी से कह गइल

उनका शब्द के घँघरुन में बोलल गाँव के पीड़ाध इहाँ के उर्मिलन के लाज भोजपुरिये में रह गइलध्अनेत का गोड़खुल के नाटक का नहरनी से ध् बड़ा बारीक उसकवलन जे देखल हँस के सह गइलध्ऊ एक आँख से हँसलन मगर एक आँख से रोवलनध्राजा भाव भिखारी नाँव गाँवे–गाँव रह गइल।

एह गजल में तुलसीदास आ उर्मिला के मिथकीय प्रयोग में अइसन सार्थकता समाहित बा कि ओह से भिखारी के व्यक्तित्व आ कृतित्व के सगरी साहित्यिक,सामाजिक आ सांस्कृतिक उपयोगिता आ प्रासंगिकता मुखर हो उठल बाटे।उर्मिला के लाज से भोजपुरी क्षेत्र के ओह सगरी नारियन के लाज के बचाव प्रतीकित हो जात बाटे जे लोग अपना परदेशी पतियन के वियोग पूरा मर्यादा के साथे झेले में सक्षम होला ।

हरिकिशोर जी कविता के अधिकतर फार्म में रचना करत आपन काव्य–दक्षता के परिचय देले बाड़न।एगो मुक्तक में भाव के विरलता– तरलता देखे लायेक बा–

ष्कुछ दर्द कवनो दवा से आराम ना होलाध् कुछ चीज अइसन बा कि जेकर दाम ना होलाध्छेनी बा,हथौड़ी बा आ रउआ इलिम भी बाटेध्मगर सब गोल पत्थल,सुनीं ,शालिग्राम ना होला।

पांडेय जी अंग्रेजी के कवि शेक्सपीयर आ जी. एम. हॉपकिन्स के एक–एक सॉनेटो के भोजपुरी सॉनेट के रूप में बहुत सुन्दर अनुवाद कइले बाड़न जवन दूनू भाषा पर कवि के बढ़िया अधिकार के साथे– साथे भोजपुरी के शब्दन के कवनो तरे के भाव–विचारन के अभिव्यक्ति में निपुणता के परिचायक बा।

कुल मिला –जुला के देखल जाव त ई कहल जा सकत बा कि भोजपुरी के क्लासिक विचारवान कवियन पर जब कबो चरचा होई त ओमें एक नाम हरिकिशोर पांडेय जी के जरूर आदर के साथ लिआई।कमे लिखके अपना सिरिजना से खूब सोहरत कमा लेबेवाला भोजपुरी साहित्यकारनो में पांडेय जी प्रमुख रहल बानीं।उहाँ से अभियो भोजपुरी के काफी उमेद बा। कवनो कवि जब समीक्षक के रूप में सामने होला त ओकरा समीक्षा में विवेचना के साथे–साथे काव्यात्मक सौन्दर्यो भरल–पूरल रहेला।ठीक ओइसहीं कवनों समीक्षक में जब कविता रचे के रूझान जाग जाले त ओकरा कविता में विचार आ दर्शन के पक्ष जादे मजबूती से उभार पा जाला। आज हिन्दी भा भोजपुरी में रचना आ समीक्षा कर्म में निधड़क ढंग से आपसी आवाजाही खूब देखे के मिल रहल बा।परिण ाामतः आज कविता शविचार कविताश के संज्ञा पा गइल बिया। लोकभाषा भोजपुरी में एगो सीमे भर एकर विकास के संभावना हम कई कारणन से देख रहल बानीं, जवना पर अलगा से चरचा ठीक रही।

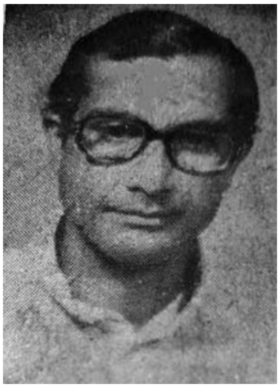

प्रो0 विश्वरंजन

(2) – 'जिनिगी जीयल जाला जइसे तइसे हमहूँ जीयब'–विश्वरंजन

'भोजपुरी कविता के भाषा आ कथ्य में कइसन बदलाव आइल बा आ कविता के जुग आ जिनिगी के सच्चाई से कहाँ ले जोड़ल गइल बा ,ई सब बतावे खातिर श्री विश्वरंजन के कविता के बानगी दिहल जाला ।भोजपुरी कविता के नया तेवर देवे आ भाव के चित्रात्मक बनावे में **विश्वरंजन** जी अगुआ रहल बाड़न।'

ई कथन ह पांडेय कपिल के, जवन विश्वरंजन जी के एकमात्र भोजपुरी कविता –संग्रह 'टटात परछाईं' के प्रकाशकीय के तौर पर उहाँ के लिखले बानीं। आम तौर पर अपना लेखन में आपन बात राखे खातिर केहू दोसरा के कथन के उद्धरण हम नाहिये दीले बाकिर एजवा अपना बाते शुरु करे खातिर हम कपिल जी के कथन के सहारा ले रहल बानीं।एकर कुछ खास कारन बा।सबसे महत्वपूर्ण कारन ई बा कि विश्वरंजन जी भोजपुरी में जवने कुछ कर सकलन, ओकरा पीछे कपिल जी के प्रेरणे प्रबल रहे। कपिल जी विश्वरंजन जी के रिश्तेदार रहनीं ।उहाँ के जब कबो छपरा पहुँची ते विश्वरंजन जी से बिना मिलले उहाँके पटना ना लवटत रहीं।साफ बात ते ई रहे कि छपरा में भोजपुरी के गतिविधियन के विश्वरंजने जी के जरिये कपिल जी जगवले रहत रहीं।हरिकिशोर जी ,विश्वरंजन जी,बच्चू बाबा,रामनाथ पांडेय जी,राधामोहन श्राधेशश जी,कन्हैया जी,सतीश्वर सहाय वर्मा सतीशश,प्रभुनाथ सिंह जी, वीरेन्द्र नारायण पांडेय,दक्ष निरंजन शशंभुश,रिपुंजय निशांत आदि दर्जनन साहित्यकार सभे भोजपुरी के अलख एह रूप में छपरा में जगवले रहत रहनीं कि बुझात रहे कि भोजपुरी के साहित्यिक राजधानी छपरे हटे।

डा.विश्वरंजन जी(15.1.1940–16.7.1999) गंगा सिंह कॉलेज,छपरा के अंग्रेजी विभाग में विभागाध्यक्ष रहनीं।'चर्चना' नाम के साहित्यिक संस्था विश्वरंजन जी के नेतृत्वे में चलत रहे जवन तब लगातार छपरा में साहित्यिक –सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करत रहे।विश्वरंजन जी शहर के आउर दोसरो संस्थन के कार्यक्रम में खूब दिलेरी से शामिल होखत रहनीं।कार्यक्रम आयोजित करावल आजे लेखाँ तबो बड़ कठिन काम रहे।बनल–बनावल मंच पर चढ़िके कविता पढ़ल भा भाषण कइल जेतने आसान होला,ओतने कठिन होला मंच सजावे के जुगाड़ भिड़ावल। विश्वरंजन जी अइसन साहित्यकार रहनीं जे मंच–माइक,दरी–जाजिम,बिजली–बत्ती ,चाय–पान –एह सब के जोगाड़ो में लागल रहीं आ मंच से मजिगर कविता पढ़त नवकी पीढ़ी के मार्गदर्शनो करत रहीं।विश्वरंजन जी अपना आप में एगो पूरा संस्था रहनीं। भगवान बाजार,छपरा में रेलवे–स्टेशन के लगे माल–गोदाम वाला रोड में अपना ढाबा में उहाँके खूब साहित्यिक गोष्ठियन के आयोजन कराईं।एजवा छपरा के साहित्यकार–कलाकारन के खूब बिटोर होखे। विश्वरंजन जी पान के खूब शौकीन रहनीं।घरहूँ अपना पनबट्टा से पान खिआईं आ कबो साथ में चौक पर जाके साथी सभे के साथे पान खा आवत रहनीं।

विश्वरंजन जी आधा दर्जन पत्र–पत्रिका खुदे निकलले रहनीं। 'प्रत्यय', 'बोधायन', 'अपना बिहार', 'शेरे संवाद', 'जनमत', 'भोजपत्र' आदि पत्र–पत्रिकन के

संपादन के अलावे युवा रचनाकारन–कलाकारन के कविता–कहानी लिखे आ गीत–संगीत के बारे में सिखावत–सराहत विश्वरंजन जी सभका बीच में खूब लोकप्रिय हो गइल रहनीं। विश्वरंजन जी खाली साहित्ये पर ना कवनों विषय पर साधिकार बतिआईं। कमे लोग जानत होई कि ज्योतिषो पर उहाँ के कमाल के पकड़ रहे।विद्यार्थी –जीवन से हमार उहाँ से जवन जुड़ाव भइल ऊ जीवनपर्यंत कायम रहल।हमार पहिलकी किताब 'नेवान' (भोजपुरी के पहिलका हाइकु संग्रह,1993) उहें के सुझाव पर छपल रहे।उहाँ के 'नेवान' के भूमिका भोजपुरी में लिखनीं– 'नेवान के बारे में'। विश्वरंजन जी हमनीं के बीच से असमय चल गइनीं।अइसनका व्यक्तित्व के जबकि भोजपुरी के उहाँ के बहुत जरूरत रहे ,उहाँ के बिछुड़ला से भोजपुरी आन्दोलनो के बहुत नोकसान हो गइल। भोजपुरी हिन्दी,अंग्रेजी –तीनू भाषा में साहित्य रचना करेवाला विश्वरंजन जी गद्य –पद्य दूनू बहुत बढ़िया लिखत रहनीं।उहाँ के रचनन में विचार के स्तर पर एगो खास तरे के ताजगी आ मौलिकता दिखत रहे। नया –नया रचे–परोसे में खूब माहिर रहनीं उहाँ के।कुछ समालोचक उहाँ के रचना श्भोर–चोरश के भोजपुरी के पहिलका नवगीत रचना मनले बा लोग।ई रचना उहाँ के 1982 में छपल एक मात्र भोजपुरी कविता –संग्रह श टटात परछाईंश में संकलित बा।ई नवगीत रचना मुजफ्फरपुर(बिहार)से निकलेवाला साप्ताहिक पत्र श्जनदृष्टिश में सन 1963 ई.के कवनों शुरुआती अंक में छपल रहे।

विश्वरंजन जी आ हरिकिशोर पांडेय दूनू आदिमी के निवास छपरा में आमने–सामने रहे।दूनू आदिमी अंग्रेजी के प्रोफेसर रहनीं।पांडेय जी जगदम कॉलेज में आ विश्वरंजन जी गंगा सिंह कॉलेज में । विश्वरंजन जी पांडेय जी से चार बरिस छोट रहनीं बाकिर सेवेकाल में 59 बरिस के उमिर में उहाँ के दिवंगत भइला से पांडेय जी बहुत दुखित रहे लगनीं ।विश्वरंजन जी के छोट भाई लेखाँ पांडेय जी मानीं आ असमय उनकरा के खोके अपनहूँ अनमना रहे लागल रहनीं।अभी काल्ह के बात ह,पांडेय जी अपना पर लिखल हमरा लेख पढ़िके जब दिल्ली से फोन कइनीं त बतवनीं कि ष्पाठक! तहार समालोचना पढ़ि के हमरा रुलाई आवे लागल।ष एही क्रम में उहाँ के कहनीं कि तू माल–गोदाम वाली सड़क,विश्वरंजन जी के ढाबा आ उनका से हमरा संबंध के जवन चर्चा अपना लेख में कर दिहले बाड़े, ऊ पढ़ि के हमरा रोआई आ गउये। अइसन होत रहे पहिले के साहित्यकारन के बीच आपसी संबंध।हमरा इयाद बा हम इहें सभे के प्रेरणा से विद्यार्थिये जीवन से कैइसे भोजपुरी में लिखल–पढ़ल शुरु कइले रहनीं।श्अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलनश में इहें सभे के साथे हम सन 1985 ई.में राँची गइल रहनीं जहँवा पहिलका श्पांडेय योगेन्द्र नारायण छात्र निबंध पुरस्कारश हमरा मिलल रहे।भोजपुरी के प्रति हमार लगाव बढ़ावे में ई सम्मेलन आ एजवा भइल साहित्यकार सभे से हमार भेंट–मुलाकात के बड़हन भूमिका रहल बा।

विश्वरंजन जी बराबर कहीं कि हम साहित्यिक कार्यकर्ता हईं।खुद त गद्य–पद्य मजा से लिखबे करीं, सभका से चहेटा करके कवनों विषय पर लिखवाइयो देत रहनीं।छपरा के अधिकतर साहित्यिक कार्यक्रमन के केन्द्र में उहाँ के रहत रहीं।भोजपुरी समीक्षा , नवगीत,मुक्तक,मुक्तछंदी रचना आदि क्षेत्र में उहाँ के योगदान भुलाइल नइखे जा सकत।छपरा में भोजपुरी के त्रिमूर्ति–बच्चू बाबा,हरिकिशोर जी आ विश्वरंजन जी–ई तीनू आदिमी बहुत कम लिख के खूब ख्याति बिटोरल।

किताब के नाम पर विश्वरंजन जी के जमा–पूँजी बस एगो 26 पेज के कविता– संग्रह 'टटात परछाईं' बाटे।बकिये सब रचना छिटपुट पत्र–पत्रिकन में मिलिहें सन।

विश्वरंजन जी गद्य में समीक्षा के दिसाईं बहुत गंभीरता से काम करत रहनीं। 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' केअक्टूबर 1990 आ अगस्त–सितंबर 1991 अंक में उहाँ के लिखल महत्वपूर्ण निबंध–'भोजपुरी के सैद्धांतिक आलोचना : सिद्धांत आ प्रक्रियाश छपल रहे। 'भोजपुरी समीक्षा के बदलत मानदंड' शीर्षक निबंध मार्च 1995 में एही सम्मेलने पत्रिका में छपल रहे।कविवर श्री दंडीस्वामी विमलानंद सरस्वती श्शीर्षक निबंध एह पत्रिका के मार्च 1993 अंक में प्रकाशित भइल रहे। नवगीत पर उहाँ के एगो समीक्षात्मक लेख छपरा से छपल भोजपुरी पत्रिका 'झकोर (मई1982) के नवगीत विशेषांक मे छपल रहे। उहाँ के एगो

समकालीन भावबोध से भरल कविता 'सहिजन के गाछ तरे अप्रैल 1998 में छपल रहे। अपना बेमारी से लड़त–जूझत उहाँ के जिनिगी के आखिरियो दिन में साहित्य –सिरिजना ना छोड़ले रहनीं।

विश्वरंजन जी बहुत कम भोजपुरी कविता लिखले बानीं बाकिर जेतना लिखले बानीं ओतने से उहाँ के कवित्व के ऊँचाई के अन्दाज लगावल जा सकत बा। उहाँ के कहनाम रहे कि भोजपुरी साहित्य जब एम.ए.तक पढ़ावल जा रहल बा त एकरा पाठ्यक्रम में समकालीन भाव –बोध के गद्य –पद्य रचना शामिल रहे के चाहीं। बेशक विश्वरंजन जी के अधिकतर गद्य–पद्य रचना भोजपुरी के पाठ्यक्रमन में विभिन्न स्तरन में शामिल होखे लायेक बाड़ी सन।

विश्वरंजन जी मूलतः हिन्दी आ भोजपुरी कविता आ समीक्षा के क्षेत्र में सक्रिय रहनीं।बाकिर एह आलेख में उहाँ के भोजपुरी कवितन पर बात कइल हम जादे जरूरी समझत बानीं जवन उहाँ के साहित्यकार के सबसे मनपसंद विधा रहल बिया। विश्वरंजन जी के कईगो समीक्षक भोजपुरी में नवगीत के प्रणेता–कवि मनले बा लोग। उहाँ के खुदो 'झकोर' (मई 1982) में अपना एगो निबंध में बतवले बानीं कि उहाँ के रचना श्भोर चोरश जवन सबसे पहिले मुजफ्फरपुर से प्रकाशित साप्ताहिक पत्र 'जनदृष्टि' के 1963 के शुरुआती कवनों अंक में छपल रहे। एमें कवनों शक के गुंजाइश अब नइखे रह गइल कि भोजपुरी नवगीत हिन्दिए नवगीत आनन्दोलन के प्रभाव में लिखाइल शुरु भइल रहे।हिन्दी नवगीत के शुरुआत बिहार के मुजफ्फरपुरे से मानल जाला, एह से ई कवनों अस्वाभाविक ना रहे कि विश्वरंजन जी,उमाकांत वर्मा जी,तैयब जी, भा केहू दोसरो एह क्षेत्र के भोजपुरी गीतकार पर हिन्दी नवगीतन के प्रभाव ना पड़े।

विश्वरंजन जी के नवगीत –'भोर चोर' में भोजपुरी नवगीत के ओतना खुलल–खिलल रूप हालाकि नइखे मिलत जइसन कि उनहीं के बाद के गीतन में दिखत बा। 'भोर चोर' गीत में नवगीत के अवाई के आहट जरूर साफ तरे सुनाई पड़त बा।देखे लायेक बा ई गीत–

'भोर चोर जब रतिया के सब थतिया लेके भागल
तब अछता–पछता दुनिया के सगरे लोगवा जागल।
बड़ा मनवना करके रतिया
चाँद पिया से कहके बतिया
चुनरी रहे छपवले रे,गहना रहे गढ़वले रे
सेन्ह जे मरलस चोरवा भोरवा रतिया हो गइल पागल।'
भोर चोर जब रतिया के सब थतिया लेके भागल।
कइलस अइसन घात कि लुटलस
रतिया के किस्मत के कुटलस
छोड़लस ना कुछ बाकी रे ,जे रतिया मटियो फाँकी रे
रतिया के मनभावन टुकड़ा मुखड़ा लागे दागल
भोर चोर जब रतिया के थतिया लेके भागल।' ('भोर–चोर')

एह गीत में गेयता त बा बाकिर छंद–विधान एकर कमजोर बा। नवगीत विधा के महत्वपूर्ण तत्व बिम्बात्मकतो एकरा में बा ,प्रकृति के मानवीकरणो दिख रहल बा , बाकिर उमाकांत वर्मा के गीतन के सामने ई गीत एगो कमजोरे रचना मानल जाई।

विश्वरंजन जी के एगो गीत बा 'टटात परछाईं' ।ई गीत एगो उम्दा नवगीत के श्रेणी में राखे लायेक बा।एह नवगीत के पंक्तियन के देखल जा सकत बा –

'आउरो सब मौसम दोसरा के नाम बा
बाकिर अंसुआइल जे ऊहे हमार ह
अइसन अन्हरिया चितकबरी बा आँख में
बासमती चाँदनी उबीछ दीं त कइसे
सूखल बबूल के टटात परछाईं हम
बास उड़ल फूलवा के लाश पड़ल जइसे।
गदराइल बेरा त तोहरे दुआर बा
डेउढ़ी बिदुराइल जे ऊहे हमार ह।' ('टटात परछाईं)

– मन में भीतर जब बेचैनी –बेकली होखे तब बाहरी दुनियाँ के राग–रंग सब बेकार–बदरंग लागेला।अपना नजर के रोशनी पर जब धुँधलका छवले होखे तब बासमती चाउर रंग वाली चाँदनी भला कइसे उबिछाई?भोजपुरी गीतन में चाँदनी खातिर

बासमती चाउर के धवलता आ खुशबू लिहले ताजा गृहस्थ जीवनसे जुड़ल बिम्ब खड़ा कइल– एगो नया आ खास अनुभव रहे ओह बेरा। दर्द आ पीड़ा से बिधुनाइल मानव–काया के सूखल बबूल के परछाईं बतावल गीत के दुनिया में एगो अइसन प्रयोग रहे जवना से पाठक के एगो नया रूप–रंग–रस के बोध भइल।

प्रकृति आ ओकर विविध रूपन से बराबरे गीतन के श्रृंगार भइल बा। आत्म आ अनात्म प्रकृति–दूनू कविता के प्राण–तत्व रहल बा। अपना एकमात्र प्रकाशित भोजपुरी संग्रह 'टटात परछाईं' के पहिलके गीत में विश्वरंजन जी प्रकृति के साथ मनुष्य के ओह अंतरंगता के रूपायित कइले बानीं जवना चलते मनुष्य अपना सुख–दुख के मनोभावन के अनुरूप प्रकृति के रूपो में बदलाव देखत–परखत रहेला।एह गीत के पंक्तियन के देखल जा सकत बा–

'छोटका सपनवा के अनगावल गीत
गूँजेला मनवा में रह– रह के मीत
टेसुए फुलाइल रहे अकास–वन में
सूरुज के धूर भरल रतिया के तन में
लरजल जे चिरइन के साँसन में प्रीत
गूँजेला मनवा में रह– रह के मीत
रुन–झुन पगडंडी समेट ले उछाह
गइयन के गोड़ तरे मुनल चरागाह
पुपुही चरवाहा के प्रान गइल जीत
गूँजेला मनवा में रह– रह के मीत । '(अनगावल गीत')

–चिरइन के साँसन में लरजे वाला प्रीते जब दिन–रात मन में गूँजे लागे,रात चुपके से सिरहानी दुख –दर्द के कहानी रख जात होखे,रुनझुन पगडंडी जब उछाह समेट लेत होखे ,तब त प्रकृति ले बढ़िके दोसर के मानव–मन के सुख–दुख के सच्चा साथी हो सकत बा?

प्रकृति के साथे मनुष्य के रिश्ता में एतना अपनापा होला कि जब घर–आँगन गीत गावे लागत बा तब घरनी के कंगना ओसे ताल मिलावे लागत बा–

गीत गावे अंगना ताल देबे कंगना
पायल बोले बोल रुनझुन छमछम
जांता गुनगुन भर दे तान
ओखर धमधम उमगे प्रान
झपझप फटके पंइचे सूप
माटी चढ़े चकाचक रूप
दमके माथे बिंदिया उड़ उड़ जाये निंदिया
मौसम करे किलोल आँचर चमचम (गीत गावे अँगना)

–एह नवगीत में ना खाली कंगने ताल दे रहल बा बलुक घरनी से जुड़ल ओकर आउरो सब संगी,जइसे– –जांत,ओखर,सूप सब मिलि के ओकरा जीवन–संगीत के मुखरित कर रहल बाड़े सन।

प्रकृति के बहुरंगी रूप कवि के खूब आकर्षित कइले बा।प्रकृति के सौंदर्य,ओकर छटा,तिल–तिल बदलत ओकर रूप–भंगिमा आ नवलता–ई सब जहाँ एक ओर कवि के लुभाने में सफल रहल बा ओहिजे दोसरा ओर मानवीय मनोभावन के प्राकृतिक उपादानन पर पड़ल प्रभावना के कविता के कैनवास पर उकेरे में कवि के खूब कामयाबी मिलल बा।ऋत–वर्णन के कुछ उदाहरण देखे लायेक बा विश्वरंजन जी के गीतन में–

1–'अँखिया सपना पघिले लागल/बिरमाइल मन पहिले जागल/लहर भरे लहराये बगिया चइत महीनवाँ/अमरित में चाँदनी नहाइल/घर –अँगना पर छहकत छाइल/प्रान–प्रान पिहकाये बगिया चइत महीनवा। (चइत–गीत रंग के)

2–'आज रात गीतवा के धुन बा चननिया/ चढ़ल उतान हँसे रितु के जवनिया/उगल तरेंगना के टोलिया सुनावेला/जाग– जाग जिनिगी के लिखल कहनिया/फूलवा के गमक सुवास मन–बगिया/ अइसन महीनवा कुआर। (कुआर–महिनवा कुआर)

3–डोल– डोल हौले– हौले सावनी चिरिया बोले /बदरा रे आ/करिआ बदरा रे आ/भाप उड़े जल नदिया फूले/बूंद हवा जल झूला झूले/बदरा रे छाध्करिया बदरा रे छा। (सावन–'सावनी चिरइया')

4–'कंचन के रेखा कसउटी पर खींचल/चमके बिजुरिया, कि बदरा भींजल/लदफद कीच–काँच ६

ारती मजूरिन/अँगना लिपाइल भइल फेरू गींजल/ फटना दूध नीयर फाटल बदरिया/करिया बदरिया के बीच रे बिजुरिया। '(बरखा ऋतु–'बिजुरिया')

– एह भोजपुरी गीत–पंक्तियन के प्रकृति–चित्रण में जवन एगो खास तरह के जवन ताजगी आ भाव–विविधता दिखाई पड़ रहल बा ऊ भोजपुरी कवि के लोक से आगे बढ़िके जमाना के हिसाब से जिनिगी में आ रहल बदलाव आ ओकरा आयामन में आ रहल विस्तार के परिणाम के रूप में देखल जा सकत बा। विश्वरंजन के प्रकृति– चित्रण में धरती मजूरन के रूप में चित्रित बिया,हौले–हौले डोलत सोन चिरइया बिया,खुदे भींजत बदरा बा आउर फटला दूध नीयर फाटल बदरिया बिया ।कवि के चित्रात्मकता में आज के दौर के रेलमरेली,भागदौड़ आ तबाही के चलते मानवीय मनोभावन में समाइल भय,हदास, उदासी,बेचौनी,छटपटाहट आदि के अनुरूप बिम्बन के चयन भइल बा।

इंसानी जिनिगी में हर नया साल के आवाइयो बस अब एकदिनी हुलास आ तमाशा भर बनि के रह गइल बा ।कवि एह वास्तविकता के अपना एगो नवगीत में एकदम बेलाग ढंग से परोसले बा–

'देखत–देखत फाट गइल सब पन्ना टंगल कलेन्डर के/केतना साल गाल में दाबत समय आज ले आइल /बाकिर रकटल मुँह बवले ऊ हरदम रहे भुखाइल/ तीन सैकड़ा पैंसठ दिन छह रितु बारहो मास/अँजुरी के पोरन से धीरे –धीरे झरत भुलाइल/खाली –खाली काँटी ठोकल लउकेला सब देवाल पर /मटमैली बाहर के हिस्सा साफ–सफेदी अंदर के।/(देखत–देखत)

–एह नवगीत में देवाल पर ठोकल एक–एक काँटी उमिर के एक –एक पड़ाव जइसनस बाड़ी सन जवन देवाल के मौजूदगी के एहसास त करावत बाड़ी सन बाकिर ई देवाल एकदिन कहियो अइसनका भर जाई भा कमजोर हो जाई कि ना एहपर कवनों रंगीन कलेन्डर खातिर जगहा बच जाई ना कवनों काँटिये टिक पाई।मानव जीवन के सच्चाई के देवाल,काँटी आ कलेन्डर के जरिए झलका दिहल भोजपुरी कवि में चेतना आ बोध के स्तर पर आइल बदलाव के सार्थक परिणाम के तौर पर एजवा देखल जा सकत बा। आज से चालीस बरिस पहिले भोजपुरी के रचनन में आध ुनिकता–बोध के ई कलेवर आ कांति विस्मयकारी रहे।

विश्वरंजन जी के नवगीतन में भावगत नवीनता के साथे –साथे विषयगत विविधता बा।एह गीतन के रचनात्मक सौष्ठवो देखे लायेक बा।एह नवगीतन में आम मनई के पीड़ा आ पुलक,अवनति आ उपलब्धि,अवसाद आ उत्साह

विसंगति आ विशेषता,हार आ जीत,संघर्ष आ सिद्धि–दूनू के स्वर मिलल बा। देश –दुनिया में बढ़ रहल अनेत आ झूठ–फरेब के बोल–बाला से कवि का निराशा त बा बाकिर कालिदास के देश के प्रतिभा आ विचारप्रवण ाता के लेके ओकर भरोसा नइखे चूकल–'साँच के बाजार सून झूठ तेज भाव में/झूठ साँच करेवाला पुपुही बजावे/देस कालीदास के अरथ गढ़े अँगुरी/ बहिरा के गूँगवा सवाद समुझावे।/(देस कालीदास के)

विश्वरंजन जी के नवगीतन में लोकधुन,लोक परम्परा–प्रचलन आ लोकविश्वास फैशन भा दिखावा टाइप कवनो प्रवृति बनके सामने नइखे आइल बलुक एकनी के मौजूदगी एजवा स्वाभाविक रूप में बा।एह नवगीतन में कल्पना के उड़ान आ वायवीयता ले जादे जीवन के लय सजोर बा।हिन्दी के लोकप्रिय नवगीतकार वीरेन्द्र मिश्र जी के गीत के एगो पंक्ति हिये –'दूर होती जा रही कल्पना,पास आती जा रही है जिन्दगी।' विश्वरंजनो जी के इहे मान्यता रहल बिया ।उँहो के जिनिगिये से बोलत–बतियावत ओकरे दुख–सुख से गँठजोड़ कइले अपना गीतन के जनोन्मुखी बनवले रहल बानीं।

विश्वरंजन जी जनवाद भा वामपंथ से घोषित तौर पर ना जुड़ल रहनीं बाकिर उहाँ के गीत सब भोजपुरी में जनवादी गीतन के राह जरूर तइयार कइले रहले सन। एह प्रसंग में एगो गीत देखे लायेक बा–'होरी गीत सुने फगुआ सुनावे धनिया/ पाँच किलो गेहूँआ कि आधा किलो चीनी/किलो भर डालडा ले अइह/कुरती के कपड़ा बबुअवा के गंजी ध्जामा एगो आपन बनइह/पिछला बाकी हिसाब सब मांगेला बनियाध्भोट फेर होई ऊहे होई खेला/नोट के चोट पड़ी सगरो / केहू ना डेराई सभे रही साथे / भिड़ गइल गाँव संगे नगरो/अबकी भोट दीही गोबर के बहू झुनिया। (फगुआ)

–अपना एह प्रखर सामाजिक–राजनीतिक चेतना के साफ करत विश्वरंजन जी अपना एगो गजल में संकेत करत कहले बानीं– 'भोर के लाल किरिन जब आये/घास के घरे सीत जर जाये/खून जीयत गरम गुलाबी ह/रूप के रंग लहू मुस्काये। (ताव)

– लाल किरिन, लहू आदि शब्दन के जरिये ई साफ बुझा रहल बा कि भोजपुरी में गोरख पांडेय,,तैयब हुसैन 'पीड़ित', कुमार विरल,सुरेश कांटक, बलभद्र,प्रकाश उदय आदि अनेक कवियन में जनवादी चेतना के भरपूर उभार में भोजपुरी के अइसनका गीतन के योगदान के नकारल नइखे जा सकत।

नया युग आ समय के धड़कन पर कवि के निगाह पूरा तरे जमल रहल बा।सोच आ संवेदना पर मौजूदा समय आ समाज के उद्वेलन के व्यापक प्रभाव पड़ल बा।एह प्रभाव के अपना एगो गजल में दरसावत कवि कह रहल बा–

'अइसन मुरघटिया ई चीख घेर लेत बा/बारूदी हवा साँस लेत जे अचेत बा/दुनिया में जेतना यूरेनियम समाइल बा/ओतने ई महाकाल नाच रहल प्रेत बाध्शहर बने खातिर बेचैन गाँव बहकल/दुनियाँ के ढर्रा में नेत ना अनेत बाध्केतना इतिहास बिलख रोअलस बेचारा/ तभियो ना केहू भी ध्यान तनी देत बा/आदमी जिये अपना जीये के चहला से /अइसे त जीवन ई मरण के समेत बा/कवनो कवनो समय लउकेला अइसन/ जेकरा से टँगल नया जुग के संकेत बा। (नया युग)

– विश्वरंजन जी के एह गजल में शहरीकरण आ उद्योग–धंधन के ललक के दौर में गाँवन के सुख–सुविधा खातिर बढ़ रहल बेचौनी आ बेताबी में आम आदिमी के छटपटाहट आ परेशानी के चित्र के साथे–साथे कवि ई साफ कर देत बा कि व्यवस्था के चक्की में पिसात आदिमी अगर जिन्दा बा त बस ओकर वजह ई बा कि मनई के जिजीविषा अभी बचल बा,जीये खातिर सपनन के सुगबुगाहट ओकरा में अभी शेष बा।

विश्वरंजन जी के कविता में अगर सामाजिक बराबरी खातिर बेबस आ अलचार लोगन के आवाज मुखरित भइल बा ते दोसरा ओर अपना विरासत आ इतिहास पर गौरवान्वित होखे के भरपूर अवसरो उपलब्ध बा।उनका कुछ गीतन में राष्ट्रीयता के सजोर स्वर सुनाई पड़त बा।जइसे–

का बुझले बा दुश्मन पापी हमनीं हिन्दुस्तानी के

जानत नइखे महिमा पावन गंगा जी के पानी के ?

लव कुश ध्रुव प्रह्लाद हजारो

लड़िका इहवाँ पर बाड़न

वीर शिवा राणाप्रताप आ

कुँअर सिंह केतना बाड़न

हर औरत में भरल शक्ति बा झाँसीवाली रानी के

जानत नइखे महिमा पावन गंगा जी के पानी के?

जानेला संसार समूचा

शांति अहिंसा हमनीं चाहीं

सत्य न्याय हमनीं चाहीला

बाकिर जुलुम सहायक नाहीं

हमनीं जानीं दवा दुष्ट के मंतर सब शैतानी के/ जानत नइखे महिमा पावन गंगा जी के पानी के? '(गंगा जी के पानी)

भोजपुरी माटी के सपूतन पर भोजपुरी मनई का सदा गौरव रहल बा।अपना विरासत के वैभव आ वीरता के इतिहास पर भोजपुरिहा का बराबरे नाज रहल बा।बाकिर ई बात एजवा गौर करे लायक बिया कि भोजपुरी राष्ट्रीयता कबो अंधराष्ट्रवाद के समर्थक नइखे रहल ,ऊ बराबरे विश्वबंधुत्व के विश्वासी रहल बिया।

विश्वरंजन जी के कुछ गीत 'अभिधा उत्तम काव्य है' के चरितार्थ करे वाला बाड़े सन।एह गीतन में कथ्य हालाकि सीधा–सपाट ढंग से सामने आइल बा बाकिर एकनी के मार्मिकता सराहे लायेक बा।एगो बेटी के विदाई गीत में बाप अपना बेटी के साशीष शुभकामना देत कहत बाड़न–

'बेटी लाज–लता होले आ बाबूजी के पगड़ी

भाई के अरमान बहिन संसार –सृष्टि के कड़ी

एक आँख में प्रेम त दूसर भरल धर्म के रंग

सावित्री बन हरदम रहिह सत्यवान के संग

डगमग डेग कभी मत होखे रखिह गोड़ सम्हार के
चाहे दिन गर्मी जाड़ा के चाहे हो बरसात के
गाँव– गिरान, खेत– घर सबके याद जोगवले रखिह
खेल घरौंदा के अब छूटल दुनिया असली लखिह
मन से,बोली से,करतब से सबके मन पर राज करे
माथा पर अँचरा पलकन पर कुल के आपन लाज धरे
गंगा जमुना के जब ले जलधार बहे रे चमचम
सदा सुहागिन रह याद रखिह अपना औकात के।ष
(सिंगार मिलन के)

भोजपुरी क्षेत्र में बेटी के विदाई करेजा काढ़ लेबेवाली घड़ी होखेले।ऊपर के पंक्तियन में बाप अपना धिया के हर तरे के जिम्मेवारी के एहसास करावत विदा कर रहल बाड़ें।कुल के मर्यादा,बाप के पगड़ी अपना औकात आ गाँव –जवार,घर–दुआर सब के बराबर इयाद रखे के पिता के सीख– भोजपुरी संस्कृति आ मर्यादा के अनुरूप पूरा मार्मिकता के साथे अभिव्यक्त भइल बा।

विश्वरंजन जी कुछ दमगर मुक्तकनो के रचना कइले बानीं जवना के उहाँ के श्चौपदीश नाम देले बानीं।एह चौपदी में बात कुछ अइसन चोखगर आ चटकार ढंग से राखल गइल बा कि ओह से जीवन के सच्चाई सहजे टपके लागत बा–

'नापल– तउलल जिनगी के हम घटा–बढ़ा दीं कइसे
नीचे धँसल जात जे बाटे गाछ चढ़ा दीं कइसे ?
कइसे हम बालू के पेरीं कइसे तेल चुआईं
बुढ़वा सुग्गा के बोले के भला पढ़ा दीं कइसे ?'

गीत–नवगीत के अलावे मुक्त छंद में विश्वरंजन जी के कवितन के बानगी देख के ई सँकारे में कवनों परेशानी नइखे होत कि भोजपुरी कविता, हिन्दी के नयकी कविता आ समकालीन कविता लेखाँ भावन आ विचारन के गझिनपन आउर ज्ञानात्मक संवेदना के चित्रित करे में कवनों तरे के उदासीनता भा लापरवाही नइखे देखवले। श्टटात परछाईं श कविता– संग्रह में शजिन्दा आदमी श, श्पोखरा के पानीश ,श्जीयत पत्थरश आ श्शहर के नीचेश शीर्षक कविता मुक्त छंद के अइसन रचना बाड़ी सन ,जवनन में गाँव के साथे–साथे शहरी जीवनो के विडम्बना, त्रासदी आ कसमसाहट के नया–नया बिम्ब,प्रतीक आ अमूर्तन के जरिये प्रस्तुत कइल गइल बा।

'जिन्दा आदमी' शीर्षक कविता में जिन्दा आदमी के पहचान बतावत कवि कहत बा–'लफात मशाल आ दहशत आँख ले ले/जिन्दा आदमी के पता चल जाला /जे हवा के हर झोंका संगे बदलत नारा में /बदल जाला आदमखोरन के बोली। (जिन्दा आदमी)

–हवा के हर झोंका संगे बदलत नारा के दौर में आदमखोरन के बोली में बदलाव सहज–स्वाभिक बा।एगो दोसरो कविता में पोखरा,ढबुसवा बेंग,पोखरा में जमल सेवार,जमकल पानी में बेंगन के टरटराइल आदि बिम्ब–प्रतीकन के जरिये बौद्धिक जगत में आइल वैचारिक ठहराव आ ओकरा चलते नया विचारन के कमलदल खिले में हो रहल कठिनाई के तरफ कवि संकेत कर रहल बा–

ढेर–ढेर ढाबुसवा बेंग/पोखरा के सेवार तरे कब से टरटरात/पोखरा के उबिया रहल बा/कभियो त चुपाई ढाबुसन के टर–टों/कहियो त बिलाई बेंगन के टरटराइल/उमेद में इंतजार करत/पोखरा के पानी कुलबुला रहल बा।

–पोखरा के कुलबुलाहट ओह उमेद के कुलबुलाहट के प्रतीक बा जवन ई भरोसा जगावत बा कि पोखरा के पानी कबो –ना –कबो एकदिन फरिया जाई,एकर साफ–सूथर निर्मल जल में वैचारिक ताजगी लेले लाल कमल एक दिन खिल जाई।

आधुनिक भावबोध आ विचारन से पुष्ट विश्वरंजन जी के एगो कविता बिया–'जीयत पत्थर'। भोजपुरी में अस्सी के दशक में लिखाइल ई कविता ई बतावे खातिर काफी बिया कि भोजपुरी खाली गीते–गवनई वाली भाषा ना हिये।भोजपुरी कवि अपना बौद्धिक संवेदना के रागात्मक अभिव्यक्ति खातिर शिल्पो के स्तर पर अइसन पोढ़पन देखवले बाड़ें कि हिन्दी नवकी कवितो के कवि का ई माने के पड़ल बा कि भोजपुरी में हर तरे के भाव–विचारन के सम्प्रेषण के भरपूर क्षमता बा।श्जीयत पत्थर'खाली एगो पत्थर

भर नइखे जवन चलवला पर ठीक निशाना पर लागी भा कारगर चोट करी ,दरअसल ई भोजपुरी मनई के ओह प्रतिरोध के संस्कृतियो के जीवंत प्रतीक बा जवन चुप्पियो में अपना चीख के साकार कर देबे के जानेला। बानगी के तौर पर एह कविता के कुछ पंक्तियन के देखल जा सकत बा–

'चुप्पी के बोली में बोले वाला /जीयत पत्थर/हर मौसम के ललकारेला/ना मतलब पूरब से,ना जाने पच्छिम/बाकिर कबहूँ ना हौसला मद्धिम/ बिना कवनों तकरार आ हेरा–फेरी व्यापार के /लगे– लगे रहे एक दोसरा के सनेहत /जीयत पत्थर/कइसन बा एकर जिनिगी?'(जीयत पत्थर)

विश्वरंजन जी के कविता संग्रह 'टटात परछाईं'के आखिरी कविता 'शहर के नीचे' एगो अइसन कविता बिया जवना में एगो फैंटेसी के जरिये आज के जमाना,जिनिगी आ व्यवस्था के पूरा तरे चीड़–फाड़ करके, कवि शोषण के प्रतिकार के एकमात्र हथियार बतावत कहत बा कि ' शहर के नीचे वाला शहर के नीचे / निहत्थन के गाँव–संसार/ अन्हार में मशाल जरवले /बाट जोहत रहेला सूरुज के पुकार के/ फफनात निकल भागे खातिर/जे लड़ के छीन लीही आपन हक,आपन सुविधा।'(शहर के नीचे)

एह शहर के विशेषता बा कि–'एह शहर के नीचे गड़ल/ एगो आउरो शहर बा/जहाँ सब रास्ता उतरेला/दरार आ खाई में/जहँवा एगो करिया प्रेत चबावेला रोशनी /तिलिस्म के भीतर खुले तिलिस्म/ आ अन्हरिया के भीतर खुले अन्हरिया/उहँवे ले जाला राह से बिचलत जतरा के।' रोशनी चबावे वाला प्रेत कवनों कवि के फैंटेसी भले हो सकत बा बाकिर ओकर भयावहता से दुनिया भर के लोग त्रस्त बा। राहत वाली बात एतना जरूर बा कि सगरी रोशनी चबा जाये वाला प्रेत के अत्याचार के बावजूद रोशनी के आश नइखे बुझल।कवि लिखत बा–'तभियो ई खोखला ,उजाड़ ,घायल शहर /केतना बेर दफनवलो गइला पर/ फेर–फेर धड़के लागेला/आ मौका पावते सभ्यता के छाती पर सवार हो जाला/रात भर खिड़की,शीशा आ किवाड़ दुअरा के झकझोरत /तूड़त सपना आ सुरुकत रोशनी /रंगीन तस्वीरन पर घीन आ खीस के खखार थूक जाला।' इहे शहर के नीचे वाला शहर के जीवंतता बा।

–भोजपुरी के एह कविता में सुरुकत, चबावेवाला,घीन,खीस,खखार थूकल –जइसन शब्दन के प्रयोग अस्सी के दशक में खास ढंग से देखल गइल। कुछ समालोचक सभे एह प्रयोग के भोजपुरी के प्रकृति के अनुरूप ना मान के हिन्दी के नकल से बचे के सलाह दिहनीं।बाकिर पांडेय सुरेन्द्र के 'ई हरनाकुस मन',शारदानंद प्रसाद जी के 'बाकिर' ,प्रो.ब्रजकिशोर के 'जोत कुहासा के ',स्वर्णकिरण जी के 'लेके ई लुकार हाँथन में,आ 'ाशिभूषण लाल जी के 'कुछ खास किसिम के आवाज' जइसन कृतियन से ई भरम टूट गइल कि भोजपुरी के मन–मिजाज नवकी कविता के अनुकूल नइखे।भोजपुरी आज के जिनिगी के ऊब, संघर्ष,थकान के बीच मनुष्य में बरकरार जीवन के लय आ संगीत के अपना भाव आ विचार–संपदा में सहेजले राखे में कामयाब रहल बिया।छपरा में ओह बेरा अज्ञेय जी के 'चौथा सप्तक' के सबसे मजबूत कवि राजेन्द्र किशोर जी हिन्दी के नयकी कविता के क्षेत्र में एगो सुपरिचित हस्ताक्षर बन चुकल रहनीं।अपना शहर के एगो मशहूर कवि के कविता देखत–पढ़त ओही लाइन पर भोजपुरियो में कुछ रचे–परोसे खातिर विश्वरंजन जी के प्रयोगधर्मी कवि अगर किनाराकशी कर लीत ते आज भोजपुरी अइसनका उम्दा रचनन से वंचित हो जाइत।

ऊपर के विवेचन से ई बात अब लगभग साफ हो जाए के चाहीं कि बात चाहे गीत के होखे भा मुक्तछंदी भोजपुरी कवितन के –विश्वरंजन भाव,विचार, कल्पना,संवेदना –हर दिसाईं नया–नया प्रयोग के आग्रही रहलें। ऊ अपना एह प्रयोग के नित निखारत रहे खातिर आपन एगो खास तरे के भाषा ढूँढ लेबहूँ में कामयाब हो गइल रहलें। विश्वरंजन जी के मुक्त छंदन में प्रयुक्त भोजपुरी शब्दन के देख के ई कहे में हमरा तनिको गुरेज नइखे कि ई कविता अगर हिन्दियो में लिखाइल रहित ते शायिद एह भोजपुरी शब्दन के प्रयोग के बिना बात ना बनित। ई दिगर बात बा कि हिन्दी अइसनके शब्दन के हड़प के आज धनवान बनत जा रहल बिया।एजवा हम इहो कहे के चाहब कि अगर भोजपुरी के एह शब्दन के बल पर कवनों दोसर

भाषा आधुनिक भाव–विचारन से जुड़ल अर्थ–वहन करे में सफल हो सकत बिया ते फेर भोजपुरी के आधुनिकता से कवनो परहेज के का जरूरत बा?साँच बात त ई बा कि आपन विरासत जोगवले समय के डेग संगे डेग मिलावत चलल– आज कवनो भाषा आ साहित्य खातिर बहुत जरूरी बा। विश्वरंजन जी के कविता में आशा,भरोसा,संतोष आ आखिरकार हर तरे के विपरीत परिस्थितियन पर विजय के अखंड विश्वास भरल–पूरल बा।उनकरे गीत के कुछ पंक्तियन के मदद लेत हम अपना एह लम्बा आलेख के अब खतम करे के चाहब–

'मौसम के इतिहास नया भूगोल रची
सब कुछ बदली बिन खुलले ना पोल बची
बाँट–बँटउअल के डरेर समय जोत दी
चूसे वालन के मुँह करिखा चपोत दी
हारे मत मन अपने सब बाधा टर जाई
दिन हो जाई सोना!'(दिन हो जाई सोना)

---

(3) – नेह के नभ में उड़त कपोत : बच्चू पांडेय

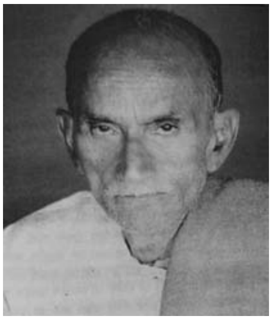

बच्चू पांडेय जी

बात सन 1981–82 के हटे।राजेन्द्र कालेज में पढ़त समय 'चर्चना' के गोष्ठियन में गंगा सिंह कालेज के अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक डा.विश्वरंजन जी के डेरा पर हरिकिशोर जी,बच्चू बाबा,वीरेन्द्र जी,दक्ष निरंजन शंभु,रिपुंजय निशांत,उदय भैया –ई सभे एके जगह भेंटा जाव।विश्वरंजन जी चाय–पान मंगा देत रहनीं,कविता सुने–सुनावे के सिलसिला शुरु हो जात रहे।हमनीं विद्यार्थी रहनीं अभी ओह बेरा तबो हमनियो के मोका मिल जात रहे।भोजपुरी में लिखे के प्रेरणा हमरा एही गोष्ठियन में मिलल।हिन्दी भोजपुरी के खींच–तान तनिको ना रहे सभे दूनू में लिखे आ सुनावे।ओह बेरा समझदारियें केतना रहे बाकिर एतना जरूर बुझाव कि ई एगो बढ़िया काम बा, एगो बढ़िया नशा बा जवन ठीक से पकड़ ली त जिनिगी बेकार होखे से बच जाई। एजवे देखले रहनीं पहिल बेर हम बच्चू पांडेय जी के सहज व्यक्तित्व में बसल एगो मनस्वी साहित्यकार के। सामान्य से तनीं छोटे लम्बाई के दुबर–पातर काया में जब कान्ह पर कुर्ता उपर गमछा लेले, चप्पल पेन्हले, चुपके से आके पांडेय जी जब कुर्सी पकड़ लीं त बुझाव कि अब गोष्ठी जम गइल।विश्वरंजन जी नवगीत लिखीं आ कविता में प्रयोगधर्मी रहनीं।हरिकिशोर जी के कविता में सहजता त रहत रहे बाकिर ओह पर अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन के प्रभाव साफ झलकत रहे।लाभ जी के कविता में लालित्यपूर्ण भावाभिव्यंजना रहत रहे।राजेन्द्र किशोर जी त नयकी कविता के मास्टरे रहनीं जेकर कविता चउथा तारसप्तको में शामिल कइले रहनीं अज्ञेय जी। बच्चू पांडेय जी सबका से अलगा एगो मस्तमौला फक्कड़ई से भरल कवि रहनीं जे दुष्यंत कुमार के एह शेर के पूरा तरे चरितार्थ करत रहनीं कि ''मैं जिसे ओढ़ता– बिछाता हूँ , वो गजल आपको सुनाता हूँ।''

बच्चू पांडेय जी (3अगस्त1937–8जून 2008)के पूरा छपरा शहर आ जिला–जवार आदर से बच्चू बाबा कहत रहे।बहुआयामी व्यक्तित्व।प्राध्यापकी,प्राचार्यी, नगरपालिका के वार्ड कमिश्नरी,सामाजिक कार्य आ ओकरा साथे–साथे शैक्षिक–सांस्कृतिक–साहित्यिक आयोजनन में सहभागिता–ई सब एकसाथ उहाँ के सहज भाव

से चलते–फिरते निमहनीं।हमरा बड़का बाबूजी प्रजापति पाठक जी जे 'प्रज्ञा समिति' के महामंत्री रहनीं उहाँ साथे बच्चू बाबा के खूब बैठकी जमत रहे।इहाँ सभे 'प्रज्ञा समिति' के तत्वावधान में नगरपालिका मैदान में आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री,केदारनाथ मिश्र'प्रभात',आदि के बोलाके एगो बड़हन कार्यक्रम 'तुलसी पर्व' आयोजित कइले रहनीं।

बच्चू बाबा हिन्दी ,भोजपुरी में त साहित्यिक रचना करते रहीं बाकिर उर्दू के हजारन शेर उहाँ के कंठस्थ रहे जवनन के मंच से उपयोग करके उहाँके खूब ताली बिटोरीं।हिन्दी आ भोजपुरी दूनू में साधिकार एक लेखाँ रचना पांडेय जी कइले बानीं।उहाँ के अइसन पंक्तियन के रचना करीं जवनन के इयाद करके हमनियो मंच से खूब वाहवाही पावत रहीं।एक–एक शब्द नगीना –जस जड़ल उहाँ के कविता में दिखी।

अपना एह आलेख में बच्चू पांडेय जी के हिन्दी कवितन के कुछ बानगी रखत उहाँ के भोजपुरी कविता पर विस्तार से आपन बात राखब।एगो साहित्यकार हिन्दी आ भोजपुरी दूनू के एके साथे केतना सहजता से साध सकत बा एके ऊँचाई पर बात करत,एकर निठाह उदाहरण बच्चू जी के हिन्दी भोजपुरी कविता बाड़ी सन।आज जे हिन्दी वाला सभे भोजपुरी में लिखे में आपन तौहिनी भा लाचारी देखावत बा उहाँ सभे खातिर ई कविता सब नजीर बाड़ी सन।

बच्चू पान्डेय जी के हिन्दी कवितन के कुछ उदाहरण देखल जा सकत बा–

1–'गीत दिल की वेदना का है मधुर उपहार/ गीत शोषण की क्रिया का है प्रबल प्रतिकार/गीत प्रेरक क्रान्ति का है,गीत जय का तूर्य/चेतना के क्षितिज पर उगता सलोना सूर्य/गीत सुलगे युद्ध में है शान्ति का प्रस्ताव/गीत की पगडंडियों पर भावना के पाँव/गीत ने फिर से बसाया एक अपना पाँव।'

2–'पाणिनी के सूत्र सा संक्षिप्त परिचय/मौन तेरा एक अनसुलझा गणित है/भारवि के अर्थगौरव– सा खिला तन/माघ की महनीयता से संवलित है।'

3–'यक्ष प्रश्न–सा टेढ़ा बनकर टोक गया/जाने कितने बढ़ते पग को रोक गया/गीतों की चिट्ठियां बाँटता चलता है/चुलबुल हरकारा–सा लगता फागुन है। एक जाल में सबको सहज समेट गया/माहिर मछुआरा–सा लगता फागुन है।'

4–'गर्द की छाँव है ,आहिस्ता चलो/दुःख रहे पाँव हैं ,आहिस्ता चलो/ठेस लग जाय न खामोशी को /दर्द का गाँव है,आहिस्ता चलो।'

5–'हुस्न है बेहिजाब फागुन है/एक हँसता गुलाब फागुन है/जिन्दगी के करीब लगती है/इश्क की इक किताब फागुन है/धूल की आँधियाँ उड़ाता है/एक बिगड़ा नवाब फागुन है।'

6–'छंद की जिन वीथियों में /झूमकर नाचीं चाएँ/उस महत् की साधना का/देश है भारत हमारा। रूप के हर चित्रपट का है धरातल/कलुष तम की कालिमा से दूर हटकर/मिलन वेला में उड़ाता प्रीति–आँचल/द्व न्द्व के उलझाव वाले पार्थ–मन को/कृष्ण का उपदेश है भारत हमारा।'

7–'चिमनी –सा धुँआ–धुँआ मन मेरा/आहत विश्वासों के पृष्ठों पर /घायल कुछ गीतों के शब्द उगे/अर्थों की खोज भरी कोशिश में /झाँक गया कुँआ–कुँआ मन मेरा।'

8–'दुकानें मजहबों की चल रहीं चलती रहेंगी/धर्म की पोथियाँ हमको सदा छलती रहेंगी/कहाँ तो बात थी इंसानियतकी औ वफा की/घृणा का भाव तो पहले कभी ऐसा नहीं था/तुम्हारा गाँव तो पहले कभी ऐसा नहीं था!'

9–'हेल्लो–हेल्लो गूँज रहा है यमुना तट पर / मोहन की वंशी अब तो बासी लगती है/वैश्वीकरण बसा है जब से मन–प्राणों में/अमरीकी कोई नगरी काशी लगती है।'

10–'गीत मेरे ऐक्य के श्रृंगार पावन/मैं सदा अक्षर–पुरुष दिल जोड़ता हूँ/तोड़कर हर छद्म की कारा कँटीली/मैं पथिक को मंजिलों तक छोड़ता हूँ/ गगन से फैलाव क्षिति से धैर्य लेकर/मांगलिक प्रस्ताव से आया हुआ हूँ/फूल अंजुरी में लिये सदभावना के/ चाँदनी के गाँव से आया हूँ।'

हिन्दी के ई पंक्ति सब एगो सबक बाड़ी सन ओह रचनाकारन खातिर, जे लोग कहेला कि भोजपुरी बोलला –लिखला से हमार हिन्दी भखर जाई।मोती

लेखाँ चमकत शब्दन के छंदन में सहेज के बच्चू पांडेय जी हिन्दी के राग– चेतना के जवना ऊँचाई पर ले जाके गीतिकाव्य के जेह रूप में समृद्ध कइले बानीं आउर समकालीन प्रखर सामाजिक–राजनीतिक बोधो के जवन परिचय देले बानीं ऊ उहाँ के असाधारण प्रतिभा के परिणाम बा।वैचारिक रूप से प्रतिबद्धता आ परतंत्रता में का अन्तर होला– राजनीतिशास्त्र के पढ़वैया आ हिन्दी कविता के रचयिता एह मौलिक आ पूरा तरे मँजल कवि के सोझा बइठ के समझल जा सकत बा।भारत के 'कृष्ण के उपदेश' बतावे वाला कवि जब धरम के पोथियन के 'छलावा' आ काशी के 'अमरीका के कवनो नगरी' बतावे के साहस आ दिलेरी देखावत बा त ई ओकर सिरफिरापन ना लोकप्रतिबद्धते के परिचायक बा, ओकर भोजपुरियते के निशानी बा ,ओह माटी के वरदान के कहानी बा जवन कबो कबीरा के बानी बन गूँजेले,त कबो भिखारी के मुँह चढ़ि जालेयकबो गोरख पांड़े एकरा के उचारे लागेलें त कबो रघुवीरनारायण आ प्रिन्सिपल मनोरंजन एकरा के अँकवारी में ले लेलें।

बच्चू पांडेय जी के हिन्दी कवितन पर अलगा से कबो हम बात कर लिहब बाकिर अभी त पहिले मातृभाषा भोजपुरी में लिखल उहाँ के कवितन पर बात–विचार कइल जादे जरूरी बुझात बा।भोजपुरी साहित्य में हालाँकि प्रबन्ध काव्यो के एगो सुदीर्घ परम्परा बा आ बढ़िया –बढ़िया खंडकाव्य आ महाकाव्य लिखाइल बाड़न सन बाकिर संगीत से नजदीकी रिश्ता रहला के चलते भोजपुरी में गीतिकाव्य के फले–फूले के जादे अवसर मिलल बा।भोजपुरी में आजो एक से बढ़िके एक गीतिकाव्य के समर्थ कवि बाड़न बाकिर एजवा त बेमारी दोसरे लाग गइल बा।मनबढ़ू गायक बिकाऊ आ लंगटपन वाला गीतो लिखे लागत बाड़ें।एह लोग से भोजपुरी बदनाम हो रहल बिया।अइसनका दौर में स्व.बच्चू बाबा के इयाद कइल आउरो जादे जरूरी आ स्वाभाविक बुझात बा।

बच्चू बाबा अपना एगो भोजपुरी गजल में शायिद आपने परिचय देत लिखत बानीं–

'इमरित कबहूँ कबहूँ बा गरल/अइसन जिनिगी से पाला परल/कबहूँ मुक्तक बनिके मुसकाइल/रोअल कबहूँ बनिके ई गजल मेहनत–पसीना के रोटी खा/ दुरगम हिमालय पर ई चढ़ल/कतना गोड़खिंचवा रहे लागल/सबके टिरकाके आगे बढ़ल।'

–ई आत्मपरिचय खाली कवियेके ना आम भोजपुरिहा के बा। सभके टिरकाके बढ़े के जरूरत आजो बा।आपसे में अझुरइला पर राह भटक जाये के खतरा बन जाई।कवि के ई संदेशो बा आम भोजपुरिहा मनई बदे।

भोजपुरी मनई आ सर्जक लोग के भोजपुरी भाषा–संस्कृति से अनुराग–प्रीति बनवले राखे खातिर प्रेरित करत पांडेय जी लिखनीं–

'दीप रउरा सृजन के जलवले रहीं/अपना गीतन से जिनिगी जगवले रहीं/रउआ आँखिन में सपना लहरते रहल/कतना टूटल हृदय के सजवले रहीं/रउरा आखर अरघ से नहाइल जहाँ/बाँसुरी चेतना के बजवले रहीं/अपना माटी के देके नमन प्रीत के/अपना भाषा के झलहल बनवले रहीं।'

मांसले सौन्दर्य के असली सौन्दर्य मानके ओकरे में अश्लीलता भर के व्यापार चलावल जेतना आज आसान बा, ओतने कठिन बा सौन्दर्य के पवित्र आत्मिक रुचिरता आ नयापन से भरल रूप–रस–गंध के आनंददायी आदर्श मान–मूल्य खड़ा कइल। ई कइसे संभव हो सकेला ,एह खातिर बच्चू बाबा जइसन कवियन के शरण में जाये के पड़ी–

'रात फिसल के भोर हो जाला/दरद पिघिलके लोर हो जाला/करिया केस हे कि बदरी हे/देख के मन मोर हो जाला/चमकत रूप कि चनरमा हे/मिजाज हमार चकोर हो जाला/अब इचिको जनि छछनावे/करेज में मरोड़ हो जाला/ई देह हे कि कँवलगाटा हे/सनेह अँखफोर हो जाला।'

वियोग श्रृंगार के एगो पारम्परिक लोकधुन में उकेरत कवि के तूलिका लोक–मरजाद सबके जोगावत कइसन चित्र खड़ा करत बिया ,देखल जा सकत बा–

'काटेला कुसुमी सेजरिया हो रामा,चौत के रतिया/ रहि–रहि झिहिरे पवन उतपतिया/पिया बिना कलपे करेज,काँपे छतिया/भइली जवानी दुर्गतिया हो रामा, चौत के रतिया।/सैंया बेदर्दी पेठावे ना पतिया/लगली बिदेशवा जे कवन सउतिया/टरले ना टरेला बिपतिया हो रामा चौत के रतिया।'

भोजपुरी क्षेत्र से रोजी–रोटी खातिर पलायन खूब होत रहे, आजो हो रहल बा ।बाकिर आज लेखाँ

ना मोबाइल रहे ना सिरिकी–तनउवल।सास–ससुर के छोड़िके ना पतोह जाये के तइयार रहत रहे ना बेटे उचित मानत रहे।इहे कारण रहे कि भिखारी के नाटक आ गीतो आउर महेन्दर मिसिर जी के पूरबियो में भोजपुरिहा नारी के विरह–वेदना जीवंत रूप में चित्रित भइल बा। ई दोसर बात बा कि बिदेशी के ओह कमाई से ना तब बिपत टरत रहे ना आज टर रहल बा।कोरोना–काल में गोड़ घसीटत अपना मेहरी संगे जब साइकिल पर पेटी–बेटी लदले भोजपुरिहा जन –मजूर यूपी–बिहार का ओरि चल पड़लें हँ तब बच्चू बाबा के कविता के इहू बात के सच्चाई अपने आप सोझा आ गइल हटे कि–

'भूख भय के बात कब से हो रहल होते रही/आज ले सुधरी ना आपन दश कइसे का कहीं/वोट खातिर जे लगावल आग अपना गाँव में/आज ऊहे हो गइल करुणेश कइसे का कहीं/हाथ में ठेला,फफोला पाँव में किसमत बनल/भ्रष्ट शासन,गूँज अध्यादेश,कइसे का कहीं?'

कवि ई कविता कोरोना–काल के पहिले लिखले रहलें बाकिर ई एकदम फोटोग्राफिक डिसक्रिप्शन साबित भइल 2020–21में।कवि वर्तमान में जीअत भविष्य के आवाई आ होनी कइसे उचार देला ,एकर उदाहरण बिया ई कविता।

समय आ समाज के सच्चाइयन से नजर बचाके कबो बच्चू बाबा के कविता नइखे चलल।मध्य वर्ग के जिनिगी जीयत कवि बराबरे समाज के आखिरी पायदान पर खड़ा आदिमी के मँहगाई आ महाजनी शोषण से बिध ुनाइल चेहरा आ उसिनाइल उमग–उछाह के निरखे खातिर मजबूर रहल बा–

'महँगी का बहँगी से कान्हा पिराइल/चढ़ते जवानी घुनाइल बा जाँगर/रूई जस किस्मत के धुनकी बा / ुनकत/टीसत करेजा बा टभकत बा पाँजरध्महुराइल बरछी महाजन के करजा /अँसुअन दहाइल उमंगन के काजर।'

–कवि एह लाचारी,बेबसी,फटेहाली आ बेचौनी के ओर–छोर सब बूझत रहे।अपना एगो गजल के शेर में ई सब के तीखारत पहिले आपन ऊ कामना रखलस–

' गेहूँ के भाव अगर ताव पर चढ़ित इचिको/बन जाइत हमरो बथान,तनी हट के चले/चार कदम सूरज का ओर बढ़ीं तब देखीं/उनकर पँचमहला मकान ,तनी हट के चले।'

–कवि जानत रहे कि खेती–बारी दिन– पर –दिन केतना महँगा होत जा रहल बा।फायदा आ लागत के त बाते छोड़ीं,आपन पूँजियो डूब जात बा।दोसरका ओर एही देश में केहू विश्व के एक नंबर त केहू दू नंबर बड़का पूँजीपति के मुकुट पेन्हके इतरात बाटे। कवि इहो जानत बा कि अनका धन पर बिक्रम राजा वाली बात काहे सफल हो रहल बिया।उदारीकरण आ बाजारवाद के नाम पर मल्टीनेशनल कंपनियन के फइलल जाल आ तिलिस्म में सुराज आ स्वराज के बिखरल जा रहल सपनन के कवि आम जन–मानस से ओझल नइखे होखे देबे के चाहत–

' साज उनकर बा बाजार उनकर बा /राज उनकर बा ताज उनकर बा/रउआ आँगन में भूख नाचत बा/ मल्टीनेशनल सुराज उनकर बा।'

एह सब के बावजूद कवि आखिरी नतीजो के एलान करे में नइखे डेराइल–कपसल, चिचियाके कहत बा–

'आग धुधुआता कभी ना कभी लहकी/छार–छार दुनिया के हो जाई अँगना/बहके दीं कब ले ई बाबू लोग बहकी /तखता उलटि जाई गइहें मठमँगना।'

सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन के तब ले कवनो साफ सुफल नजर ना आवे जब ले व्यवस्था में कवनो बदलाव ना देखे के मिले। लपक लीं आ लोक लीं के कहानी जब ले दोहरावल जात रही,सुविधा पाके दुविधा में मन सकपकाइल रही कि छीनी कि छोड़ दीं , अपने से टपक जाये के भरोसा में पड़ल रहीं आ कि हर मजबूर– मजलूम आउर मजदूर–मेहनतकश के डेग– में –डेग मिलाके आपन हक आ हुकूक के लड़ाई मिलके जीत लीं– कवनों सही नतीजा सामने ना आई । बच्चू बाबा राजनीतिशास्त्र के प्राध्यापक जरूर रहनीं बाकिर उहाँ के कवनों पॉलिटिकल पार्टी के मेम्बरी कबो ना स्वीकरले रहनीं। बिना कवनो पॉलिटिकल एजेंडा आ बैनरो के सामाजिक न्याय,समानता,समरसता,शांति आ सदभावना के स्वर मुखरित हो सकत बा–एह तथ्य के तस्दीक उहाँ के व्यक्तित्व के सामने रख के कइल जा सकत बा।।भोजपुरी के आदिकवि कबीर जब धार्मिक

बाह्याडम्बर पर प्रहार आ सामाजिक–जातीय समता, बराबरी ,इंसाफी आ भाईचारा के बात करत रहलें तवना बेरा 'धर्मनिरपेक्षता', 'फिरकापरस्ती' , 'पूँजीवाद' भा 'सामंतवाद ' जइसन शब्दावली के विकास ना भइल रहे।ई सब आधुनिक सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक दुनिया के प्रचलित 'टर्म' हटे। सांच पूछल जाव त आजो बिना कवनो 'वाद'(प्व्)के प्रमाद में पड़ले आम आदमी के पीड़ा से जुड़के जाति,धर्म,संप्रदाय सबसे ऊपर उठ के एगो सुन्दर,सुभग समाज आ देश के सपना साकार करे खातिर आगे बढ़ल जा सकत बा।बच्चू पांडेय जी के कवितन में इहे विचार आ सिद्धांत पक्ष हमरा समझ से ज्यादा प्रबल बा।

बच्चू बाबा कहत बानीं–

'मँगला से रोटी ना भेंटी /छीने के तू जुगत भिड़ावे।लोकतंत्र के काँवर ढोवत/मुरझाइल केतना जिनगानी/आँखिन से सपना सब रूठल/भेंटल बाथा आ हलकानी/बहिराइल शासन–विधान के /ठोकर दे के बात मनावे।/कइसन जात कहाँ के मजहब/तूड़े के बा ई अझुरउवल/भरम जगा के शोषक झूठा/बुझा रहल अनबूझ बुझउवल/अदमी–अदमी एक सभे बा हाथ मिलाके डेग बढ़ावे।'

धार्मिक उदारता आ सहि'णुता भारत के पहचान हटे।सब धर्म आ मजहब एक दोसरा के आदर देबे आ आपसी भाईचारा के बात करेला।भारत के पहचान विविधता में एकता रहल बा।कवि एही एकता के खूबसूरती के दीदार करे के चाहत बा–

'तोहर ईद बनल रहो हमर होली भी /तोहर धागा बनल रहो हमर रोली भी /बेकार के झगड़ा बा भइवधी में/ तोहर जुबान बनल रहो,हमर बोली भी।'

कवि के देश के इतिहास–भूगोल,माटी–महक, खेत–खलिहान,नदी–पहाड़,पेड़–फसल,पोथी–पुरान, राम–रहीम,गुरुग्रंथ–कुरान,सूर–मीर,तुलसी–रहीम – सबसे प्यार बा ,सबका बदे ओकरा हियरा में आदर –सम्मान बा।भारतीयता आ राष्ट्रीयता ओकर अस्मिता केआत्मीय आभूषण बा।ऊ भारत–वंदना के क्रम में कहत बा–

'ई धरती सिंगार जगत के ,एहके माथ झुकावे/इहाँ भगीरथ के तप के इतिहास उजागर बाटे/मुकुट हिमालय चरन पखारत सागर निसिदिन बाटे/जहाँ वेद के ऋचा मनुज के गाँठ हिया के खोले/पिंजरा के सुगना जहाँ सब भेद रहस के बोले/ई माटी अनमोल समुझ के चंदन माथ लगावे।'

कवि के भोजपुरी मुक्तक लिखे में महारत हासिल बा।एक –एक मुक्तक ओकरा कविता के बाग में अइसन सजल बा कि ऊ एह बहुरंगी सौन्दर्य आ सुरभि से खिलखिला उठल बा।कवि के दू– गो मुक्तक बानगी के तौर पर देखल जा सकत बा–

(1)'कभी मीरा कभी कबीर हो जाला/कभी गालिब त कभी मीर हो जाला /चाव से भाव के निहोरा पर/रखियो गमकत अबीर हो जाला।'आ

(2)'कागज के फूल कभी ना गमके/पेटी के गहना कभी ना झमके/अपना से अपना के जनि बान्हे/ जिनिगी जोगवला से ना चमके।'

भाषा विमर्श के लेके बच्चू बाबा के नजरिया बिल्कुल साफ रहे।हिन्दी,उर्दू,आ भोजपुरी तीनू में बढ़िया कवित्व– क्षमता के बावजूद उहाँ के मातृभाषा भोजपुरी के प्रति अथोर प्रेम राखत रहनीं।एजवो पूरा साफगोई से सँकारे में उहाँ के कवनो झिझक ना रहे कि 'जोड़ –चेत के भाषा निखरल/आपन बोली छितराइल।' कवि के अपना माईबोली के छितरइला के पीड़ा आजीवन बनल रहल। कवि भोजपुरी के महिमा बखानत कवि शुद्ध आ खाँटी भोजपुरी कविता के एगो कमनीय कलेवर परोस देत बा–

'जेकरा कलम का सिआही से साजल/माटी के महिमा बा जग में उजागर/कविता सुहागिन के खोंइछा में बिहँसे/ गीतन के रसभींजल,अँखुआइल आखर/जेकरा कविताई से निखरल अगराइल/अनगढ़ ,अझुराइल ई माटी के बोली /शब्दन के आँगन में सझुरल –सरिआइल/ भावन के साजल सहेजल रंगोली। पुरबी–पुरोधा के टेरल लहरिया में /रागन के काया में उचकल अंगड़ाई/ साजन के सुर –सिंगार सिहरल बउराइल/तानन का तेवर में छउकल तरुणाई।'

कविता जथारथ आ सच्चाई के जमीन पर पाँव रख के जब ले चलेले तबे ले ओकरा के विश्वास के नजर से देखल जाला ।जब ऊ खाली हवा में तिलंगी मतिन उड़ियाये लागेले, आकाशकुसुम बन जाले त वायवीयता

से ओकर जिनिगी खतरा में पड़ जाले।बाकिर एकर मतलब इहो ना हे कि ऊ खाली जीवन के खुरदुरापन, विसंगति,बदसूरती,नकार आ निषेध वाली बात आ विषय पर केन्द्रित रहे,खाली उबियाहट, खीस,आग,उबाल आ आक्रोश उगलत दिखे।कविता के काम हारल –थाकल आदिमी में जीवन के प्रति भरोसा जगावल हटे।कविता के ' मनुष्यता के मातृभाषा' के संज्ञा दिआइल त एही से कि ओकरा में संवेदना के सजलता आ जीवन के स्पंदन बनल रही।बच्चू बाबा के कविता जीवन के राग आ लय से भरल कविता बिया जहाँ सोच आ विचारो के उजास भरल–पूरल बा। कवि सुभगता के संभावना बराबरे जुगवले आ जगवले चलल बा–

'करिया घुप्प अन्हरिया में ई जरल कहाँ से जोत/ कवना रजत–कोख से फूटल/ई इमरित के सोत/ चान लुकाइल,जोन्ही बिदुकल,आसमान कुम्हिलाइल/ध ारती के माटी उमंग के दियरी ले मुसुकाइल/प्रान भइल फुलझरी,नेह के नभ में उड़त कपोत।'

– नेह के नभ में कपोत जबतक उड़त रही कविता मानवता के मातृभाषा बनल रही।

जवना कवि के कविता में कल्पना के सम्मोहन होखे,भावन के रुचिरता होखे,विचारन के उदात्तता होखे, बिम्ब–प्रतीक के मनोहारी छटा होखे,शब्दन के पावन साधना होखे,अलंकार के अयत्नज नियोजन होखे, रसन के सम्यक परिपाक होखे आ छन्दन के सफल निर्वहन होखे, ओकरा शिल्प पर अलगा से बतकही के कवनों मतलब नइखे।

लघुकथा

बहुरुपिया बजार

✍ डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव

आज हर जिनिस में आग लागल बा । सात रुपिया किलो आटा आज बीस रुपिया किलो के भाव से मिलत बा। हर आदमी पेट के लड़ाई लड़े खातिर महँगाई के कुरुक्षेत्र में आके खड़ा हो गइल बा। सोना से लेके मुरई तक के भाव आसमान छू रहल बा। जेकरा के देखीं उहे महँगाई के रोना रो रहल बा ।

बड़का लोग रह रह के आलू, टमाटर, चावल, दाल, तेल-घी के भाव पर घड़ियाली लोर बहा रहल बा । जेकरा जेब में करोड़ों भरल बा ओकरा के महँगाई का कर ली। बहुत लोग अब दाल खाइल छोड़ देले बा। देश के हर कोना में महँगाई आपन कमाल देखा रहल बिया।

सोचनी एह लगन पताई में केतना बारात में जाएके पड़ेला, अपना लगे हवाई चपल आ तौलिया होखे के चाहीं । दोकान में दाम चुकावत आँख निकल गइल- तीस रुपिया के तौलिया पचास में आ चालीस के चप्पल नब्बे में मिलल। सगरे चीज के दाम अभड़ा के डभरा बा। चिरई नियर मन छटपटा के रह जाता - का खाई का पीं, का लेके परदेस जाईं।

बाजार में तरह-तरह के सामान ठकचल बा। रंग-बिरंग के डिब्बा सजल बा, अब कौनो सामान सुघड़-सुंदर डिब्बा में बिकत बा। बाजार जइसे बहुरुपिया बन के लोग के लुभावत बा। टी. वी. घेर के बइठल बा लोग। तेल-साबुन, शैम्पू के विज्ञापन अलगे ओ लोग पर हावी हो गइल बा ।

सुनत बानी जे परसों एह शहर में नेता जी महँगाई पर भाषण देबे आ रहल बानी। तीन गो सभा में महँगाइए के बहाने उहां का शासक दल पर बरस चुकल बानी । माया कुछ समझ में नइखे आवत । चिरई के जान जाव लइका के खेलावना। गरीब के पेट सिकुड़ल जात बा आ ओने नेता लोग के भाषणबाजी खातिर मुद्दा मिल गइल बा। एगो मजदूर बतवले- बाबू, दाल-तरकारी के मत पूछी। अब त रोटी के साथे पियाजो भेंटाइल दुलुम बा । इ बाजार सजार हमनी गरीबन खातिर नइखे । साज-सामान के देख के खाली आँख सेंक लेबे के बा।-

बुझात नइखे कि लोग के जिनिगी के करम-धरम कइसे चली?

कृश्न-किरिया

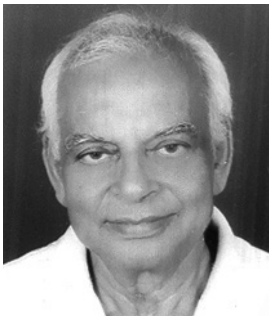

✍ राजगुप्त

बहुत दिन पहिले के बाति हऽ, बड़ागांव नाँव के एगो गांव रहे। गांव के नियरे जंगल रहे। गांव में श्याम नांव के एगो गिरहत रहत रहले। उनकर लड़िका किसुन चरवाह रहले, जवन गांव के गरुअन के चरवाही करत रहले। अपनहूं कइगो गाई पोसले रहलें। जेकरा दूध–दही–घीउ से अच्छा आमदनी रहे। श्याम् के बाप–दादा के कई बिगहा जमीन रहे। जवना पर खेती गिरहस्ती करत रहले। किसुन के महतारी, भाई, बहन सज्जी परिवार खुशी–खुशी रहत रहे। अपना–अपना काम में सब बाझल रहे, एह से कवनो दुःख ना रहल। कवनो कमी ना रहे।

एक साल के बाति हऽ, गाँव में सूखा पड़ि गइल, सज्जी धान के खेत उचाँस पर रहे। पानी ना पहुँचला के कारन धान पियरा गइले। खरीफ मरा गइल। जे से श्याम के परिवार पर बिपति के पहाड़ टूटि पड़ल। बुद्धी चकरा गइल। करी तऽ का करी। धनखर खेत देखि के रहि–रहि आहि आवे लागे। बे–अनाज खर्ची चली कइसे? पेट पली कइसे। नोकरी रहित तऽ महिनवा दिने तनखाह मिलि जाइत। कवनो फसल धोखा दे देला तऽ किसान परेशान हो जाले।

किसुन श्यामू के घाव पर मरहम लगावत कहलसि कि बाबुजी जीउ जनि छोड़ऽ। खरीफ साथ ना दिहलसि त रबी बांव ना जाई। कवनो पकिया जोगाड़ बान्हल जाई। अर्जुन युद्ध भूमि में थाकि के हथियार डालि दिहले, तवनो पर कृष्ण उनकर साथ ना छोड़ले। हम तू कवना पानी में बानी जा। गंगा बाबू परधानी में हारि गइले तवनो पर वोटरन पर हरदम मेहरबान रहले। भगवान के किरिपा बा कि गाई गोरू सुबहित बाड़े स। चारो गाई लगहर बाड़ी स। भूखे ना मुई आदमी। मडुवा–कोदो बोवले रहतीं जा त पछताये के ना पड़ित। चिरई चरि गइल खेत? चिंउटी के देवाल पर से बेरि बेरि भहराइल देखि बेरि बेरि हारल सिकन्दर में जोश भरि गइल रहे। इतिहास बतावेला कि हरला के बादो हारि जे ना मानल। उल्टे ओकर बाहि फड़फड़ाये लागल। शक्ति समा गइल। बाइसवा बार आक्रमण कइ के विजय पवले रहे।

किसुन ओह दिन मरूआइल मन से गाईन के साथे चरवाही में चलि गइले। गाईन के छोड़ि के थाकल मन में अवांट–बवांट सोचत एगो फेड़ के छांह में अस्थिराहे बइठि गइल। छन भर खातिर किसुना के ओघाईं लागि गइल। सचेत भइल त अन्हुआइले ओही से जागल। देखलसि दोसरा गांव के चरवाह अपनी अपनी गोरूअन के हांकत अगौंछी माथ पर बन्हले कान्ह पर लाठी ले के घरे लवटत रहले। किसुनो अपनी गोरूअन के हांक लगावत बोलल–

हमार गइया हमरी लगे

आनकर गइया अनका जगहा

आवऽऽऽऽ हो आवऽऽऽऽ

आवऽऽऽऽ हो आवऽऽऽऽ

हमार गइया हमरी लगे

आवऽऽऽऽ हो आवऽऽऽऽ....!

रोजिन्ना की तरे हांक लगावते सज्जी गाई किसुन की लगे आ के जउरिया जा स। आ किसुन कान्ह पर लाठी आ कपार पर गमछा कऽ पगड़ी बन्हले बिरहा गावते घरे लवटि आवे। सज्जी गाई आपन–आपन खुंटा ध ले स। ओही गने आजुवो टेरलसि। सज्जी गाई किसुन की लगे आके जरूरिया गइली सं। बाकिर एतना हांक लगावला के बादो सोकिनी गाई ना आइलि। तब किसुन बड़ा फेरा में पड़ल। आजु इ का अजगुत भइल? तरे तरे के मन में डर समा गइल। सोकिनी लगहर दूधगर गाई रहे। जवना के एग्यारह महीना दुहत रहे। आजु देरी काहे? फेरू दोहरा तेहरा के हांक लगवले।

हमार गइया हमरी लगे

आर रे आउ रे... आउ रे....!

तरे–तरे के संका समा गइल। खूखांर जानवर जंगल में रहे ले स। कहीं ओन्हनी से पाला ना नूं पड़ि गइल। नव देखले ना छव। गाइन के झुन्ड के बीच में आपन लाठी (सजाई अफसर) गाड़ि ऊपर फेंड के गाछी लाठी पर टांगि जंगल में हांक लगावत चलि दिहलसि–

हमार गइया हमरी लगे....

सजाई अफसर जहां गड़ा जाऊ गाई ओही लाठी के अजरी पजरी जउरिया के पगुरी करे लागे। ऐने ओने कत्ते ना टकसे स। एह जंगल में कबो कबो बाघ त ना बाकिर हुराड़ जरूरे लउकेले। एक हाली के बाति हऽ, मरखइनी गाई की लगे हुराड़ आ सियार मेड़राये लगले सऽ तऽ। तब मरखइनी एतना तेज डंकरे लागल कि जंगल अवंज हो गइल। डकार सुनि सज्जी गाई मरखइनी की लगे जउरिया गइली स। अपना–अपना खूर से माटी कोड़ि–कोड़ि फूफूकारे लगली स। झुण्ड में गउअन के फूफूकार सुनि हुराड़–सियार दुम दबा के भागि गइले स। बाकिर आजु कवनो अइसन बाति ना भइल काहें से कि सोकीनी एक्को हाली डेकरल ना। खोजत–खोजत किसुना के दूरे से गाई लउकल। लगे चोहँपल। गाई के दशा देखि किसुना के लात का तर से धरती घुसुक गइल। कपार चकरिया गइल। अजगुत देखि दरिये बइठि गइल। जइसे केहू गोड़ में सीक्कड़ बान्हि देले होखे। चुक्का मुक्की बइठि के दुनु तरहथ्थी में टोढ़ी राखि आंखि फारि देखे लागल। सोकीनी एक जगहा ठाड़ अनसोहातो रहे। ओकरा थान के छेमी में से दूध एक जगह धार से गिरत रहे। अइसे कइसे हो सकेला? बेगर देमी गरले दूध अपने आप अनासो गिरे लागी? भल अइली। ना त इ करिश्मा अपना आंखि से कबो ना देखली ना देखती। जहाँ दूध के धार गिरत रहे ओइजा फइले भइल कवनो करिया करिया कुछ लउकत रहे। घबड़ाहे आ बेचौन आगा बढ़ले। फेड़ के एगो गाछि तूड़ि के हाथ में छाकुन ले के आगा बढ़ले। लगे चोहँपि के देखले। जहवां धरती पर दूध के धार गिरत रहे, ओइजा हाथ में शरीफा लेखा लड्डू आ कपार पर मोर मुकुट हँसत कृष्ण–कन्हैया के मूर्ति रहे। जवन दूध के धार से धोवा के संगमरमर लेखा चमकत रहे। एतना अजगुत देखि आव देखले ना ताव धड़ाम् से भूइंया मुड़ी पटकि दिहले। दुःख के सहारा–श्याम हमारा। साक्षात् भगवान के दर्शन पाई धन्न–धन्न हो गइले। जइसे कारो के खजाना मिल गइले होखे एतना ना खुशी से पागल हो गइले। बड़ी देर तकले पूरहन आंखि खोलि के मूरत के एक टक से निहारते रहि गइले। छने भर बाद सचेत भइले। आधा मूरत माटी में गड़ल रहे। ताबरतोड़ माटी में से मूरत के जोर लगा के निकालल चहले। मूरत धरती ना छोड़लिस। अइसन देखि छाकुन के आधा पर से तूड़ि के नोकीला कोड़ि बना के मूरत के अगल–बगल कोंड़े लगले। बड़ी मेहनत के बाद मेहनत के जीत मिलल। पसेना से तर–ब–तर होखला के बाद अगौंछी से मुँह के पसेना पोछले। लमहर–लमहर सांसि ले के मूरत धरती में से बहरी निकाले के जोर लगवले। कृष्ण–मूर्ति आराम से धरती से आपन जगह छोड़लसि। बड़ी पसन से अगौंछी से मूरत के माटी साफ कइले। फेरू अगौंछी में मूरत बान्हि क आपस आ गइले अपना गाइन की लगे। सोकीनी ग्राई पाछा पाछा आ गइल। आ के आपन जमीन गाड़ल लाठी निकलले आ अंगद के जीत लेखा सीना उतान कइले। गांव का ओरि चलले। जइसे हीरा जवाहरात चमकेला कृष्ण–मूर्ति ओही तरे फइले भइल चमकत रहे।

फेड़ से सेव धरती पर गिरला के बाद न्यूटन मुरूत्वाकर्षण के शक्ति समुझि उतिरा गइल केतना खुशी मिलल किसुना के केहू ओकर खुशी तउलि ना सकत नाहीं आंकि सकत रहे। जेल में से कृष्ण भगवान के निकालि के जइसे वासुदेव जी उफनत नदी के पार क लीहले ओही तरे कृष्ण मूर्ति कपार पर ले के किसुना

झांड–झंखाड़ पर लवटि आइल। घरे चहुँपि के किसुना अपनी महतारी हांक लगवलसि। माई रेऽऽ माई!, एगो साफ कपड़ा लेके बहरी आउ। महतारी एक्के हांक में लूगा ले के बहरिअइली, चिहुँकि के सवचली। इ मूर्ति कहाँ भेटाइल हऽ रे? महतारी के सब बाति बता के कहलसि। महतारी चउकी पोछि दूनू हाथ जोड़त आंचर हाथ में लीहले भूइंया मुड़ी पटकि दिहली। आपरूपी रउरा साक्षात् प्रगट भइल बानीं। हे भगवान घर भर के दुःख हरीं। मेहरारू के जाति फट से आसिस मांगि लीहली। श्याम अतने में चोहँपि गइले। किसुना से ले सवचले।

"इ का हऽ रे?"

"हम जंगल से भगवान के ले के आइल बानी।"

"भगवान के ले के?"

"हऽ हो बाबू? सोकीनी गाई के दूध के बाति खोलि के बाबू से बतवले। एतना के बादो श्याम् किसुना के बाति पर पतिअइले ना।"

"तब किसुना कहलसि। इची छू के देखऽ कि माटी के मूरत ह कि संगमरमर के ह"

श्याम् के मूरत छुवते जइसे बिजुली के करेन्ट मारि देले होखे। उनका सउँसे शरीर सुखदा से झनझना गइल। जइसे छने में सज्जी दुख भुला गइल होखे। मनेमन सोचले। हो न हो, अइसही उजिआर घाट, बक्सर के गंगा माई में मंगला भवानी मिलल रहली। जवन खुशी मिलल कि खरीफ मरइला के बाति भुला गइले। दूनू हाथ जोड़ि के भूइंया मूंड़ी पटकि दिहले। खुशी के रोवां रोवां सनसना गइल। दूनू परानी के वसुदेव आ यशोमति मइया के हालि? वासन उछरे लागल लोग। जवन लड़िका घर का सोझा चिक्का कबड्डी खेलत रहले मूर्ति देखि दउड़ि पडले। लड़िकन फडिकन के भीड़ि देखि टोला टूटि परल। जेतना मुँह ओतना बाति? श्याम् अउर किसुना केकर–केकर बाति के जबाब देउ लोग? श्याम् के दुआर कृष्ण मूर्ति से भक–भक् अंजोर फइलि गइल। अन्हमुन्हार आ दीया लेसान के मोका पर जइसे क गो सुरुज उगि गइल होखे। जहाँ ले ना पहुँचे कवि ओ से ज्यादा कोना अंतरा में पहुंचे ला रवि। बेतार के तार लेखा मुहामुंहे बाति आनो टोला में ले बाति पहुँचि गइल। श्याम् के दुआर पर कृष्ण भगवान आप रूपी प्रगट भइल बाड़े। जे बा जवहे से उघारे गोड़ दउड़ पड़ल।

छने में हुरुका, खचड़ी तासा, डमरू, मृदंग ढोल–मंजीरा, बांसुरी बाजे लागल। कई गोल चइता आ गई गोल झाल के साथे गवनई शुरू हो गइल। गोल के गोल गवाये लागल–

हो रामा, कवना जगह जनम लिहले

कृष्ण हो रामा कवना जगहा?

कवना बनवा बाजे ला बसुंरिया

हो रामा, कवना बनवा....।

सोहर के तऽ पूछहीं के ना रहे मेहरारू नाचि–नाचि गावे लगली स–

कहवा जनमे ले राम कहंवा जनमे कन्हाई जी

ए ललना कहवाँ जनमे गनेश जी कि

तीनों घरवा सोहर।

अजोध्या में जनमे बने राम ए ललना

मथुरा में जनमे ले कन्हाई, जी

परबत पर जनमे ले गनेश जी

केकरा भइले इ राम, केकरा भइले कन्हाई

ए ललना के केकरा भइले गनेश जी

कि तीनो घरवा सोहर

ए ललना कोशिल्या भइले इ राम ए ललना

यशोदा मइया के भइले कन्हाई जी

ए ललना पार्वती जी के भइले गनेश जी

कि तीनो घरवा सोहर हो

कोइलियो से मीठ सोहर गीत....

आ एतना शंख बाजे लागल कि गांव अवंज हो गइल। टोला–परोस आ सज्जी गांव के दुःख गदहा के सींग लेखा हेरा गइल। कृष्ण भजन में सभ एतना निहाल हो गइल कि खरीफो के मराइला के दुख पाले से परा गइल। एतना नाच गाना भइल कि गांव के चुरइन–मुरइन, भूत बैताल, डाकिन–माकिन सज्जी कपार पर गोड़ राखि भाग परा भइली स। बर, पाकड़ि, पीपर पर चिरई चहचहा के आदमी अस खुशी मनावे लगली स।

कई गोल चइता आ गई गोल गवनई के सुर आ

ढोलक के थाप से सज्जी घरन के नरिया थपुआ भी जइसे नाचे लागल होखे। बगइचन में फूल के कोढ़ी जेकरा तेज से खिल गइल होखे। जइसे सुर ताल अवाज में तेज समा गइल। पेड़न के पतई झनझना के कांपे लगले। जेसे झुरझुर बेयारि बहे लागल। कन–कन खुशी से झूम उठल। सउँसे गाँव राति भर जगरम कइल। नाचि नाचि के गावल लोग, झूमि–झूमि नाचल लोग। जेसे सभकर दुःख भुला गइल। किरिन फूटला के बादो लोग दिशा मयदान, कुल्ला–गलाली कइलो तेजि दिहले। बाहियो पकड़ि के उठवला के बादो केहू टस से मस ना भइल, नाहीं केहू टकसल, एतना मगन होखला के कारन सब थाकि के चूर हो गइल रहे। तनिका सा फाका भइल त केतना जाना जम्हाई लेबे लगले। कुछ फुरसतिहा देखि श्याम् सवाल उठवले– "बाति फेकले कि भगवान के कहवाँ स्थापित कइल जाई?"

श्याम के बाति सुन जइसे सांप सुंघि गइल होखे। सभका मुँह पर ताला लागि गइल। खुसुर फुसुर होखे लागल। सकुचात मिसिर जी बोलले। शिव मन्दिर के बगल में कृष्ण मूर्ति स्थापित कइ दिहल जाऊ। ओइजा मुनेसर के खेत रहे। गोएडे खेत उपजाऊ रहे। उ साफे इनकार क दिहले। गोएडे के धनखर खेत हम ना दे सकीं। ओ से बरिस भर भोजन भात चलेला। राति भर के सरधा छने में कपुर हो गइल। दुपहरिया होत नियरात रहे। घाम करेड़ लागे लागल। कहीं कवनो सचला पचाल ना देखि भरल भीड़ि में श्याम बोलले। सभ बिसारि दी हम ना न हाथ खींचब। भगवान हमरा घरे आइल बाडे□? हम गांव के खुशहाली खातिर आपन मंदिर के बगल वाला खेत में इहाँ के खुशी खुशी स्थापित करब।

श्याम के एतना कहल ह कि चहुँओरि श्याम् के जयकारा लागे लागल। फेरू का केहू ईंटा लियाइल, केहू हाबुर हाबुर गारा बनावे लागल। केहू पत्थर के पटिया ली आइल। जइसे इमली देखि लार चुवेला। एक ढ़िलिया के माई गवावे सगरी ओही गने गारा माटी ईंटा देखि करनी बसुली लेके मिस्त्री चलि अइले। छने में चउतरा तेयार हो गइल। पत्थर के पटिया के नदी के पानी से धो–पोछि के ओह पर कृष्ण मूर्ति स्थापित क दिआइल। पन्डी जी अपना घर से अक्षत, फूल, दूब, रोरी, चन्दन लिया के पूजा करा दिहले। अतने में बंसवारी से बांस काटि के आ गइल। भगवान भीजि जइहें, घाम में जरी जइहें। आदमी–आदमी काम बांटि के जल्दी मूजि के छानी छाई दिहले। लागल सभका हाथ में मशीन लागल बा एतना तेजी से पलानी पड़ि गइल कि सभे देखि के हैरान। कई गो बाम्हन पंडित एक सुर से मंत्र जाप करे लगले तब घर–घर से मेहरारू पूजा के डोलची लेके उमड़ि पड़ली। एतना घीउ के बत्ती, अगरबत्ती, कपूर आ शकली जरे लागल कि सज्जी गांव महक उठल। चढ़ावल फूल फूल पर तितली मेड़राये लगली। दुपहरिया के बेरा केतना सुहावन लागे लागल कि फजीर के पूजा लजा गइल। पइसा बनउरी लेखा भदर–भदर बरिसे लागल।

जेकरा पेट में कलछुल कुदत रहे, जेकर पेट पताले चलि गइल रहे उहो गांव के लोगन के पूजा खातिर टूटल देखि सलहन्त हो गइल। नदी में झुन्ड के झुन्ड जेतना चल्हवा ना चाल करत होइहें से ओहु से जेयादा कृष्णा स्थाने भीड़ि? पूजा के जवन सुगन्ध फइलल के सभकर मुँह चम चमा के चमकि उठल।

साल दर साल, बरिस दर बरिस जाने केतना बरिस बीति गइल। गांव खपरैला से पक्का मकान बनि गइल। मंदिर त देखनउक मंदिर बनि गइल। बहुत बरिस बाद एक साल के बाति हऽ कि सोन नदी में बाढ़ि आ गइल। खेत खरिहान त का आधा गांव बाढ़ि में बूड़ि गइल। अइसन दुख के पाला गांव में कबही ना पड़ल रहे कि लोग खइला–खइला के मोहताज हो गइल रहे। ओहू से भारी बिपति त तब पड़ल जब बाढ़ि के पानी ओहरल रहे। सोन नदी के चमकत रेत से खेत पाटि गइल रहे।

श्याम–किसुना के सरनाती–परनाती में एक जाना राधे मोहन नांव के लड़िका रहले। बड़ी पूजेड़ी रहले। मीरा से अधिका कृष्ण भक्त रहले। बाकिर एह पारी के बाढ़ि में जवन दुख के पहाड़ टूटल कि बांस कइन लेख नई गइल, सूखल लकड़ी लेखा टूटि गइल। छिलइला पर केहू मरीचा छिड़िकि देले होखे, अइसे एह पारी के दुख सहाये लायक ना रहे। सभके बेचौनी लेसले रहे, आगा का होई?

एक दिन के बाति ह राधामोहन नीनि में सुतल रहले। निसु राति खां, केहू राधे–राधे कहि के जगावल। राधामोहन अन्हुअइले जगले। अन्हारा में आंखि फारि देखले। केहू कतो लउकल ना। सपना समुझि ओठंगि गइले। लागल फेरू केहू जगावता। सजग हो के उठले। उनकी कान में अवाज पड़ल। "उठो, जागो, कृष्ण मन्दिर चलो।"

"'कृष्ण–मंदिर' नांव सुनि चिहुँकले।"

"'कृष्ण–मंदिर' कौन है भाई?"

"कौन है, नाम का चक्कर छोड़ो। उठो और 'कृष्ण–मंदिर' चलो।"

"इतनी रात को?"

"जितना सुन रहे हो उतना करो।"

राति खां एतना दांट आ पियार के बोली सुनि राधेमोहन जइसे कांपे लगले। उनकर पसेना छूटे लागल।

"डरो मत! मैं हूं ना?" तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होगा।

जइसे स्वीच दबवला से बत्ती बरि जाला। राध ो मोहन उठले केवाड़ी खोलि छवरि धइले। लागल केहू पाछा–पाछा चलत होखे। डरन पाछा ना तकले।

"आगे आराम से बढ़ते चलो। डरो बिल्कुल नहीं। तुम्हारे जानकारी के लिए बता दूँ। मैं एक मंदिर में निवास करता था। एक दिन कि बात है– धरती कांपी सब जलमग्न हो गया। उसके बाद वहाँ झांड–झंखाड़ और जंगल उग गये। तभी से मैं धरती में समाया हुआ था। तुम्हारे पूर्वजों ने मुझ पर बड़ी कृपा करी और मैं नये सिरे से मंदिर में रहने लगा। तुम्हारे परिवार पर विपत्ति का पहाड़ टूटा है। ऐसे में अपना कर्ज उतारना चाहता हूँ। मंदिर चलो, वहाँ तुम्हें मेरे गले का हार मिलेगा। उससे तुम्हारा सारा दुःख दूर हो जायेगा। तुम्हें मालूम होगा, सुदामा को कृष्ण के पास जाना पड़ा था। लौटकर आये तो घर महल में बदल गया था।"

एतना सुनि राधेमोहन कान पर हाथ राखि चिल्लाये लगले। हमसे इ पाप ना होई। हमार पुर्वज जेकरा के अपने हाथन से सिंगार कइले, फूल–दीप से पूजा कइले। ओकरा के हम के हईं अनभल देखे वाला। ई पाप कइसे होई हमरा से। हमरा से इ कबहीं ना हो सकेला, काहें से कि देवालो के कान होला। इचिको सुनगुन लागि जाई त गाँव के लोग हमरा साथे हमार घरो के फूंकि तापि दी। जवनो बानी उहो पानी का लकीर लेखा मिटक जाई।

"तुम्हारे पूर्वजों का प्रताप है जो मैं तुम्हें रास्ता दिखा रहा हूँ। तुम्हे शक्ति और सोना दोनों मिलेगा। कोई दूसरा ऐसा दुस्साहस करने की सोच भी नहीं सकता? परन्तु मैं तुम्हे विवश कर रहा हूँ कि तुम ऐसा करो। कोई दूसरा ऐसा करने से श्रापित हो जायेगा परन्तु तुम पाक साफ रहोगे। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम तक कोई पुलिस भी नहीं पहुँच पायेगी। अर्जुन की तरह तुम्हारे में साहस का संचार हो रहा है, स्वयं आगे बढ़ो, आगे बढ़ो।"

राधामोहन आगा बढ़ले। मंदिर के रखवार कुकुर एक हाली जोर से भूकल। बाकिर जुरते जमीन पर थुथुन राखि आंखि बन्न कऽ के पटा गइल। निडर होके राधेमोहन आगा बढ़ले। साधु संत दरी बिछा के सुतल रहे। जेकर नाक बाजत रहे। सजग हो के आगा बढ़ले। मंदिर के सोनहुला केवारि अपने आप खुलि गइल। सोझा कृष्ण मूर्ति पर अँजोर पड़त रहे। जवन सोना रूपा से लदाइल रहे। मुकुट में एतना चमक रहे जवना के बरनन कइल सुरुज के दिया देखवला के बराबर रहे। गर की लगे हाथ बढ़ावे में उनकर हांथ एकतोर कांपल, देहि झनझनाइल, थरथराइल ओकरा बादो जोश में होश आ गइल। सीकड़ी की लगे हाथ चोहँपते गर के सीकड़ी हाथ में आ गइल। जैसे अनासो महुआ चू जाला। मूंड़ी पर से अगौछी खोलि गहना बन्हले आ उल्टे गोड़ लवटि पड़ले। मंदिर से ले के गांव तकले चारू ओरि सुत्ता पड़ल रहे। कहीं कवनो सचला पचाल ना। झिंगुरो के आवाज ना।

होत फजिरे रोजिन्ना अइसन पंडित जी पूजा–पाठ खातिर मंदिर के केवाड़ी खोलले। भगवान के मूर्ति में से गर के सीकड़ी हार ना देखि हल्ला कइले। गांव के साथे साथे अवार–जवार टूटि पड़ल। मेला झूठ। दरोगा पुलिस आइल। सुंघे वाला एक से एक खिआवल–पिआवल हुराड़ अस कुकुर अइले। मंदिर के चारू ओरि घुरवटि के आगे के अपना जगहा पर बइठि गइले। एक से एक करिश्मा सज्जी हारि गइल। बरिसन तक कवनो सुराग ना भेंटाइल। हँ एतना जरूर भइल कि अचम्भा बाति केहू कबही भुला ना पावल? भगवान के हार कहवाँ हेराइल?

राधे मोहन के परिवार में इ भजन हमेशा गावेला–

बस रउरे कृपा से सब काज हो रहल बा

सांस चल रहल बा, परिवार पल रहल बा

सज्जी मिलल हमके सरकार रउरा से

का का ना मिलल सरकार रउरा से....

बस रउरे कृपा से....!

राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया

मातृभाषा दिवस पर विश्व भोज0 सम्मेलन के आयोजन में लेखक सम्मान, पुस्तक पत्रिका विमोचन आ विशेष कार्यक्रम

अध्यक्षता-डा0 अशोक द्विवेदी, मुख्यअतिथि - डा0 जयकान्त सिंह

दिनांक
बुधवार,

विश्वभोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय महासचिव के साथ ''योगी कथामृत''
के भोजपुरी अनुवाद पुस्तक के विमोचन

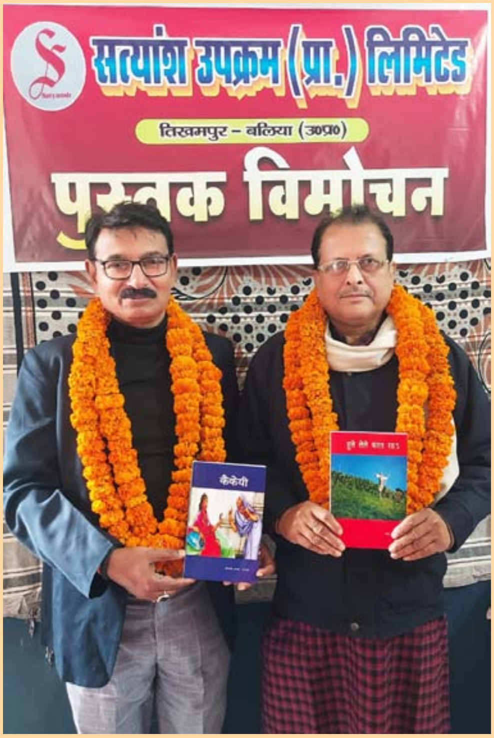

शशि प्रेमदेव आ शिवजी पाण्डेय का
पुस्तक के विमोचन

वरि0 साहित्यकार विजय शंकर पाण्डेय के
मातृभाषा दिवस पर सम्मान

कल्पना मनोरमा

1) भलमनसई के बदला घात-पांच

जे तरह दू बेकत एक-दूसरा
संगे नेकी आ परोपकार
से नगीचा आ जाला।
ओसही केहू के भलमनसई
के बदला लादे छुरा घोपला
से उ कोसों दूर हो जाला।

नेकी के बदला जे
नेंव खखोरे
ओंकरा प्रति
नेकी करे वाला
हिंसक आ शंकालु
हो जाला।
फेर उ नेकी के
डगर प डेग धरे
में बीसन बेर
सोचेला !!

बेर-बेर जोगाड़ बइठवला
से समाज के भरोसा टूटी।

अइसन घात-पांची के
अपराधी के श्रेणी
दे देबे के चाहीं।

2) मेहरारू

मेहरारू कुल जांगर
खटवला से ना मूएलिन...
ना कुँआर रहला से!

बाकिर रहेली जा
जब केहू के
परेम में मध लेखा मतवारी,
आ जब मिल जाला
केहू से तनि-मनि
कसइला लेखा
बेइमानी,
ओही घरी
मेहरारू मर
जाली सन।

3) भरोसा

अपना कोरा से उतर के जात
चिखुरी आ चिरूंग
के, कबो फेड़ रोकेला ना!
उ सोचेला,
हम ना त केहू अउर,
चिरई जब थाकल खेदाइल लवटिहें,
त ममता के आँचर
में आसरा फेड़े भीरी
नू मिली।
चिरई चिरूंग
के होखले से
फेड़ मयगर होला।
फेड़ के
अस्तित्व होला।

4) प्रेम कविता

माई, बोरसी प कंडा के आगि प
भूजत बाड़ी शकरकन !
जइसे आपन पाखि के सरिहार के फुरगुद्दी,
बीनेली दाना।

माई के कान्ही से लटकल बा
खूब लमहर चोटी,
चोटी में झूलता फीता के लाल फूल।

बाबूजी फूल के ना,
माई के तिकवत बाड़न।

माई आँगन में छितराईल घाम के,
हम, माई अउर बाबूजी दूनो
बेकत के,

बाबूजी, माई के ओरि देखत
कहे तारन,
बड़भागी! तू त माघ के घाम लेखा बाड़ू हो,

माई मुस्किआत नइखी,
लजा के आंख नेवा ले तारी,

फेर मुड़ी घुमा के हमरा के
देख के झेंप जात बाड़ी ।

बाबूजी ठठा के हंसे लगलन,

माई बोरसी के सेरात
आगि के फूंकनी से फूंके
लागे ली।

हम पढ़त बानी
माघ के एगो मनजोग
दुपहरिया में प्रेम कविता।

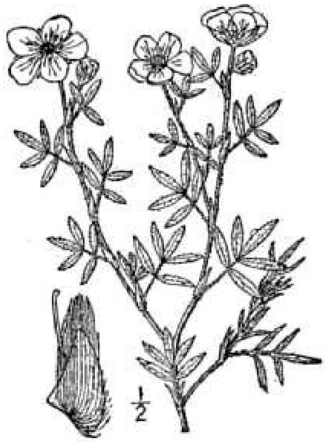

5) जीवन चक्र

पानी चंचल अउर बतास बउरनी होले,

जब दूनों समुनर संगे सउना जाला
त लहर लेला हिलोर
समुनर के गहराई में।

तब पानी थिरा जाला,
बयार घूमते रहेला साहिल प,
आ लहर दूनों के अपना देहे लपेटले,
विजय पताका फहरावत रहेला

समुनर के भीतर पोसात रहेला मोती,
मोती पानी के मयगर
रूप ह।
सीपी तलक चहुंप जाला एक एक ढोप पानी
बादल ना, बयार चहुंप
जाला मोती में गुथा के।

अउर पानी, बयार के
सुन्नर रूप मिल जाला।

6) सुना हो परेम पारखी

इनकरा-उनकरा, सभकरा
आखिन में झांकल बन करे

कबो मिलऽ ना अपना से
अकेला में बेपरदा हो के
कि बुला छितरा गइल बाड़ा
तूँ अपने आप से,

जवना बात के तू खखोरत रहे लऽ
दिन, दुपहरिया रात ले
प्रेम त ओमे बड़ले नइखे!

परेम त कुच कुच
अन्हरिया में जुगनू लेखा होला
तहार आंख काहे खाली चकाचौंध प ही
अझुराइल रहेला।

तहरा के बेजाइँ परेम जोहे के त आदत नइखे,
आ परेम के कवनो कारन
जोहे के ना परे,
बुझले!

7) पिकनिक

दार्जिलिंग के एगो सांझ
कान्ही प सम्हरले बयार के
बूनी जड़ा के हाड़ कँपा देली,

बांस के दउरी
बीने वाला दूनों हाथ
एकदूसरा के धइले
आ दूसरा हाथे छाता थमले,
तिकवत बाड़े दूनों बेकत
कंचनजंगा के चोटी,
मरद के मुँहे पान के बीड़ा,
मेहरारू बिन पाने के टहटह,
सखी के सुखाइल कथकी ओंठ देख के,
पहाड़ी प के चोर चढ़ाई,
गुमसाइल मउसम,
ओराइल पाकिट,
आ
दूनों के चेहरा से
उतर जाता पिकनिक के हुलास,

हम कहनी हाकिम से
हमरा दार्जिलिंग सुन्नर
नइखे लागत,
हमरा के जाए के बा अपना घरे ।

8) बिना आपन हित सोचले

बिना आपन हित सोचले,
अगर रउरा
केहूं से मिलत नइखीं,
करत नइखीं
खुल के बतकही,

जात नइखीं कवनो
बे-परिचित सहर में,

पढ़त नइखीं केहू
अउर के लिखल किताब,

सुनत नइखीं केहू के
बाथा,
करत नइखीं केहू के
बड़ाई,
त एक बात बूझ लीं!
रउरा जीअत नइखीं,
गते-गते मर रहल बानी।

'मार्था मेडिरोज' के पढ़त घरी
मन में उपजल इहे कविता।

बी. 24 ऐश्वर्यम अपार्टमेंट/प्लाट संख्या 17,
सैक्टर 5 द्वारका/नई दिल्ली - 75

आँख न ठहरै रूप के आगे

स्व0 कैलाश गौतम

आँख न ठहरै रूप के आगे
रूप देख बिछिलाय
जिनिगिया लहर-लहर लहराय !

खेत भरल खरिहान भरल हौ
भरल-भरल हौ अँगना
नई-नई हौ देह सुहागिन
नया-नया हौ कंगना
रितु आवै रितु जाय, रहनियाँ
सौ-सौ झोंका खाय !

अगलै-बगलै दस कै झरना
गूँजे मधुर बँसुरिया
झिर-झिर, झिर-झिर बहे बयरिया
फर-फर उड़ै चुनरिया
घर-घर बोलै धार दूध कै
देख जिया हरसाय !

मह-मह महकै बाग-बगइचा
चमकै ताल-तलइया
फुलवरिया में तितिली-भौंरा
नाचै ता-ता थइया
घूँघट काढ़ि दुलहिया निरखै
सुख ना कहीं समाय !

रजि0 नं0 – आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979) ISSN-2456-9372 पाती संयुक्तांक 104 मार्च 2024

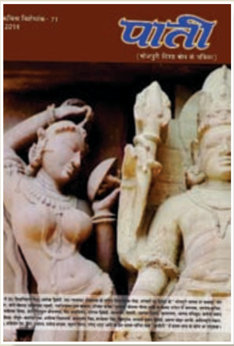

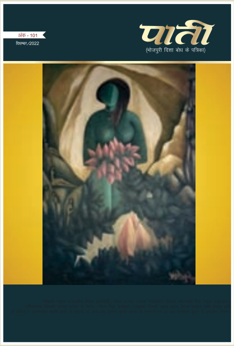

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक, सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ 1118, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-19 से प्रकाशित।